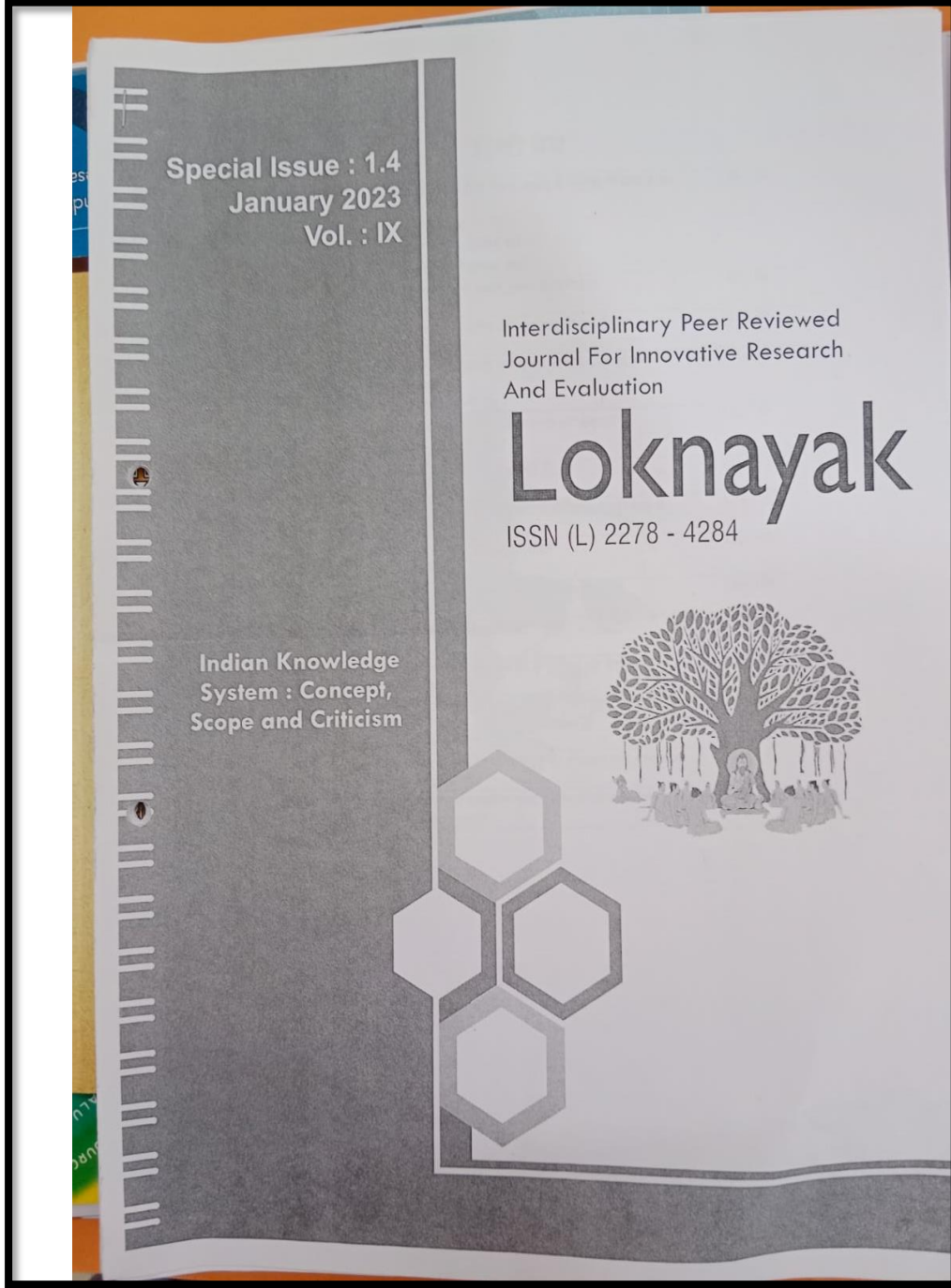


Hindi Katha sahitya mai manviy Mulya vishesh sandarbh bhipan sahani



हिन्दी लेख

21	भारतीय ज्ञान और सामाजिक चेतना प्रवाह में महिला वैदिकताओं का योगदान कृ. हर्षा भगवान् जगनाके सातकोनर छाव एम. ए. द्वितीय वर्ष म. गाँ. अं. हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा	120-122
22	भारतीय गजल साहित्य में द्रुपद कुमार का योगदान प्रा. डॉ. मजानन बागचेडे	123-126
23	भारतीय ज्ञान परंपरा के सटीक प्रतीक गोस्वामी तुलसीदास प्रो. डॉ. भद्रेन्द्र सिंह पोद्दार	127-130
24	भारतीय गुरुकुल शिक्षा पद्धती के विभिन्न आचाम तथा वर्तमान में उसकी उपयोगिता शुभम नरेण उदावत	131-134
25	"भारतीय ज्ञान परंपरा में संगीत विद्यालयों का योगदान" डॉ. सारिका वि. श्रावणे,	135-139
26	भारतीय ज्ञान परंपरा में महिलाओं की स्थिती डॉ. सविता रूजे	140-143
27	संत कबीर तथा गोस्वामी तुलसीदास - शिक्षा क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में डॉ. प्रवीण देशमुख	144-149
28	भारतीय ज्ञान परंपरा व ऐतिहासिक संदर्भ श्रीमती कंचन अचरणी,	150-155
29	भारतीय ज्ञान परंपरा में तुलसीदासजी का योगदान प्रा. डॉ. भरत सुरेश जबजाने	156-158
30	भारतीय ज्ञान परंपरा और स्त्रीशिक्षा डॉ. सीमा वर्गट	159-165
31	भारतीय ज्ञान परंपरा में शिवानी जी के साहित्य की उपादेयता रश्मि भावेश राय	166-171
32	ज्ञान परंपरा को समृद्ध करनेवाले अनुवाद की-भाषिक समस्वारें एवं समाधान प्रो. संतोष विजय येरावार	172-178
33	औद्योगिक - भारतीय महिला अर्थव्यवस्था का योगदान तथा समाजमन प्राचार्य डॉ. विदेन्द्र तलरजा	179-181
34	हिन्दी कथा साहित्य में मानवीय मूल्य; विशेष संदर्भ: श्रीम साहनी सह. प्रा. डॉ. शालिनी वाटाने	182-186

हिन्दी कथा साहित्य में मानवीय मूल्य: विशेष संदर्भ: भीष्म साहनी

सह.प्रा.डॉ. शालिनी वाटाने

द्विती विभाग प्रमुख ,

मानोधी विमलाबाई वैशम्भ महाविद्यालय, अमरावती, (महाराष्ट्र) भारत

विभाजन की वामदी पर 'तमस' जैसी कालजयी रचना लिखने वाले भीष्म साहनी आधुनिक हिन्दी साहित्य में सशक्त अभिव्यक्ति और बेहद सादगी पसंद रचनाकार के रूप में विख्यात हैं। प्रेमचंद की -परपरा के अग्रणी कथाकार के साथ ही साथ आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख स्तंभों में से माने जाते हैं। भीष्म साहनी ने सामाजिक व मानवीय मूल्यों को पूरी जीवन्तता व गतिमयता के साथ खुली व फेटी हुई जिंदगी को अंकित किया है। अपने कथा-साहित्य में मानवीय मूल्यों को कभी ओझल नहीं होने दिया। समय, संस्कारित एवं व्यवस्थित जीवन जीने में मूल्यों का अहम रोल होता है। लेकिन आज के परिस्थिति में इन मूल्यों की जगह तो सामाजिक व नैतिक मूल्यों ने विवाह जैसे पवित्र संबंध पर प्रश्नवाचक चिन्ह लगा दिया है। विवाह दो आत्माओं का जन्म-जन्मान्तर्ग का पवित्र बंधन न रहकर जीवन का समझौता बन गया है। कथाकार ने इस समस्या को विकल्प 'क्रिकेट मैच', 'जलिता', 'डोरे' आदि कहानियों के माध्यम से उठाकर समाज को सोचने के लिए बाध्य किया है। नारी के प्रति वामनात्मक दृष्टि के संदर्भ में भी गिरते हुए मानवीय मूल्यों का अंकन किया है। परिवारों के टूटने और विखरने में यह विन्दु महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। 'विकल्प', 'डोरे', 'क्रिकेट मैच' में पुरुषों की नजर अपनी पत्नी होते हुए भी दूसरों पर होती है, इस समस्या को भी उजागर किया है। साथ ही पुरुष के इस धृणास्पद मुखांत को वेनकाव किया है। बदलते परिवेश के कारण आज मनुष्य नारी में देवी रूप नहीं खोजता वरन् वह नारी देह को अपनी कामुक दृष्टि का शिकार बनाता है। 'नीली आँखें' कहानी में समाज के सभ्य कहलाये जाने वाले भद्रजनों के संकीर्ण एवं गिरे हुए विचारों को उजागर किया है। सड़क के किनारे, सार्यकाल के बहते अंधेरे लड़की। ऐसा लग रहा था कि दोनों अलग हो रहे हैं, लेकिन लड़का गांव की तवाहटाल जगदगी में अपने में अस्पताल के सामने एक बीस-चाईस वर्ष का लड़का और दूसरी सत्तर-अठारह वर्ष की राजो नाम की अस्तित्व को बचाने शहर कमाने आया था किन्तु आते ही बीमार पड़ गया। लड़का तो अस्पताल में हो गया किन्तु उसकी पत्नी को उसके साथ अस्पताल में रहने की इजाजत नहीं थी। लेकिन समाज के भेड़ियों को उनके प्रति कोई महानुभूति नहीं थी, ये तो लड़की को छा जाने वाली दृष्टि से देखते थे। जोत शीर्षक कहानी भी इसी प्रकार की है, इसमें रंजर की नजर जानकू की पत्नी उत्तमा पर रहती है। यह सारा गांव जनता है। इन कहानियों में पुरुष पात्र एक गँवर की भाँति हर नारी के इर्द-गिर्द घूमता है, इनके लिए नारी भोग की वस्तु है। 'अभी तो मैं जबान हूँ' कहानी में येश्याओं के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। इसमें पुरुष की वृणित नजर को उजागर किया है। प्रत्येक नारी के नयनों में एक सुखी पारिवारिक जीवन की चाह बसती है। लेकिन पुरुष ही है जो इसकी मजबूरियों और भावनाओं का लाभ उठाकर उसे अपना शिकार बनाता है।

पूरा द्वारा कलकित्त तारी को समाज स्वीकार नहीं करता है। राधा-अनुराधा, 'फिकनिक', 'साम-मीट' आदि कहानियों में मानव मूल्यों के टूटने को उच्च मध्यवर्गीय लोगों को निम्नवर्गीय लोगों के प्रति मंकीर्ण मानसिकता के परिपोष्य में अभिव्यक्त किया गया है। उच्चमध्यवर्गीय लोग अपने घरों में काम करनेवाले निम्नवर्गीय लोगों को मदेव शंका की नजर से देखते हैं। उनकी दृष्टि में ये लोग चोर-गलीबू होने हैं। राधा-अनुराधा कहानी की राधा जहां पर चौका बर्तन करती है उन घरों के मालिक उस पर दृष्टि रखते हैं। साम मीट कहानी का घरेलू नौकर जग्गा जीम मालिक के यहां काम करता है, उन्हीं का छोटा भाई जग्गा की पत्नी को अपनी द्रव्य का शिकार बनाता है।

'मौकापरन्त'3 कहानी में भीष्म माहनी में दोहरे कवच की राजनीति की मूल्यहीनता को मुखरित किया है। राजनीतिक पार्टी के सदस्य शम्भू की सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गयी। उसके लड़के ने सुबह- सुबह ही यह खबर लेखक को दे दी थी अतः लेखक को उसके दाह-कर्म का प्रबन्ध करना था। तभी उसे रामदयाल की याद आयी जो कि एक मियातदान था और सभी विगडने काम बना सकने में माहिर था। इसी कहानी में दोहरे कवच की राजनीति की मूल्यहीनता को उजागर किया है। राजनीतिक स्वार्थ सिद्धि के लिए किसी की मौत से भी कैसे फायदा उठा लेते हैं इसी तथ्य को इस कहानी में उजागर करते हुए लेखक धूर्त, चालबाज और मूल्यहीन लोगों का बहिष्कार करने की सलाह समाज को दे रहे हैं। खून के छींटे कहानी का किमान भाई-भाई के पवित्र रिश्ते को ताक पर रखते हुए चचेरे भाई की जमीन हड़पने हेतु उसे मारते-पीड़ते, जंजीरों में बांधकर घसीटते हुए पागलखाने में दाखिल करवाने ले जाता है। खून का रिश्ता कहानी का मंगलमेन भी इसी अमानवीय मूल्यहीनता का शिकार बनता है। पग-पग पर उसे अपमानित और प्रताड़ित होना पड़ता है। 'चीफ की दाबत' में मूल्यहीनता की सारी हदों को पार करते हुए शामनाथ अपनी वृद्धि माँ को जहर का घुंटा पीने को मजबूर करता है। 'मालिक का बंदा में एक और मानव- मूल्यों से कटे हुए धर्म पर श्रद्धा रखनेवाला कांस्टेबल है तो दूसरी ओर सामाजिक मूल्यों से कटे हुए कवि है जो जंतवादी कवि सम्मेलन में जा रहे हैं और रेल के एक डिब्बे पर कब्जा किये बैठे हैं। इस प्रकार भीष्म- माहनी की कहानियाँ सामाजिक यथार्थ की दृष्टि में महत्वपूर्ण हैं। कहानियों में साधारण व व्यंग्यात्मक शैली के कारण पाठक में आत्मीयता के भाव आये हैं व जनमानस के निकट पहुँचा दिया है। उनके अनुसार मानवीय मूल्यों में खिड़ि रहित है मनुष्य तो वह मनुष्य कहलाने लायक नहीं है। सभ्य, संस्कारित व व्यवस्थित मैययादास की माडी उपन्यास का आधार एक करवाई भूमि है। दीवान दाम की माडी (हथेली) को लेकर कथानक का ताता-बाना रखा गया है। चार पीढ़ियों में संपूर्ण कथा का विस्तार है। यह गाडी कभी मथरादास नामक सरकारी अधिकारी ने बनवायी थी खालसा दरवार में से कारदार थे। दुर्भिक्ष काल में जनता की सेवा करते हुए अपना जीवन त्याग देने के पश्चात् उनके बड़े पुत्र मैयादास को खालसा दरवार द्वारा कारदार का पद सौंपा जाता है, जिनकी जनसेवा से प्रभावित होकर काबुल में उन्हें ऊँचे पद पर नियुक्त किया जाता है, उन्होंने ही सामान्य से पुरवैती घर से हथेली के रूप में माडी का जीर्णोद्धार करवाया था। बाद में यह माडी मैयादास के पुत्र गोकुलदास की रखेल से जन्मी संतान धनपतराय के हाथों में आती है। मैयादास ने जिस जमीन पर जीवित रहते कभी अंग्रेजों की गुलामी स्वीकार नहीं थी। यही धनपतराय अंग्रेजों के कचहरी में जाकर सन्द प्राप्त करता है। पंजाब में अंग्रेजों के द्वारा अपने सत्ता विस्तार तथा इस सत्ता विस्तार में अपना योगदान करने वाले उन जमींदारों की कहानी है, जिन्होंने अपनी घन-लोलुपता, पद-लोलुपता तथा चाटकारिता के चलते भारत में अंगरेजों को अपनी सत्ता सौंपकर निश्चित भोगविनास भरा जीवन जीने की भूमिका बनाई जीवन भर अंगरेजों की गुलामी करते रहे। जिनके सामंती संस्कार आज भी

समाज को दुःख पहुँचाये जा रहे हैं। दूसरी ओर दीवान गोकुलदास का सगा बेटा लेखराज याजग पौत्र के साथ में मिलकर अंग्रेजों की खिलाफत करता है, और अपने देश के लिए के कार्य करता है। धनपतराय टिप्पू कमिश्नर के साथ मिलकर लेखराज को पकड़वा देता है। उपन्यास के संदर्भ में लेखक का स्वयं यह विषयना कि "सवाल देशप्रेम या देशभक्ति का भी नहीं था, सवाल नमक इरामी का भी नहीं था, बफादारी का भी नहीं था। सवाल केवल अपने हित का था। किस ओर कदम बढ़ायें कि बच भी जाएँ और कुछ प्राप्ति भी हो जाएँ।"⁴ स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय राजनीति में अनेक मोड़ आएँ हैं, कौन सही है और कौन गलत बतलाना मुश्किल हो गया है। लेखक ने इतिहास के माध्यम से वर्तमान की कथा ही प्रस्तुत की है। भारत को कितने समय तक भारतीय राजनीति के अंधकार मय पक्ष से लड़ना पड़ेगा। कहना मुश्किल है। लेखक के शब्दों में कहें तो कथा किसी कालखंड का ऐतिहासिक दस्तावेज न होकर मानवीय संवेदनाओं, करवट लेते परिवेश और मानव नियती के बदलते रंगों की ही कहानी कहता है।⁵ आज एक बार इन समस्याओं पर फिर से सोचने की आवश्यकता है। "कुतो"⁶ उपन्यास बदलते हुए मानवीय रिश्तों की कथा है। उपन्यासकार स्वतंत्रता के परिवेश में उपन्यास बदलते हुए मानवीय रिश्तों की कथा है। उपन्यासकार स्वतंत्रता के परिवेश में पूरी कथा दानते है। प्रतीक रूप में देखा जाए तो जहाँ देश अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत है। वहीं मानव समुदाय उन अनजाने संबंधों और रुढ़ियों के विरुद्ध संघर्ष कर रहे हैं, जो समाज ने निर्धारित कर दिए थे, परंतु ये आज काल सापेक्ष नहीं दिखाई देते हैं। परिवार और गृहस्थी के बारे में सामाजिक सोच निरंतर बदल रही है। लड़कालड़कियों में प्रेम के आधार पर विवाह करने का चलन बढ़ने लगा है तो अनेक प्रकार की पारिवारिक, जातिगत, साम्प्रदायिक, धार्मिक तथा आर्थिक बाधाएँ उन विवाहों के मार्ग में आज भी खड़ी है। ये संस्कार मानवीय जीवन को असुरक्षित करते हैं। इच्छा के विपरीत विवाह करके दाम्पत्य जीवन को ठीक से न जी पाने का अभिशाप पुरुषों के लिए तथा अविश्वास भरा जीवन स्त्रियों के लिए निर्धारित हो जाता है। मनुष्य जीवन को उचित प्रकार से चलाने के लिए समाज ने कुछ नियम विभाग बनाये थे, किसी काल विशेष में उचित थे क्योंकि जतियाँ सामान्यतः व्यवसाय के आधार पर तय होती थी। पुरुषों के लिए बहु-पत्नी तथा स्त्रियों के लिए बहु पति विवाह की मान्यता थी। किंतु औद्योगिकरण के आने के बाद से व्यवसायों का जातिगत वर्गीकरण धीरे-धीरे समाप्त हो गया। वर्तमान समाज में तो जाति तथा व्यवसाय का एक-दूसरे से संबंध लगभग विच्छेद हो चुका है। पति-पत्नी केवल एक ही हो, यह कानूनी बाध्यता बन चुकी है। ऐसे समय में सामाजिक संबंधों में होने वाले बदलावों के कारण अनेक धर्मों तथा संस्कृतियों का अतिक्रमण एक-दूसरे की सीमा में होकर एक नयी मानवीय संस्कृति की ओर समाज को बढ़ता था परंतु यह संभव नहीं हो पाया है। मनुष्य के संस्कार आसानी से उमका पीछा नहीं छोड़ रहे हैं, बल्कि दिन-प्रतिदिन ये अधिक रुढ़ हुए जा रहे हैं। आज मनुष्य विश्व में एक बहुत बड़ा संघर्ष केवल इसी कारण से दिखाई दे रहा है। भारत में तो इसके संबंध में मोलना भी बहुत कठिन है। विवाह में मनुष्य अकेलेपन से मुक्त हो एक जीवन साथी का वरण करता है, उससे उसके जीवन में बुशियों का प्रवेश होना चाहिए परंतु कुतों उपन्यास की कुतो जयदेव, धनराज खुलधन, सुधमा- गिरीश, जयदेव की बहन विद्या में से कोई भी अपने वैवाहिक संबंधों से खुश नहीं है। हमारे जीवन की ओर समाज की यह कमी है कि अपना जीवन साथी चुनने की स्वतंत्रता भी अनेक परिवारों, जातियों, संप्रदायों तथा धर्मों में नहीं है। यह भारत में एक बड़ी समस्या भी है। लेकिन क्या उसके विपरित यह सही है कि स्वतंत्रता का अर्थ स्वैराचार हो जाए प्रोफेसराव जयदेव से कहते हैं कि आकर्षण का होना स्वाभाविक है, परंतु आकर्षण पर

अपना यम होना चाहिए। किसी की सुन्दर पत्नी है, में उसके सौंदर्य की ओर घीना जाता है, पर माय-बैल होकर उसका पीछा नहीं करता। मनुष्य की वृत्तियों पर उसका 'विवेक' होना चाहिए।

"नीलू, नीलिमा और नीलोफर" उपन्यास में नीलू उर्फ नीलोफर तथा नीलिमा नामक दो लड़कियों के प्रेम के माध्यम से कथानक का ताना-बाना बुना गया है। सारे विश्व में सांप्रदायिकता एक बहुत बड़ी समस्या के रूप में उभरी है। भारतीय में जीवन में भी यह सांप्रदायिकता की मानसिकता कोई नई चीज नहीं है। धार्मिक कट्टरतावाद के कारण अजानते ही मानव-मानव के बीच भेद-भाव की एक दीवार खड़ी कर दी गयी है। समाज के नवयुवक नवयुवतियों एक-दूसरे के निकट आकर वैवाहिक संबंध बनाकर ऐसी दीवारों को ध्वस्त कर सकते हैं। वर्तमान समाज में एक उदारवादी तबका ऐसा है जिनके अनुसार, मनुष्य को अपनी पसंद के अनुसार बिना किसी भी प्रकार के भेद-भाव के अपनी पसंद के जीवन-साथी को चुनने की स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए। जबकि धार्मिक कट्टरतावाद की-बेड़ियों में जकड़ा एक तबका ऐसा भी है, जिसे यह पसंद नहीं, यह संघर्ष अनेक बार सांप्रदायिक दंगों की स्थिति तक भी जा पहुँचता है। ऐसी सांप्रदायिक सड़ी-गली मोच समाज को स्वस्थ नहीं रहने दे सकती है।

"नीलू उर्फ नीलोफर" 8 मुस्लिम धर्म में जन्म लेती है और सुधीर के साथ प्रेम विवाह कर लेती है। लेकिन नीलू का भाई तथा सुधीर के पिता दोनों ही इस विवाह के खिलाफ हैं। बाबजूद इसके वे अपना जीवन साथ जीने का फैसला लेते हैं तथा अपने पूर्व परिचित डॉ. गणेश के वहाँ आकर रहने लगते हैं। वहाँ डॉ. गणेश के परिचित बुद्धिजीवी लोग उन्हें आकर इस प्रकार देखते हैं, मानों वे इस धरती के निवासी ही न हों। उनकी संकीर्ण बुद्धि की मोच इस प्रकार से सामने आती है, एक उनमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से कहता है कि "मैं सोचता हूँ डॉ. गणेश को सावधान कर देना चाहिए। इन्हें ज्यादा दिन अपने यहाँ न ठहराएँ। उस पर एक हिन्दू एक मुसलमान। देख तो रहे हो, जमाना कैसा बदल रहा है। इन्हें जल्दी जलता करें। क्यों तुम्हें ये दुल्हा-दुल्हन नजर आ रहे हैं? इनके कपड़े तो देखो? लडकी के बदन पर जेवर का नाम नहीं। यह पुलिस का मामला भी बन सकता है। गणेश को इन्हें अपने पास नहीं ठहराना चाहिए।" कुछ समय पश्चात् उसका भाई उसे घर में ही कैद कर लेता है, और कहता है कि बहू सुधीर से कहे कि बहू उनका दीन कबूल कर ले। मौलवी भी नीलू के पिता को यही सलाह देता है।

संदर्भ संकेत :-

- 1) भीष्म साहनी के उपन्यासों में संवेदना और शिल्प, पृ. १४, श्रीनिवास पब्लिकेशन्स, वैशाली नगर, जयपुर-१
- 2) भीष्म साहनी के उपन्यासों में संवेदना और शिल्प, पृ. १८, श्रीनिवास पब्लिकेशन्स, वैशाली नगर, जयपुर-१
- 3) पटेल, शर्मिष्ठा, भीष्म साहनी के उपन्यासों में संवेदना और पृ. १९, श्रीनिवास पब्लिकेशन्स, वैशाली नगर, जयपुर-

- 6) साहनी, भीष्म, शरोखे (उपन्यास), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-६ ५.
- 7) साहनी, भीष्म, कडियों (उपन्यास), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-६
- 8) साहनी, भीष्म, तमस (उपन्यास), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-६
- 9) साहनी, भीष्म, वसंती (उपन्यास), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-६
- 10) साहनी, भीष्म, मैयादास की माडी (उपन्यास), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-६
- 11) साहनी, भीष्म, कुतो (उपन्यास), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-६
- 12) साहनी, भीष्म, नीनु, नीतिमा और नीलोफर (उपन्यास), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-६ १०.
- 13) दस प्रतिनिधि कहानिया भीष्म साहनीकिताब-घर प्रकाशन ४८५५-५६/२४ अंसारी, रोड, दरियागंज नई दिल्ली, ११०००२ संस्करण २००९

Utopia and dystopia beyond space and time

ISSN 2349 - 5189
Special Issue
April - 2023



An international **Peer - Reviewed** Open Access Journal
ISSN 2349 - 5189 | indexed Journal | impact Factor : 5.61 | www.langlit.org

ONE DAY
INTERNATIONAL CONFERENCE
ON
LANGUAGE & LITERATURE : A FORM OF SOCIAL DISCOURSE
(English, Hindi, Sanskrit & Marathi)
5th APRIL 2023, WEDNESDAY

Chief editor
Prin.Dr. J. M. Saboo
Associate Editors
Prof. D. D. Mapari Dr. Avinash Thote Prof. Aditi Mankar

Organized by
Department of English
In Association with Internal Quality Assurance Committee
SHANKARLAL KHANDLWAL ARTS,
SCIENCE & COMMERCE COLLEGE, AKOLA, MAHARASHTRA
(NAAC Reaccredited with Grade 'A' in 3rd Cycle)





UTOPIAS AND DYSTOPIAS: BEYOND SPACE AND TIME

DR.SAVITA D.THAKARE

Associate Professor & Head
Department of English
MatoshreeVimalabai Deshmukh Mahavidyalaya,
Amravati

ABSTRACT:

Dystopias and utopias have remained a point of fascination because of both their extreme nature and their ability to imagine the grand and grotesque. Recently, dystopias in particular have seemed to capture the public's attention, with their portrayal of all the ways society can go wrong. It is an undeniable fact that for better or worse, humans have changed and shaped the world to their liking- in a way that could lead to our demise or to a yet unprecedented level of prosperity. Indeed, in many people's conceptualization of the future, extreme prosperity is followed by extreme destruction. However, like human nature, dystopias and utopias, the good and the bad, are intricately wound up in each other. The term utopia was first used by the British writer Thomas More in his book of fiction Utopia in the 16th century. Utopia refers to the creation of an imaginary world which is completely idyllic. In other words, utopian authors imagine the perfect society in which all people live in harmony. On the other side, dystopia is all about pessimism and often warn us about the potential drifts of an ideology or a situation. A dystopian work depicts an imaginary society ruled by a totalitarian power or an adverse ideology.

Keywords: Utopia, Dystopia, Ideology, Thomas More, Literature, Fiction

Introduction:

Concepts of utopia and dystopia represent imaginary societies in which people live their life either in a perfect environment, governed by the laws that provide happiness to everyone, or in an oppressive society that is ruled by the repressive and controlled state. Dystopias and utopias have remained a point of fascination because of both their extreme nature and their ability to imagine the grand and grotesque. Recently, dystopias in particular have seemed to capture the public's attention, with their portrayal of all the ways society can go wrong. This is perhaps an indicator that society's fears, rather than its hopes, are at the forefront of its collective minds. But what is it that keeps dystopias and utopias so fashionable, so perpetually intriguing, and most of all, so diverse? How is it that we keep coming up with infinitely many ways for the world to go so perfectly right or horribly wrong?

The truth is that, at their core, utopias and dystopias are a reflection of human nature itself, and the potential within that nature. It is this potential that enables humans to build cities and

Special Issue

127

5th April, 2023

Website: www.langlit.org

Contact No. : +919890290602

One Day International Conference on "Language & Literature: A Form of Social Discourse" organized by
Department of English, Shankar Lal Khandelwal Arts, Science and Commerce College, Akola (MS)

Indexed: ICI Google Scholar Research Gate Academia.edu IRI IFC DRU The CitFactor COSMOS



IMPACT FACTOR – 5.61

LangLit

ISSN 2349-5189



An International Peer-Reviewed Open Access Journal

destroy wildlife, to dramatically increase human life spans and happiness but also to create (and use) the atomic bomb. It is an undeniable fact that for better or worse, humans have changed and shaped the world to their liking– in a way that could lead to our demise or to a yet unprecedented level of prosperity. Indeed, in many people’s conceptualization of the future, extreme prosperity is followed by extreme destruction. However, like human nature, dystopias and utopias, the good and the bad, are intricately wound up in each other.

The term utopia was first used by the British writer Thomas More in his book of fiction *Utopia* in the 16th century. Utopia refers to the creation of an imaginary world which is completely idyllic. In other words, utopian authors imagine the perfect society in which all people live in harmony. On the other side, dystopia is all about pessimism and often warn us about the potential drifts of an ideology or a situation. A dystopian work depicts an imaginary society ruled by a totalitarian power or an adverse ideology.

Utopia and dystopia show our need to understand the world we live in, transform it and reinvent it. Here, imagination offers an altered reflection of reality as to better think our own world. His description of utopian society gave birth to an enormous wave of utopian thought that influenced the life and works of many future philosophers and novelist and helped in the creation of several significant political movements . Utopias that were envisioned by the minds of those authors can most easily be divided into several distinct categories, all based on the means of their creation – Ecology utopia, Economic utopia, Political Utopia, Religious Utopia, Feminists Utopia and Science and technological utopia.

Utopia vs. Dystopia:

A dystopia is defined as a bad place, a place where no one would want to live, a place in which one’s rights and freedoms would be gone, a place where the environment would be devastated. Dystopia is created from the Greek prefix “dys” meaning bad, harsh, or wrong and the Greek root “topos” meaning place. In fiction, like Aldous Huxley’s *Brave New World*, or in movies like *The Matrix*, the bad place is more than a setting. The dystopia acts as a vehicle for an author’s dramatic opinion about the way we live today. In this way, dystopian literature is usually crafted so that it acts as a warning to us - to stop what we’re doing or face the consequences. The opposite of a dystopia is a utopia. utopia is literally “good place” and “no place” which implies that a utopia is perfect but does not and will not exist. A place, state, or condition that is ideally perfect in respect of politics, laws, customs, and conditions. Utopias can also be defined as an ideal community or society possessing a perfect socio-politico-legal system. The term has been used to describe both intentional communities that attempt to create an ideal society, and fictional societies portrayed in literature.

Characteristics of a Dystopian Society:

Propaganda replaces education and is used to control the citizens of society. • Information, independent thought, and freedom are restricted. • Citizens are perceived to be under constant surveillance • Citizens have a fear of the outside world • Citizens live in a dehumanized state. • The natural world is banished and distrusted.

Utopias and Dystopias :The Potential of Human Nature:

Special Issue

128

5th April, 2023

Website: www.langlit.org

Contact No. : +919890290602

One Day International Conference on “Language & Literature: A Form of Social Discourse” organized by Department of English, Shankarlal Khandhelwal Arts, Science and Commerce College, Akola (MS)

Indexed: ICI, Google Scholar, Research Gate, Academia.edu, IRI, IJFC, DRIF, The Cit-Factor, COSMOS



IMPACT FACTOR – 5.61

LangLit

ISSN 2349-5189



An International Peer-Reviewed Open Access Journal

In general utopia idealized as a vision of paradise fills with perfect and ideal society, politics, laws, custom, and conditions. Where information, independent thought, and freedom are promoted, a harmonious state of citizenships, bringing the citizens and society together as a whole, natural world and peace is embraced. Utopias usually found in fiction which is science fiction, where the authors and writers explore what a perfect society would be and how will problems might be created in such an ideal society.

The tendency to conceive of utopia in unified terms still shapes much of the current learned literature on utopia. Utopia in literature often assumed as a good place that is 'no place'. The dream of a perfect society still to come. As a result, utopia is frequently associated with a particular essence, for instance, utopian imagination, mentality, impulse, state of mind or a specific form of social consciousness. This essence identifies as the desire for a different, better way of being. This way of approach created the label of "utopian" offering social-historical and identification in the form of disparity between socially experienced need and socially constructed means for their satisfaction. While emphasizing the considerable importance of the 'function' for utopian to achieve 'a better life' In Thomas More's most known book 'Utopia' in 1516, he disputes the prevailing view of his youthful spirit to reform the ideal reform for a better word. His book consists of a map, letter, poem, the alphabet of utopian language and letter that verified the existence of utopia.

Greed is the main source of utopian vision. One of the artist links of the theme itself is, Paul Noble. A British visual artist well known for his grey-scale phenomenal with practices that construct a figurative functional aspect of the utopia. With the sequence of numerous shapes, spatial differentiation and architectural layout of landscapes as his concepts. He created two artworks depicting the perfect image of heaven and hell from his own imagined visual. His elements of 'Hell' are so delicate contain beautiful immensely detailed filled with light, rhythm, transparency, and space. And the word 'Heaven' consists of a rectangular wall with high brooding walls without an entrance or exit. With broken glass on the top wall which is particularly bizarre.

However, our future is necessarily composed of two parts. The brief span of earthly existence and the other is the long span of eternity. We would like to be as satisfactory as possible, but the two paths of pilgrims of the lost paradise. One is redemption, salvation and the promise of eternal life and the guest of utopia for a good time and life. The old ideal worlds can lend us inspiration, hope and a sense of what we need to avoid. As our ideal world mostly create by our creation, and a serious reckoning with the fate to be faced.

There are no such things as a perfect world, if the world was perfect, it wouldn't be. It's the imperfections of life that make life worth living in. Humans are born in and molded with conflict and problems. For me, utopia is not a world or a genre, rather than a state of mind of a person. We living in a world where experience possible, the experience of joy and pain. A universal utopia is not possible as well. The perfect utopia doesn't have the freedom of voice, it's all regulated by rules that must be followed. As every single person has their role to play, no more no less. Utopia itself is a self-defeating and self-annihilating concept that never be achieved. "No place" also means it can't exist. It's like removing chaos from the universe, however, utopia is not a system of creating happiness or peace. More likely people who live in Utopia requires being controlled, and too much control created protest and activists.

Special Issue

129

5th April, 2023

Website: www.langlit.org

Contact No. : +919890290602

One Day International Conference on "Language & Literature: A Form of Social Discourse" organized by

Department of English, Shankarlal Khandelwal Arts, Science and Commerce College, Akola (MS)

Indexed: ICL, Google Scholar, Research Gate, Academia.edu, IRI, HFC, DR II, The CiteFactor, COSMOS



Society always think utopia as a positive and good concept by the surface, but once we realize what it takes to build a utopia, the positive are outweighed by the negatives. In the world we live in, we have our idea, freedom of thoughts and progress to life. Progress toward knowledge of knowledge, biology, morality, etc. In philosophy is more emotionally sensationalized combined.

Conclusion

In our modern environment, works of fiction that are focused on the futuristic visions of dark dystopias are common and widespread. These visions of futuristic worlds produced some of the most famous novels, movies, comics and music of our time. Numerous philosophers and authors imagined the dark visions of the future where totalitarian rulers governed the life of ordinary citizens. Their works explored many themes of dystopian societies – repressive social control systems, government coercion of citizens, influence of technology on human mind, coping mechanisms, individuality, freedom of life and speech, censorship, sexual repression, class distinctions, artificial life and human interaction with the nature .Utopia is a paradise, a heaven. Where everyone lives fairly, feels happy, free, give love for each other. Respecting others, listen to someone else's words, moral, and good. On the other hand, dystopia is a gloomy, world with no dreams or hopes.

REFERENCES:

1. Bartkowski, Frances. *Feminist Utopias*. Lincoln, NE, University of Nebraska Press, 1991.
2. Claeys, Gregory. *Dystopia: A Natural History*. Oxford, Oxford University Press, 2017.
3. Haschak, Paul G. *Utopian/Dystopian Literature*. Metuchen, NJ, Scarecrow Press, 1994.
4. Mohr, Dunja M. *Worlds Apart: Dualism and Transgression in Contemporary Female Dystopias*. Jefferson, NC, McFarland, 2005.
5. Babace, Ruzbeh (June 26, 2015). "Critical Review on the Idea of Dystopia". *Review of European Studies*. 7 (11).
6. Booker, M Keith (1994). *The Dystopian Impulse in Modern Literature: Fiction as Social Criticism*. Greenwood Press.

Special Issue

130

5th April, 2023

Website: www.langlit.org

Contact No. : +919890290602

One Day International Conference on "Language & Literature: A Form of Social Discourse" organized by

Department of English, Shankarlal Khandelwal Arts, Science and Commerce College, Akola (MS)

Indexed: ICL, Google Scholar, Research Gate, Academia.edu, IRI, HEC, DRIL, The Cit-Factor, COSMOS



Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati affiliated, Shikshan Prasarak Mandal, Akola's
Shankarlal Khandelwal Arts, Science & Commerce College, Akola, Maharashtra
(NAAC Reaccredited with Grade 'A' in 3rd Cycle)



Department of English & IQAC
organized

ONE DAY INTERNATIONAL CONFERENCE ON LANGUAGE & LITERATURE : A FORM OF SOCIAL DISCOURSE



(English, Hindi, Sanskrit & Marathi)
5th APRIL 2023, WEDNESDAY

CERTIFICATE

This is to certify that Dr. Savita D. Thakare of Matoshree Vimalabai Deshmukh Mahavidyalaya, Amravati
has presented a paper entitled: Utopias and Dystopias : Beyond Space and Time in One Day International
Conference on Language & Literature: A Form of Social Discourse on 5th April 2023.

Dr. Avinash Thote
Organising Secretary

Prof. D. D. Mapari
Convener

Dr. J. M. Saboo
Principal

[Click here for the pdf copy of Research Journal](#)

Education for Life & Life for Nation

Contribution of Indian women writers in the world literature a review

Impact Factor-8.632 (SJIF) ISSN-2278-9308


B.Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed
Multidisciplinary International Research Journal

March-2023

ISSUE No - (CCCXCVIII) 398 (A)

A Journey of Indian women



Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor
Dr.V.R.Kodape
Principal
Shri Kisanlal Nathmal Goenka Arts & Com,
College Karanja (LAD) Dist. Washim

The Journal is indexed in:
Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
Cosmos Impact Factor (CIF)
International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar PUBLICATIONS



Contribution of Indian Women Writers in the World Literature: A Review
Dr.Savita D. Thakare

Associate Professor & Head Department of English Matoshree Vimalabai Deshmukh
Mahavidyalaya,Amravati Email Id-smita.thakare0@gmail.com

ABSTRACT

Women writings have contributed much to the growth of literature and have presented issues highlighting a women's world. However the success of women writings is highly acclaimed that it has won international recognition.Indian women's fiction is dealing with multiple issues concerning self and society. It is also significant that women writers have not simply been confined to the private realm but have moved beyond it. It provides insight, a wealth of understanding, reservoirs of meaning and basis of discussion. The world is being seen in a new dimension through the eyes of women fiction writers.

The Indian women writers who expressed their views and agony through their writings in the Postcolonial times for two major reasons. First, both patriarchy and imperialism could be seen to exert different forms of domination over those subordinate to them We observe that women continued to define the borders of the community, class and race. They tried to express their agony and dissatisfaction of male dominated attitude through their works. The Indian women novelists like Anita Desai, Shashi Deshpande and Kamala Markandeyahave chosen the problems and issues faced by the women in today's male dominated world as the theme of their novels.They have visualized the spirit of Indian cultures and its traditional values.

Keywords: recognition, patriarchal society, differences, cultural alienation, visualized,agony,dissatisfaction,male dominated society,discrimination

INTRODUCTION

There are many Indian women writers both novelists and poets, based in the USA and Britain. Some like Jhabvala and Anita Desai are late immigrants while others, like Jhumpa Lahiri belongs to the second generation of Indians abroad. Most expatriate writers have a weak grasp of actual conditions in contemporary India, and tend to recreate it through the lens of nostalgia. Their best works deal with the Indian immigrants, the section of society they know at first hand. Sunithi Nam Joshi, Chitra Benerji, Divakarvas and Bharathi Mukherjee are the oldest, and naturally, the most prolific. Writers like JumphaLahari, Manju Kapoor, Kiran Desai, and Arundhati Roy too have written novels of Magic Realism, Social Realism and Regional fiction, and benefited from the increasing attention that this fiction has received National and International awards. They have probed into human relationships, since the present problem is closely concern. It is a matter of great pride that Indian women's fiction has come into its own and is recognized as literature with a substance. Over the past few decades women have contributed significantly to life and literature by interrogating and exploring their own lives and that of other women. Today Indian women's fiction is dealing with multiple issues concerning self and society. Much of women's writing is primarily a critique of social justice and equality in a patriarchal society. Indian women novelists are progressing leaps and bounds. However, the success of women writings is highly acclaimed that it has won international recognitions breaking the barriers of Gender, Race and Region. The image of women in fiction has undergone a change during the last four decades. Women writers have moved from the traditional portrayals of enduring, self-sacrificing women towards conflicted female characters searching for identity, no longer characterized in terms of their victim status rather they assert themselves and challenge marriage and motherhoodwith mind and heart and the crusade is against age-old established systems. In order to make the process of changes smooth and really meaningful, women writers have taken upon themselves this great task .

Indians are lauded globally for their writing, whether it is Rabindranath Tagore for 'Gitanjali' or Salman Rushdie for his book 'Midnight's Children'. The success of Indian writers has reached such an extent that women authors are also breaking into the field in a major way and making us proud with their wonderful writings.

Indian women novelists in English have made their permanent mark in the field of English fictions. They are being conferred on not only national but international awards also. In most of their writings they have tried their best to free the female mentality from theage long control of male

domination. In short, in their novels, the protagonists are mostly women characters desolated and isolated by an entirely sapless, hypocritical and insensitive male domination. Today whatever political, social, cultural and individual awareness we see in women, they are mostly the result of these fiction writers who heralded a new consciousness in the realm of traditional thinking. If this tireless efforts on the part of women for women's sake go on, the days are not far when they will be equated with men and even far better than men, in all respects, in each and every field.

From time immemorial, women have been the subject of vitriolic comments. The negative attitude of the society finds its expression in the myths, legends, stories and history. The Indian literature has gifted several talented women novelists as Arundhati Roy, Shashi Deshpande, Anita Desai, Shobha De, Sudha Murthy, Anita Nair, Jhumpa Lahiri, Chitra Banerjee, Kiran Desai, Bharati Mukherjee, Kamala Markandaya, Ruth Praver Jhabvala, Nayantara Sahgal, Geeta Mehta, Rama Mehta, Manju Kapoor and many more. They are known for the contemporary approach in their novels. Basically, their novels are the novels of protest and an outburst of reservations and contaminations.

The women of modern era think on different lines and that is what is depicted in the novels of the Indian women novelists. They explore the feminine subjectivity and apply the theme that ranges from childhood to complete womanhood. Through their novels they spread the message of what actually feminism is. For them feminism means putting an end to all the sufferings of a woman in silence. The following women novelists have left their indelible imprint on the readers of Indian fiction in English. Most of these female novelists are known for their bold views that are reflected in their novels.

Shashi Deshpande: She is a well known name in the field of Indian literature.

Shashi Deshpande is the critically acclaimed writer of nine novels, a number of short stories, children's books and essays. Sashi Deshpande published her first collection of short stories in 1978, and her first novel, *The Dark Holds No Terror*, in 1980. Her novel, *That Long Silence*, won the Sahitya Academy Award in 1990. Trained as a journalist, Deshpande's work focuses on the reality and truth of the lives of Indian women. Deshpande has described her literary style as really a very simple and stark style, which rarely draws attention to itself.

Arundhati Roy: Her phenomenal success took everyone, including herself by surprise. She made headlines around the world when she became the first Indian woman to win a Man Booker prize for her debut novel, *The God of Small Things* (1997). This novel registered a tremendous sale all over the world. It has been translated into more than 40 languages. Roy's second book *The End of Imagination* is short but revolutionary. It deals with her strong protest against nuclearization in India and abroad. Today she has become an ardent advocate of social and economic justice for the country's oppressed minorities. She has published a number of essays on subjects varying from India's rapid industrialization to the continuing problem of Kashmir. She has also written two screenplays and several collections of essays.

Anita Desai: Anita Desai is an Indian novelist and short story writer. She has been writing some of the best English language fiction in India for almost four decades. She's been short listed for the Man Booker prize thrice and won the Sahitya Academy Award, one of India's most prestigious literary prizes, in 1978 for her second novel, *Fire on the Mountain*.

Anita Desai, in her psychological novels, presents the image of a suffering woman preoccupied with her inner world, her sulking frustration and the storm within: the existential predicament of a woman in a male dominated society. Through such characters, she makes a plea for a better way of life for women. Her novels have Indians as central characters, and she alternates between female-centered and male-centered narrative.

Shobha De: India's best selling woman writer recently published her 16th book, *sweet sixteenth* (2009). De, a prolific columnist and blogger, writes books filled with privileged protagonists from Bombay's high society. She is an Indian novelist, copywriter, freelance writer and columnist, best known for her columns in *The Week*. She has moved away from the beaten path and has actually undertaken a serious analysis of the man-woman relationship in marriages. She has made certain insightful comments that will do the average Indian woman a lot of good. For instance she advises that a woman ought to announce to her partner right at the beginning of the relationship that she too has a set of priorities and prerogative (s) other than him because men don't like to be taken by surprise.



domination. In short, in their novels, the protagonists are mostly women characters desolated and isolated by an entirely sapless, hypocritical and insensitive male domination. Today whatever political, social, cultural and individual awareness we see in women, they are mostly the result of these fiction writers who heralded a new consciousness in the realm of traditional thinking. If this tireless efforts on the part of women for women's sake go on, the days are not far when they will be equated with men and even far better than men, in all respects, in each and every field.

From time immemorial, women have been the subject of vitriolic comments. The negative attitude of the society finds its expression in the myths, legends, stories and history. The Indian literature has gifted several talented women novelists as Arundhati Roy, Shashi Deshpande, Anita Desai, Shobha De, Sudha Murthy, Anita Nair, Jhumpa Lahiri, Chitra Banerjee, Kiran Desai, Bharati Mukherjee, Kamala Markandaya, Ruth Praver Jhabvala, Nayantara Sahgal, Geeta Mehta, Rama Mehta, Manju Kapoor and many more. They are known for the contemporary approach in their novels. Basically, their novels are the novels of protest and an outburst of reservations and contaminations.

The women of modern era think on different lines and that is what is depicted in the novels of the Indian women novelists. They explore the feminine subjectivity and apply the theme that ranges from childhood to complete womanhood. Through their novels they spread the message of what actually feminism is. For them feminism means putting an end to all the sufferings of a woman in silence. The following women novelists have left their indelible imprint on the readers of Indian fiction in English. Most of these female novelists are known for their bold views that are reflected in their novels.

Shashi Deshpande: She is a well known name in the field of Indian literature.

Shashi Deshpande is the critically acclaimed writer of nine novels, a number of short stories, children's books and essays. Sashi Deshpande published her first collection of short stories in 1978, and her first novel, *The Dark Holds No Terror*, in 1980. Her novel, *That Long Silence*, won the Sahitya Academy Award in 1990. Trained as a journalist, Deshpande's work focuses on the reality and truth of the lives of Indian women. Deshpande has described her literary style as really a very simple and stark style, which rarely draws attention to itself.

Arundhati Roy: Her phenomenal success took everyone, including herself by surprise. She made headlines around the world when she became the first Indian woman to win a Man Booker prize for her debut novel, *The God of Small Things* (1997). This novel registered a tremendous sale all over the world. It has been translated into more than 40 languages. Roy's second book *The End of Imagination* is short but revolutionary. It deals with her strong protest against nuclearization in India and abroad. Today she has become an ardent advocate of social and economic justice for the country's oppressed minorities. She has published a number of essays on subjects varying from India's rapid industrialization to the continuing problem of Kashmir. She has also written two screenplays and several collections of essays.

Anita Desai: Anita Desai is an Indian novelist and short story writer. She has been writing some of the best English language fiction in India for almost four decades. She's been short listed for the Man Booker prize thrice and won the Sahitya Academy Award, one of India's most prestigious literary prizes, in 1978 for her second novel, *Fire on the Mountain*.

Anita Desai, in her psychological novels, presents the image of a suffering woman preoccupied with her inner world, her sulking frustration and the storm within: the existential predicament of a woman in a male dominated society. Through such characters, she makes a plea for a better way of life for women. Her novels have Indians as central characters, and she alternates between female-centered and male-centered narrative.

Shobha De: India's best selling woman writer recently published her 16th book, *sweet sixteenth* (2009). De, a prolific columnist and blogger, writes books filled with privileged protagonists from Bombay's high society. She is an Indian novelist, copywriter, freelance writer and columnist, best known for her columns in *The Week*. She has moved away from the beaten path and has actually undertaken a serious analysis of the man-woman relationship in marriages. She has made certain insightful comments that will do the average Indian woman a lot of good. For instance she advises that a woman ought to announce to her partner right at the beginning of the relationship that she too has a set of priorities and prerogative (s) other than him because men don't like to be taken by surprise.



Sudha Murthy: Sudha Kulkarni Murthy is renowned for her writing and active role in social services. Her flair for writing is evident in her books like *Dollar Sose*, originally written in Kannada. Her notable works include *Wise and Otherwise*, and *Mahasweta*. Sudha. She now heads Infosys Foundation, is an engineer, a teacher, writer, mother and wife. Sudha Murthy, the reputed wife of Infosys giant Narayana Murthy, has written a tenderly humorous account of their modest beginnings and their subsequent growth in life. Her account of her life before and after Narayana Murthy, the birth and growth of Infosys and her novels in general, provide an impetus and kindle positive thinking in her readers. Her work exudes simple realism and empathy. All the little things in life that go a long way are highlighted. Her huge contribution in the birth and growth of Infosys is well known.

CONCLUSION:

Women writers in India are moving forward with their strong and sure strides, matching the pace of the world. We see them bursting out in full bloom spreading their own individual fragrances. They are recognized for their originality, versatility and the indigenous flavour of the soil that they bring to their work.

Literature reflects not only the social reality but also reflects the ever changing reality of life. The portrayal of the position of women in the society, their personal relationship and their perception of the socio-cultural reality helps to shape and organize themselves. Among all literary forms, fiction reflects the contemporary social conditions. With the advent of the 20th century, the novels emerged with varied perspectives of the attitudes towards the imposition of traditions, re-interpretation of mythology, an analysis of the family structure, caste system and the status of women in the patriarchal social organization. The early writers presented the traditional image of a woman like Sita or Savitri but the contemporary writers emerged with a new woman, who does not want to lead a passive married life of sacrificial and shadowy creatures. Recent writers depict both the diversity of women and the diversity within each woman, making society aware of women's demands and a medium of self-expression.

In the contemporary Indian Literary scenario, Indian women writers in English who reflect the truth of Indian reality. They bear numerous responsibilities in the world of literature. They execute with admirable aplomb as the anthropologists, sociologists, novelists, essayists, travel writers, teachers and slip into global responsibility for establishing peace as the ambassadors. All the post-colonial and postmodern predicaments are wrestled to demonstrate a high level of self-consciousness, which continue, interrogate the social, philosophical, cultural issues of rape and sexual harassment of innocent women in the contemporary Indian society. Their works have initiated the emergence of critique of feminism with nationalism. Their intellectual insights, conceptual, theoretical and textual experiments have engaged and interpreted the complex colonial and postcolonial situations. They have also established a peculiar paradox of reading and appreciation eloquently responding to the issues of sexually harassed women both in post-colonial and postmodern issues of rape and exploitation on the Indian women in the contemporary society.

REFERENCES

1. Asnani, Shyam. *New Dimensions of Indian English Novel*. Delhi: Doaba House, 1987. Print.
2. *The Feminine Voice in the Indian Fiction*, Asia Book Club, New Delhi
3. *The Essentials of Literature in English Post-1914*, Ed by Ian Mackean.
4. *Journal of English Language and Literature* Vol. no. 3, Issue 1. 2015
5. Dr. M. Premavathy *International Journal of Current Research And Academic Review*, Vol. no. 2, Feb. 2014



Sudha Murthy: Sudha Kulkarni Murthy is renowned for her writing and active role in social services. Her flair for writing is evident in her books like *Dollar Sose*, originally written in Kannada. Her notable works include *Wise and Otherwise*, and *Mahasweta*. Sudha. She now heads Infosys Foundation, is an engineer, a teacher, writer, mother and wife. Sudha Murthy, the reputed wife of Infosys giant Narayana Murthy, has written a tenderly humorous account of their modest beginnings and their subsequent growth in life. Her account of her life before and after Narayana Murthy, the birth and growth of Infosys and her novels in general, provide an impetus and kindle positive thinking in her readers. Her work exudes simple realism and empathy. All the little things in life that go a long way are highlighted. Her huge contribution in the birth and growth of Infosys is well known.

CONCLUSION:

Women writers in India are moving forward with their strong and sure strides, matching the pace of the world. We see them bursting out in full bloom spreading their own individual fragrances. They are recognized for their originality, versatility and the indigenous flavour of the soil that they bring to their work.

Literature reflects not only the social reality but also reflects the ever changing reality of life. The portrayal of the position of women in the society, their personal relationship and their perception of the socio-cultural reality helps to shape and organize themselves. Among all literary forms, fiction reflects the contemporary social conditions. With the advent of the 20th century, the novels emerged with varied perspectives of the attitudes towards the imposition of traditions, re-interpretation of mythology, an analysis of the family structure, caste system and the status of women in the patriarchal social organization. The early writers presented the traditional image of a woman like Sita or Savitri but the contemporary writers emerged with a new woman, who does not want to lead a passive married life of sacrificial and shadowy creatures. Recent writers depict both the diversity of women and the diversity within each woman, making society aware of women's demands and a medium of self-expression.

In the contemporary Indian Literary scenario, Indian women writers in English who reflect the truth of Indian reality. They bear numerous responsibilities in the world of literature. They execute with admirable aplomb as the anthropologists, sociologists, novelists, essayists, travel writers, teachers and slip into global responsibility for establishing peace as the ambassadors. All the post-colonial and postmodern predicaments are wrestled to demonstrate a high level of self-consciousness, which continue, interrogate the social, philosophical, cultural issues of rape and sexual harassment of innocent women in the contemporary Indian society. Their works have initiated the emergence of critique of feminism with nationalism. Their intellectual insights, conceptual, theoretical and textual experiments have engaged and interpreted the complex colonial and postcolonial situations. They have also established a peculiar paradox of reading and appreciation eloquently responding to the issues of sexually harassed women both in post-colonial and postmodern issues of rape and exploitation on the Indian women in the contemporary society.

REFERENCES

1. Asnani, Shyam. *New Dimensions of Indian English Novel*. Delhi: Doaba House, 1987. Print.
2. *The Feminine Voice in the Indian Fiction*, Asia Book Club, New Delhi
3. *The Essentials of Literature in English Post-1914*, Ed by Ian Mackean.
4. *Journal of English Language and Literature* Vol. no. 3, Issue 1. 2015
5. Dr. M. Premavathy *International Journal of Current Research And Academic Review*, Vol. no. 2, Feb. 2014



भारताच्या आर्थिक विकासात बँकिंग क्षेत्राच्या योगदानाचे अध्ययन

प्रा.जे.डी.सांगोळे¹, प्रा.डॉ. डी.के.शुंगारे²

एम.व्ही.डी.महा.अमरावती, आदर्श महाविद्यालय, धामाणगाव रेल्वे

गोषवारा -

भारतीय अर्थव्यवस्थेच्या आर्थिक विकासात व्यापारी बँकांचे योगदान अत्यंत महत्त्वाचे आहे. विशेषतः भारतीय व्यापारी बँकांच्या 1969 मध्ये करण्यात आलेल्या राष्ट्रीयकरणानंतर या बँकांनी शेती व ग्रामीण विकासामध्ये मोलाचे योगदान दिलेले आहे. एवढेच नाही तर बदलत्या परिस्थितीनुसार भारतीय व्यापारी बँकांनी आपल्या व्यवसायामध्ये, ध्येयधोरण व ग्राहक सेवांमध्ये महत्त्वपूर्ण बदल केलेले आहेत. सध्याच्या माहिती तंत्रज्ञानाच्या युगात भारतीय व्यापारी बँकांनीही आपली आधुनिकता सिद्ध करण्याचे विविध प्रयत्न केलेले आहेत. आहे.जुलै 1991 पासून पी. व्ही. नरसिंहराव यांच्या सरकारने ज्या व्यापक आर्थिक सुधारणा अंमलात आणल्या, त्या कालावधीस सुधारणांचे नवे पर्व म्हणता येईल. या आर्थिक सुधारणांचे उदारीकरण, खाजगीकरण आणि जागतिकीकरण हे महत्त्वपूर्ण पैलू असून यामुळे भारतीय अर्थव्यवस्था अधिक बळकट होईल व त्यांचे लाभ सर्व भारतीयांना मिळतील अशी आशा व्यक्त करण्यात येत आहे.

उदारीकरण धोरणामुळे नवीन खाजगी भारतीय बँकांचा व परकीय बँकांचा उदय झाला आहे. नवीन बँका येण्यासाठी प्रयत्न सुरू आहेत. या बँका स्पर्धा करीत आहेत. पत्रपत्र, स्मार्ट कार्ड्स, टेलिमेकिंग, वे बँकिंग, होम बँकिंग, ए.टी.एम. बँकिंग अशा तंत्रज्ञानावर आधारित अत्याधुनिक ग्राहकाभिमुख सेवा उपलब्ध करून देत आहेत. ग्राहकांच्या गरजांनुसार त्यांच्या सेवा सुविधामध्ये बदल करीत आहेत. नवीन ग्राहक मिळविणे, आहेत ते टिकविणे व त्यांना जास्तीत जास्त सेवा-सुविधा स्वस्त दर पुरविणे याबाबतीत स्पर्धा निर्माण झाली आहे. स्पर्धेतूनच व्यवसायवृद्धी, व्यवसायवृद्धीतून नफा क्षमता आणि नफा क्षमतेतून अस्तित्व टिकविणे क्रमप्राप्त झाले आहे. प्रस्तुत लेखात आर्थिक सुधारणा कार्यक्रम काळातील भारतीय बँकिंग क्षेत्राच्या कामगिरीचा या प्रयत्नाचा अभ्यास करून भारताच्या आर्थिक विकासात बँकिंग क्षेत्राच्या योगदानाचे अध्ययन स्वरूप व दिशा मांडण्याचा प्रयत्न प्रस्तुत शोधनिबंधात करण्यात आलेला आहे.

प्रस्तावना :

आर्थिक सुधारणा कार्यक्रम अर्थव्यवस्थेतील कृषी, उद्योग, व्यापार व सेवा क्षेत्राबरोबरच वित्त क्षेत्रालाही लागू करण्यात आला. बँका, वित्तसंस्था, नाणेबाजार व भांडवलबाजार आणि भागबाजार हे भारतीय वित्तव्यवस्थेतील मुख्य घटक आहेत. आर्थिक सुधारणा कार्यक्रम आरंभ होऊन दीड दशक झाले आहे. या कालावधीत बँकिंग क्षेत्रात अनेक महत्त्वपूर्ण बदल झाले आहेत. आंतरराष्ट्रीय मापदंडाप्रमाणे बँकिंगप्रणालीची गुणवत्ता सुधारण्यासाठी उत्पन्न निश्चिती, मालमत्तेचे वर्गीकरण, अनुत्पादक कर्जावरील तरतूदी, हिशेब पद्धती याबाबतचे नवीन निकष अस्तित्वात आले आणि परिस्थितीनुरूप त्यात बदल देखील केले जात आहेत. सुधारणांच्या पार्श्वभूमीवर अर्थव्यवस्थेचे अविभाज्य अंग असलेले बँकिंग क्षेत्र हे जास्तीत जास्त ग्राहकाभिमुख होत असल्याचे दिसते. परिणामी बँकांची कार्यपद्धती बदलली असून वाढत्या तीव्र स्पर्धेमुळे बँकांना आपले अस्तित्व टिकविणे क्रमप्राप्त झाले आहे.

प्रस्तुत लेखात आर्थिक सुधारणा कार्यक्रम काळातील भारतीय बँकिंग क्षेत्राच्या कामगिरीचा या प्रयत्नाचा अभ्यास करून भारताच्या आर्थिक विकासात बँकिंग क्षेत्राच्या योगदानाचे अध्ययन स्वरूप व दिशा मांडण्याचा प्रयत्न प्रस्तुत शोधनिबंधात करण्यात आलेला आहे.

बँकिंग क्षेत्रात बदलाची आवश्यकता-

मद्यस्थितीत आर्थिक उदारीकरणाचा अर्थ, अर्थव्यवस्थेतील प्रत्येक बाजारातील नियंत्रणेकरणे असा होतो. विदेशी विनिमय बाजार, वित्तीय बाजार, शेतीमालाचा बाजार इत्यादींच्या बाबतीत सर्व अडथळे दूर करणे म्हणजे आर्थिक उदारीकरण होय, आर्थिक सुधारणापूर्व नियोजन काळात बँकांची संख्या शाखांची संख्या ठेवींचे प्रमाण, कर्जाचे वितरण याबाबतीत संख्यात्मक प्रगती झाली. मात्र ही संख्यात्मक प्रगती होत असताना दुसरीकडे बँकिंग व्यवहारात काही दोष निर्माण झाले होते. उदा. परताव्याचे प्रमाण घटत चालले होते. तोट्यातील बँकांची संख्या व संचित तोट्याचे प्रमाण वाढत होते. बँकांना रोख राखीव निधी व वैधानिक रोखता गुणोत्तर राखताना प्रत्यक्ष व्यवहारासाठी फारच कमी पैसा उपलब्ध होत होता.

परिणामी नफ्याचे प्रमाण कमी राहिले, बँकांच्या कर्जवाटपावर निर्बंध होते. अनुत्पादक मालमनेचे प्रमाण मानल्याने वाढन होते, अतिरिक्त नोकरभरती व स्पर्थेचा अभाव आणि कर्मचारी संघटनेचा प्रभाव यामुळे बँकांची उत्पादकता, कार्यक्षमता व लाभप्रदता यात मोठ्या प्रमाणावर घट होत चालली होती. बँकांच्या कार्यपद्धतीमधील दोष नाहीमे करण्यासाठी तमेच उदारीकरणाच्या प्रक्रियेत बँकांची स्पर्थक्षमता वाढीस लागावी या उद्देशाने सुधारणांची गरज भासली. तमेच आंतरराष्ट्रीय मापदंडानुसार भारतीय बँकांनी आपली कार्यशैली ठेवावी अशी अपेक्षा व्यक्त करण्यात आली होती.

भारतीय अर्थव्यवस्थेचा संख्यात्मक विकास घडून असतानाच नवनवीन प्रश्न निर्माण झाले. 1990 मध्ये भारताला आर्थिक अरिष्टाने ग्रसले यामध्ये वाढता कर्जबाजारीपणा, वाढती वित्तीय तूट, गुणात्मक विकासाची पिछेहाट, चलनवाढीचा मोठा दर, बेकारी व दारिद्र्याचे उग्र स्वरूप, भ्रष्टाचार, दिरंगाई, काळाबाजार इत्यादी वाढत्या अपप्रवृत्ती, प्रतिकूल व्यापारतोल व व्यवहारतोल, घसरती आंतरराष्ट्रीय आर्थिक पत इत्यादींमुळे शासकीय हस्तक्षेपावर आधारलेल्या आर्थिक धोरणात आमूलाग्र बदलाची आवश्यकता निर्माण झाली. गुणात्मक विकासाची कास धरणे, बदलत्या आंतरराष्ट्रीय घडामोडीशी जुळवून घेणे आणि आंतरराष्ट्रीय नाणेनिधी, व्यापार आणि जकाती विषयक सर्वसामान्य करार (GATT) युरोपीय मंघ व अमेरिका इत्यादींच्या प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष दडपणामुळे नवीन आर्थिक धोरणाच्या सहायाने खाजगीकरण, उदारीकरण व जागतिकीकरण धोरणाचा स्वीकार भारताने केल्याचे दिसून येते.

भारतीय बँकिंग प्रणालीची संरचना -

बँकिंग व्यवहारांवर नियंत्रण ठेवणारी व मार्गदर्शन करणारी भारतीय रिझर्व्ह बँक ही सर्वोच्च बँक आहे. भारतातील बँकांचे वर्गीकरण प्रामुख्याने तीन भागात केले जाते. 1. व्यापारी बँका; 2. सहकारी बँका आणि 3. विकास बँका व्यापारी बँकांतर्गत भारतीय स्टेट बँक व तिच्या संलग्न बँका, राष्ट्रीयीकृत बँका, प्रादेशिक ग्रामीण बँका, जुन्या व नवीन खाजगी बँका आणि परकीय बँकांचा समावेश होतो. मार्च 2006 अखेर सार्वजनिक क्षेत्रातील 27 बँका, 133 प्रादेशिक ग्रामीण बँका, जुन्या 20 व 9 नवीन खाजगी बँका आणि 31 परकीय बँका कार्यरत होत्या.

सहकारी बँकांतर्गत कृषी व विंगर कृषीविषयक राज्य सहकारी बँका, जिल्हा मध्यवर्ती सहकारी बँका, प्राथमिक पतसंस्था, नागरी सहकारी पतसंस्था आणि नागरी सहकारी बँकांचा समावेश होतो. सहकारी बँकांचा वाटा मोठा आहे राष्ट्रीय शेती व ग्रामीण विकास बँक (NABARD), औद्योगिक विकासासाठी भारतीय औद्योगिक विकास बँक लघुउद्योगांच्या विकासासाठी भारतीय लघुउद्योग विकास बँक (IDBI) व्यापार वृद्धीसाठी निर्यात-आयात बँक (EXIM BANK), गृहबांधणीसाठी राष्ट्रीय गृहनिर्माण बँक (PNB) इत्यादी. बँकांचा समावेश होतो.

बँकिंग क्षेत्राकरिता शिफारशी

1991 च्या आर्थिक धोरणांतर्गत भारत सरकारने बँक व्यवसाय व वित्तीय पद्धतीच्या संदर्भात 14 ऑगस्ट 1991 रोजी रिझर्व्ह बँकेचे गव्हर्नर एम. नरसिंहम यांच्या अध्यक्षतेखाली एक उच्चाधिकार समिती नियुक्त केली. या समितीत आठ सदस्य होते. या समितीकडे वित्तीय क्षेत्रातील संरचना, संघटन, कार्यपद्धती या प्रमुख घटकांबाबत माहिती प्राप्त करण्याचे कार्य सोपविले. नरसिंहम समितीने आपला पहिला अहवाल नोव्हेंबर 1991 मध्ये भारत सरकारकडे सुपूर्द केला. या अहवालातील काही प्रमुख शिफारशी भारतीय रिझर्व्ह बँकेने स्वीकारल्या व भारतातील नागरी सहकारी बँकांसहित इतर सर्व बँकांना लागू केल्या. या प्रमुख शिफारशी पुढील प्रमाणे,

- 1) भारतीय रिझर्व्ह बँकेने प्रत्येक बँकेसाठी किमान 8% भांडवल पर्याप्तता गुणोत्तराचा निकष लागू करावा आणि सर्व बँकांना आपले भांडवल पर्याप्त निकष भारतीय रिझर्व्ह बँक आणि भागधारकांसाठी कळवणे व जाहीर करणे बंधनकारक केले.
- 3) नियंत्रणात्मक व्याजदर धोरण रद्द करून बाजाराभिमुख व्याजदर धोरणाचा स्वीकार करण्यात यावा व बँकांना व्यवहारात स्वायत्तता असावी.
- 4) अनुत्पादक मालमत्तेविषयीचे निकष निश्चित करण्यात आले अशा अनुत्पादक मालमत्तेचे (1) प्रमाणित मालमत्ता (2) दुय्यम प्रमाणित मालमत्ता (3) संशयास्पद मालमत्ता आणि (4) बुडीत मालमत्ता अशी वर्गवारी करावी.
- 5) मिळालेले व्याज फक्त प्रामी म्हणून समजण्यात यावे व बुडीत कर्जाबाबद तरतूद करण्यात यावी. 6) कर्जवसुलीसाठी विशेष न्यायाधिकरणे स्थापन करावीत. या शिफारशीनुसार भारत सरकारने कर्जवसुली कायदा 1993 मध्ये संमत केला.
- 7) बँकांचे (1) आंतरराष्ट्रीय स्तर (2) सार्वजनिक स्तर (3) क्षेत्रीय बँका आणि (4) ग्रामीण बँका या चार स्तरावर पुनः संघटन करावे.

8) भविष्यात बँकांचे राष्ट्रीयीकरण करण्यात येणार नाही असे सरकारने जाहीर करावे व सार्वजनिक बँका आणि खाजगी बँका यांना एकसमान वागणूक द्यावी.

वरील शिफारशी तीन वर्षात टप्पाटप्प्याने अंमलात आणावयाच्या होत्या. सार्वजनिक क्षेत्राच्या प्रभावाखाली बँक व्यवसाय आणि त्यांची गुणात्मक घसरण थांबविण्याच्या उद्देशाने तसेच आर्थिक सुधारणांना गतिशीलता प्राप्त करून देण्याच्या उद्देशाने बँकांविषयक सुधारणा राबविण्याचा प्रयत्न करण्यात आला. आर्थिक सुधारणा कार्यक्रमाचा दुसरा टप्पा म्हणून बँकांविषयक सुधारणा कार्यक्रमाला अधिक गतिशील करण्याच्या उद्देशाने भारत सरकारच्या वित्त मंत्रालयामार्फत एम. नरसिंहम यांच्या अध्यक्षतेखाली दुसरी समिती नेमण्यात आली आणि या समितीने सक्षम बँकिंग प्रणालीची गरज, भांडवल रचना, व्याजदर रचना, अनुत्पादक मालमतेचे व्यवस्थापन, बँक व्यवसाय क्षेत्राचे पर्यवेक्षण व विश्वासाहता आणि कार्यपद्धतीत सुधारणा याबाबतीत शिफारशी केल्या.

बँकिंग क्षेत्राची फलश्रुति -

बँकिंग व्यवहारात सरकारी हस्तक्षेप आणि भारतीय रिझर्व्ह बँकेचे मार्गदर्शनात्मक आदेश कमी व्हावेत आणि खुल्या अर्थव्यवस्थेत आणि स्पर्धात्मक वातावरणात बँकांनी यापुढे काम करावे, असे नरसिंहम समितीचे मत होते. अर्थव्यवस्थेच्या सततवाहिन्या असणाऱ्या बँकिंग उद्योगावर 1991 नंतरच्या धोरणाने दूरगामी परिणाम झाले व बँकिंगचा चेहरा-मोहराच बदलला. बँकांमध्ये तीव्र प्रतिस्पर्धा निर्माण झाली. भारतीय रिझर्व्ह बँकेने अधिकाधिक स्वायत्तता देण्याचे धोरण स्वीकारले. आंतरराष्ट्रीय पातळीवरील मानदंडांचा केल्यामुळे उत्पन्न-निश्चिती, अनुत्पादक कर्जावरील तरतुदी, हिशेब पद्धती, भांडवल व स्वनिधी यांची पर्याप्तता तसेच सरकारी गुंतवणुकीचे वर्गीकरण व त्यावरील घसाऱ्याच्या तरतुदी याबाबतचे कठोर निकष अस्तित्वात आले. त्यामुळे बँकांची हिशेब पत्रके अधिकाधिक पारदर्शक झाली. भांडवलपूर्तिमध्ये चांगली सुधारणा झाली. स्पर्धेमुळे बँकांची मालमत्ता व देयता रचनेत गुणात्मक फरक पडला.

सार्वजनिक क्षेत्रातील बँकांतर्गत 19: राष्ट्रीयीकृत बँका, भारतीय स्टेट बँक व तिच्याशीसलग्न सात बँक अशा 27 बँकांचा समावेश होतो. याशिवाय भारतीय औद्योगिक विकास बँक मर्यादित या बँकेचा समावेश सार्वजनिक क्षेत्रातील बँकांतर्गत होतो. भारतातल्या बँकिंग व्यवसायात राष्ट्रीयीकृत बँकांचे निर्विवाद वर्चस्व आढळते. त्यातही स्टेट बँक समूहाला मानाचे स्थान आहे.

बँकिंग क्षेत्रात खाजगी बँकेचा सहभाग -

1993 पासून भारतीय रिझर्व्ह बँकेने खाजगी क्षेत्रात नवीन बँका स्थापन करण्यास परवानगी दिली आहे. या खाजगी बँकांना भारतीय रिझर्व्ह बँकिंग अधिनियमन कायदा लागू करण्यात आला. नरसिंहम समितीने सुचविलेले सर्व नियम यांनाही लागू आहेत. इतर बँकांप्रमाणे शाखा उघडण्याची परवानगी आहे

भारतीय बँकांचा विस्तार ब्रिटिशकालीन वसाहतवादी धोरणाद्वारे भारतात परकीय बँका स्थापन होण्यास सुरुवात झाली. 1840 मध्ये 'दि बँक ऑफ आशिया' ही परकीय बँक भारतात स्थापन झाली. 1842 मध्ये ओरिएंटल बँकिंग कॉर्पोरेशन ही पहिली अँग्लो-इंडियन व्यापारी बँक होय. 1870 पर्यंत भारतात एकूण तीन परकीय बँका होत्या व त्यांच्याकडे 5.2 दशलक्ष रुपये इतक्या ठेवी होत्या. 1940 पर्यंत भारतात 20 परकीय बँका स्थापन झाल्या व त्यांच्याकडे 853.3 कोटी रुपयांच्या ठेवी होत्या. मात्र 1947 पर्यंत ही संख्या 15 तर 1968 मध्ये 13 पर्यंत कमी झाली. 1969 मध्ये 14 मोठ्या बँकांचे राष्ट्रीयीकरण करण्यात आले. या बँकांचा नागरी भागाबरोबरच ग्रामीण भागात शाखा विस्तार होऊ लागला. त्यावेळेस परकीय बँकादेखील अधिकाधिक कर्जपुरवठा करू लागल्या. आर्थिक सुधारणांपूर्वी परकीय बँकांच्या प्रवेशावर निर्बंध होते.

बँकिंग क्षेत्राचा विस्तार-

सन 1969 मध्ये व्यापारी बँकांचे राष्ट्रीयीकरण झाल्यावर या बँकांनी शाखाविस्ताराचे महत्त्वपूर्ण कार्य केले. त्यांनी ग्रामीण क्षेत्रात शाखा उघडण्यावर भर दिला. आर्थिक उदारीकरणाच्या काळात मात्र ग्रामीण शाखांची संख्या घटत गेली तर शहरी आणि महानगरातील शाखांची संख्या मात्र वाढली. ग्रामीण भागात शाखाविस्तार होण्याऐवजी शाखांची कमी होत गेली आहे. तर अर्धनागरी, नागरी, महानगरीय भागात शाखांची संख्या वाढत आहे. या विभागात शाखांची संख्या वाढत असली तरी शाखा विस्तार वृद्धीचा दर मंदावलेला दिसतो. परकीय बँकांच्या 250 शाखांपैकी 91% शाखा महानगरीय शहरात कार्यरत आहेत. तर सार्वजनिक क्षेत्रातील 47,843 शाखांपैकी 41% शाखा ग्रामीण भागात कार्यरत आहेत.

बैंकिंग क्षेत्रातील आधुनिकीकरण -

1991 मध्ये भारताने स्वीकारलेल्या आर्थिक धोरणांमुळे वित्तबाजारात खाजगी आणि विदेशी बँकांना प्रवेश मिळू लागला. संपूर्णपणे संगणकाचा वापर करणे त्यांच्यासाठी सहज साध्य होते. खाजगी क्षेत्रातील नवीन बँका, विदेशी बँका तसेच काही जुन्या खाजगी बँका एकत्रितपणे संपूर्ण गामा बँकिंग प्रणाली उभारण्यासाठी ज्या प्रकारचे प्रयत्न सुरू केले आहेत तसेच प्रयत्न आता राष्ट्रीयीकृत बँकांनी सुरू केले आहेत. नवीन खाजगी बँका व परकीय बँकांच्या शाखा संपूर्णतः संगणकीकृत आहेत.

ए.टी.एम. चा प्रवेश -

मोबाइल फोन आणि इंटरनेटच्या प्रसारामुळे ग्राहकांच्या सोयीनुरूप बँकिंग सेवा देण्यासाठी तसेच, ऋणको पत्र व धनको पत्र यांसारख्या प्लॅस्टिक स्वरूपातील पैशांचे व्यवहार वाढत असल्याने वाढत्या संख्येने स्वयंचलीत गणक यंत्र सेवा केंद्रे निर्माण होत आहेत. स्वयंचलीत गणक यंत्र ही बँकांची अत्याधुनिक सेवा आहे. नवीन खाजगी व परकीय बँकांची स्वयंचलीत गणक यंत्राची संख्या शाखांच्या मानाने जास्त आहे. त्यातुलनेत सार्वजनिक बँका व जुन्या खाजगी बँकांमध्ये स्वयंचलीत गणक यंत्राची संख्या कमी आहे.

नागरी सहकारी बँका

नागरी सहकारी बँका ह्या सहकारी चळवळीचा मुख्य भाग आहेत. नागरी सहकारी बँकिंग चळवळीच्या दृष्टीने 1993 हे वर्ष महत्त्वपूर्ण वर्ष समजले जाते. कारण भारतातील एकूण बँकिंग प्रणाली बाबत नरसिंहम समितीच्या शिफारशीची अंमलबजावणी होत असतानाच, भारतीय रिझर्व बँकेने 1991 मध्ये सतीश मराठे यांच्या अध्यक्षतेखाली नागरी सहकारी बँकांच्या अभ्यासासाठी समिती नेमली होती आणि या समितीने नवीन नागरी सहकारी बँकांची स्थापना कार्यक्षेत्र, कार्यपद्धती संघटन याबाबतीत महत्त्वपूर्ण शिफारशी केल्या आणि या शिफारशीची अंमलबजावणी मे 1993 पासून करण्यात आली. याचा परिणाम म्हणजे नागरी सहकारी बँकांच्या शाखांच्या संख्येत वाढ झाल्याचे दिसून येते. या समितीने केलेल्या शिफारशींमुळे नागरी सहकारी बँकांच्या व्यवहारा पारदर्शकता आली. नागरी सहकारी बँकांवर भारतीय रिझर्व्ह बँकेचे नियंत्रण वाढू लागले. आर्थिक सुधारणा कार्यक्रमांमुळे सहकारी बँका, सार्वजनिक बँका, खाजगी बँका व विदेशी बँकांमध्ये तीव्र स्पर्धा सुरू आहे. स्पर्धात्मक व्याजदर व कागदपत्रांची पूर्तता यामुळे कर्जदारांनी नागरी सहकारी बँकांकडे पाठ फिरविली आहे. सार्वजनिक बँका, खाजगी बँका व परकीय बँका यांच्या तुलनेने नागरी सहकारी बँकांकडील थकीत कर्जाचे प्रमाण खूप मोठे आहे. एकीकडे नागरी सहकारी बँकांची संख्यात्मक व गुणात्मक प्रगती होत असतानाच दुसरीकडे आर्थिकदृष्ट्या दुर्बल बँकांची संख्या वाढत गेली. गेल्या काही वर्षांत अनेक आजारी बँकांचे विलीनीकरण झाले. आजही अनेक नागरी सहकारी बँकांवर प्रशासकांची नेमणूक झालेली आहे. यामुळे नवीन ग्राहक मिळण्यापेक्षा आहेत ते ग्राहक टिकविणे नागरी बँकांना आवश्यक झाले आहे

सारांश

सध्याच्या आर्थिक उदारीकरणाच्या युगात बँकिंग क्षेत्र सक्षम असणे ही महत्त्वाची बाब आहे. उदारीकरण धोरणामुळे नवीन खाजगी भारतीय बँकांचा व परकीय बँकांचा उदय झाला आहे. नवीन बँका येण्यासाठी प्रयत्न सुरू आहेत. या बँका स्पर्धा करीत आहेत. पत्रपत्र, स्मार्ट कार्ड्स, टेलिबँकिंग, वे बँकिंग, होम बँकिंग, ए.टी.एम. बँकिंग अशा तंत्रज्ञानावर आधारित अत्याधुनिक ग्राहकाभिमुख सेवा उपलब्ध करून देत आहेत. ग्राहकांच्या गरजांनुसार त्यांच्या सेवा सुविधामध्ये बदल करीत आहेत. नवीन ग्राहक मिळविणे, आहेत ते टिकविणे व त्यांना जास्तीत जास्त सेवा-सुविधा स्वस्त दर पुरविणे याबाबतीत स्पर्धा निर्माण झाली आहे. स्पर्धेतूनच व्यवसायवृद्धी, व्यवसायवृद्धीतून नफा क्षमता आणि नफा क्षमतेतून अस्तित्व टिकविणे क्रमप्राप्त झाले आहे. अनियंत्रित व्याजदर, कर्जावरील व्याज आकारणीची सुधारित पद्धत, अनुत्पादक मालमत्ता व त्यासाठी तरतूद या मूलभूत बदलांमुळे बँकांच्या लाभप्रदतेवर परिणाम झाला आहे. उदारीकरणाच्या प्रक्रियेमध्ये मत्केदारीचे बँकिंग संपून स्पर्धेचे युग निर्माण झाले आहे. अशा परिस्थितीत जी बँक पूर्णतः सक्षम असेल तीच तरून जाईल अन्यथा त्यांचे अस्तित्व धोक्यात येईल.

संदर्भसूची-

1. कानेटकर मेघा : भारतीय बँकिंग प्रणाली. श्री. साईनाथ प्रकाशन, नागपूर-2015
2. बोधनकर सुधीर : भारती बँकिंग प्रणाली, साईनाथ प्रकाशन, नागपूर-2010
3. रिझर्व बँक ऑफ इंडिया अहवाल <http://m.obi.org.in>
4. रसाळ व इतर (2005), 'भारतीय बँक व्यव प्रणाली', सक्सेस पब्लिकेशन, पुणे.

Challenges and Options in Indian Agriculture Sectors



International Journal for Multidisciplinary Research

International Conference on Multidisciplinary Research & Studies 2023

E-ISSN: 2582-2160 • Website: www.ijfmr.com • Email: editor@ijfmr.com



भारतीय कृषि क्षेत्रातील आव्हाने आणि पर्याय

¹प्रा.डॉ. डी.के.शृंगारे, ²प्रा.जे.डी.सांगोळे

^{1,2}अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख

¹आदर्श महाविद्यालय, धामाणगाव रेल्वे

²एम.व्ही.डी.महा.अमरावती

कृषि हा भारतीय अर्थव्यवस्थेचा आधार आहे देशाचा आर्थिक विकास प्रामुख्याने कृषि विकासावर अवलंबून आहे. कृषिचा विकास झाल्यास इतर सर्व क्षेत्राचा विकास साधला जातो हे आता सर्वमान्य झाले असून त्यावर उपाय शोधण्याचे काम राज्य व केंद्र सरकारच्या पातळीवर गतीमान झाल्याचे दिसते. मागील काही वर्षांपासून भारतातील काही राज्यात अनेक शेतकऱ्यांनी आत्महत्या केल्याचे प्रसिद्ध आहे. या आत्महत्या प्रामुख्याने महाराष्ट्र आंध्रप्रदेश कर्नाटक केरळ व आसाम राज्यात झालेल्या आहेत. प्रचंड कर्जबाजारीपणा हे या आत्महत्या होण्यामागील मुख्य कारण असल्याचे अनेक अभ्यासावरून स्पष्ट झाले आहे. आत्महत्येस इतरही काही कारणे आहेत हे देखील मान्य करावयास हवे. विदर्भात आणि मराठवाड्यातसुद्धा आत्महत्येचे प्रमाण प्रचंड असून त्याची चर्चा आता आंतरराष्ट्रीय पातळीवर होऊ लागली आहे व ही एक दुदैवाची गोष्ट होय. अलिकडच्या दोन-तीन वर्षात पश्चिम महाराष्ट्रासारख्या प्रगत भागातसुद्धा आत्महत्येचे लोण पसरले आहे. यावरून भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था अतिशय दुरावस्थेत सापडली आहे यात शंका नाही. सुप्रसिद्ध कृषिशाल्वज स्वामीनाथन यांनी भारतीय कृषि व्यवस्थेत काहीतरी भयंकर चूक होते आहे व जर कृषि क्षेत्रात चूक होत असेल तर इतर कोणत्याही क्षेत्राचे भले होऊ शकणार नाही" असे म्हटले आहे.

या शोधनिबंधात भारतीय कृषि क्षेत्राची सद्यस्थिती आणि कृषि क्षेत्रासमोरील आव्हाने निर्माण होण्याकरिता कोणते घटक कारणीभूत असून कृषि क्षेत्राची स्थिती सुधारण्याच्या दृष्टिने पर्याय शोधण्याचा प्रयत्न व सरकारी धोरणांची चर्चा केली आहे.

कृषि क्षेत्रातील सद्यस्थिती व आव्हाने -

भारताच्या राष्ट्रीय उत्पन्नात सन 1950 साली कृषि क्षेत्राचा वाटा साधारण 50 टक्के असे. परंतु नंतरच्या काळात औद्योगिक व सेवा क्षेत्राच्या प्रगतीमुळे कृषि क्षेत्राचा वाटा आता केवळ 22 टक्के पर्यंत घटला आहे. महाराष्ट्रातसुद्धा राज्य उत्पन्नात कृषि क्षेत्राचा वारा सन 1960-61 साली 31 टक्के होता. तो सन 2005-06 या वर्षी 14 टक्के पर्यंत घसरला आहे. हा बदल अर्थशास्त्रीय सिद्धांतास अनुसरून असून ते आर्थिक प्रगतीचे लक्षण मानले जाते. परंतु कृषि क्षेत्राचा वाटा कमी होत असताना, कृषि वरील रोजगार व लोकसंख्येचा भार कमी कमी होत जाणे वरील सिद्धांतात अपेक्षित आहे. हे भारतात होऊ शकले नाही. भारतीय पातळीवर कृषिचा वाटा 22 टक्के पर्यंत घटला असून त्यावर 68 टक्के लोकसंख्या उपजिविकेसाठी अवलंबून आहे. महाराष्ट्रात कृषिचा वाटा 14 टक्के असून त्यावर 58 टक्के लोकसंख्या अवलंबून आहे. ग्रामीण भागातील दारिद्र्याचे व घटत्या दरडोई उत्पन्नाचे हे व्यस्त प्रमाण एक प्रमुख कारण आहे. यावर फक्त एकच उपाय आहे तो म्हणजे, ग्रामीण भागातील शेतीवर अवलंबून असणाऱ्या लोकसंख्येचे प्रमाण सातत्याने कमी करून अशा अतिरिक्त लोकसंख्येस, बिगरकृषि उद्योगात व सेवा क्षेत्रात सामावून घेणे. हे काम दीर्घकालीन व प्रचंड गुंतवणुकीचे असले तरी कायमस्वरूपी ठरू शकेल.

मुक्त अर्थव्यवस्थेचे परिणाम -

सन 1991 साली भारत सरकारने वया आर्थिक धोरणाचा स्वीकार करून मागील 31वर्षात अर्थव्यवस्थेत अनेक प्रकारच्या आर्थिक सुधारणा अंमलात आणल्या. भारतीय अर्थव्यवस्था, जी पूर्वी बंदीस्त होती, ती खुली करण्यात आली. या सुधारणांचा एक चांगला परिणाम म्हणजे भारताचा आर्थिक विकास दर जो पूर्वी 3.5 टक्के असे तो हळूहळू 6 टक्के तर आता 9.4 टक्के पर्यंत वाढला. 11व्या योजनेत तो 8.5 टक्के निश्चित करण्यात आला असून कृषिक्षेत्रासाठी तो 4 टक्के ठरविण्यात आला आहे. हा 4 टक्के दर साध्य करणे कितपत शक्य आहे या बद्दल शंका व्यक्त केली जात आहे. भारतीय अर्थव्यवस्था सन 1991 च्या धोरणामुळे व सन 1995 च्या जागतिक व्यापार संघटनेच्या स्थापनेनंतर,

आंतरराष्ट्रीय व्यापारास खुली झाली. याचा पहिला फटका भारतीय कृषिवर झाला. आंतरराष्ट्रीय बाजारात साखर, कापूस इत्यादी कृषि मालाच्या किंमती घसरल्या व त्याचा परिणाम देशांतर्गत कृषि मालाच्या किंमतीवर झाला. यामुळे सन 1997-1998 नंतरच्या काळात कृषिक्षेत्राच्या व्यापार शर्ती शेतकऱ्यांच्या विरोधात गेल्या. त्यांच्या निव्वळ उत्पन्नात सातत्याने घट होत गेली. अनेक शेतकऱ्यांना शेतीचा व्यवसाय तोट्याचा झाला. राष्ट्रीय नमुना पाहणी संघटनेने घेतलेल्या एका पाहणीनुसार, भारतातील 40 टक्के शेतकऱ्यांनी शेती व्यवसाय सोडून कोणतीही सरकारी नोकरी मिळावी असे म्हटले आहे. शेती संदर्भात गमावलेली विश्वासाहता शेतकऱ्यांना परत मिळवून देणे हे काम प्राथम्याने व्हावयास हवे.

सिंचन क्षेत्र -

सन 1991 ते 1997 या काळात सिंचन सोयीच्या वाढीचा दर वार्षिक 3.62 टक्के होता, परंतु सन 1997-98 नंतरच्या काळात तो केवळ 0.51 टक्के झाला. ही घट प्रामुख्याने सिंचन क्षेत्रावर सार्वजनिक गुंतवणूक कमी होत गेल्यामुळे झाली. कृषि क्षेत्राला विजेचा घटता वाटा हे कृषिचा वृद्धीदर कमी होण्याचे कारण होय. महाराष्ट्र ग्रामीण भागातील भारनियम 10 से 12 तासापर्यंत असून कृषिच्या वृद्धीदरावर विपरित परिणाम होणे आहे. कृषि निविष्टीच्या वाढत्या किंमती अनेक शेतकऱ्यांना खतांचा पुरेसा वापर करणे शक्य होत नाही. त्यामुळे लागवडीखालील जमिनीचे क्षेत्रही घटले आहे. कृषि क्षेत्रातील जोखीम व अस्थैर्य यामुळे कृषि क्षेत्राला अनेक नैसर्गिक आपत्तींना तोंड द्यावे लागते, उदा. कमी किंवा अति पाऊस, अनियमित पाऊस, दुष्काळी स्थिती, पिकांवरील रोग, नापिकी, गारपीट इत्यादी. तसेच बाजारातील किंमतीचे चढउतार, जादा पीक आल्यास किंमतीची घसरण उदा. कांदा, टोमॅटो इ. त्यामुळे कृषि व्यवसायात अस्थिरतेचे प्रमाण वाढले.

कृषिक्षेत्राला पत पुरवठा -

गोरवाला समितीने कृषिक्षेत्राला होणारा पुरवठा मुख्यतः सावकाराकडून होतो. हे स्पष्ट केले. या समितीच्या सूचनेनुसार नंतरच्या काळात अनेक चांगले उपाय योजण्यात आले. सहकारी संस्थांद्वारे अल्प व दीर्घ मुदतीचा पुरवठा मोठ्या प्रमाणावर वाढविण्यात आला. रिझर्व बँकेच्या नफ्यातून काही भाग अल्प मुदती निधि व दीर्घ मुदती निधी निर्माण करण्यात आला. सन 1969 मध्ये सरकारने 14 राष्ट्रीयकृत बँकांचे व नंतर आणखी 6 बँकांचे राष्ट्रीयीकरण करून या बँकांचा ग्रामीण भागात फार मोठा विस्तार केला. उदा. सन 1990-91 साली ग्रामीण भागातील बँकांची संख्या 35,134 किंवा एकूण बँक शाखांच्या 56.9 टक्के होती. सरकारने कृषि, लघुउद्योग व निर्यात क्षेत्रांना प्राधान्य क्षेत्र ठरवून या क्षेत्रांना एकूण बँक कर्जाच्या 40 टक्के कर्ज देणे बंधनकारक केले. त्यामुळे या कृषि क्षेत्राला होणारा कर्जपुरवठा मोठ्या प्रमाणावर वाढला. सन 1975 साली सरकारने, अल्प व सीमांत भूधारक शेतकरी, कारागीर व गरीब वर्गासाठी प्रादेशिक ग्रामीण बँकांची स्थापना केली. 2005-06 च्या आकडेवारी प्रमाणे सध्या भारतात 14494 ग्रामीण बँकांच्या शाखा कार्यरत आहेत. परंतु सन 1991 नंतरच्या काळात सरकारने वित्तीय व बँकींग क्षेत्रात अनेक सुधारणा केल्या, ज्याचा परिणाम कृषि क्षेत्राकडील पतपुरवठा कमी होण्यात झाला.

आर्थिक सुधारणा अंमलात आणल्यानंतर सन 1992-93 सालापासून या निधित योगदान देणे बंद केले असून आता रिझर्व बँकेचा सर्व नफा केंद्र सरकारकडे वर्ग केला जातो. भारतीय कृषि क्षेत्राला हा एक हानिकारक धक्काच म्हणावा लागेल. परंतु अशाप्रकारे 'राष्ट्रीय दीर्घ मुदती निधिस योगदान बंद करणे, रिझर्व्ह बँक कायदा 1934 कलम 48 (अ) प्रमाणे, बेकायदेशीर असल्याचे लक्षात आल्यानंतर, यातून मार्ग काढण्यासाठी रिझर्व्ह बँकेने सन 1993-94 पासून वरील निधिस दर वर्षी नाममात्र एक कोटी रु. देण्यास सुरुवात केली.

शेत मालाचा उत्पादन खर्च व आधार किंमती -

शेतकऱ्यांच्या आत्महत्येमागे त्यांना मिळणा-या असमाधानकारक किमान आधार किंमती हा एक महत्त्वाचा घटक म्हटला पाहिजे. तसेच किफायतशीर भाव म्हणजे काय ? याची चर्चा आवश्यक आहे. मागील काही वर्षांत केंद्रसरकारने किमान आधार किंमतीत सतत थोडी थोडी वाढ केली हे जरी खरे असले, तरी शेतीतील निविष्टीच्या किंमतीत (खते, बी-बियाणे, किटकनाशके, पाणी पट्टी इ.) त्यापेक्षा जास्त वाढ झाली आहे. त्यामुळे शेतकऱ्यांचे नक्त उत्पन्न (Net income) सातत्याने घटत गेले. काही शेतकऱ्यांचा तर उत्पादन खर्चही भरून निघू शकला नाही. कर्जबाजारीपणाचे हे एक प्रमुख कारण होय. दुसरी महत्त्वाची गोष्ट म्हणजे सरासरी उत्पादन खर्च दर कितलाला दर हेक्टरी उत्पादकतेवर अवलंबून असतो. दर हेक्टरी उत्पादकता जमिनीची प्रत, सिंचन सोयी, हवामान, पर्जन्य, खते व इतर निविष्टीच्या वापरावर अवलंबून असते. उदा. गव्हाचे दर हेक्टरी उत्पादन महाराष्ट्रात 1449 किलो तर भारतीय

पातळीवर ते 2553 किलो होते, तर पंजाब राज्यात ते सर्वाधिक म्हणजे 4090 किलो होते. साहजिकच दर क्विंटलचा सरासरी उत्पादन खर्च पंजाबमध्ये सर्वात कमी तर मराठवाड्यात तो सर्वाधिक असणार हे उघड आहे. म्हणूनच राज्य सरकारांनी केंद्राला सुचविलेल्या किमान आधारभूत किंमती व केंद्राने जाहीर केलेल्या आधारभूत किंमती यात फार मोठी तफावत आढळते. भारत हा जागतिक व्यापार संघटनेचा सन 1995 पासूनच एक संस्थापक सदस्य देश होय. त्यामुळे या संघटनेचे अनेक कर व कोटा विषयक अनेक नियम सर्वांनाच पाळावे लागतात. भारतीय शेतकऱ्यांना आता फक्त देशातच नव्हे तर आंतरराष्ट्रीय पातळीवर इतर देशांशी स्पर्धा करावी लागते. त्यामुळे कृषि क्षेत्राचे संरक्षण करणे ही सरकारची फार मोठी जबाबदारी होय. इतर देशात अशी स्थिती नाही. अमेरिका, इंग्लंड, फ्रान्स, जपान इत्यादी देशात फक्त 3 टक्के ते 5 टक्के लोक कृषिवर अवलंबून महाराष्ट्र आहेत. तरी हे देश त्यांच्या शेतकऱ्यांना प्रमाणावर अनुदान देत आहेत.

विकसनशील देश या धोरणाचा जागतिक व्यापार संघटनेत विरोध करित असले तरी त्यांना अजून फारसे यश आलेले नाही. अमेरिकन शेतकरी कोणत्या पिकापासून फायदा मिळेल, त्यापेक्षा सरकारी अनुदाने कोणत्या पिकाला आहेत त्याप्रमाणे लागवड करतो. अमेरिकन शेतकरी आंतरराष्ट्रीय बाजारात कापसाला भाव काय आहे याबद्दल कधीही विचार करित नाही कारण त्याला आधीच प्रचंड अनुदान मिळते. या सर्व प्रकारच्या अनुदानाचा इतर देशातील कापसाच्या भावावर मोठा परिणाम झाला आहे. भारतीय शेतकऱ्यांचे सातत्याने रक्षण करणे हाच त्यावर उपाय होय. कापसाला मिळणाऱ्या प्रचंड अनुदानामुळे जागतिक बाजारात कापसाची मोठी आवक वाढली असून गरीब देशातील शेतकऱ्यांना त्यांच्याशी स्पर्धा करणे अवघड आहे भारतातील कापूस उत्पादकांवर झालेला गंभीर परिणाम म्हणजे केंद्र सरकारने कापसाच्या आयातीवरील सीमा शुल्कात केलेली घट होय. सीमा शुल्क कमी केल्यामुळे ही आयात मोठ्या प्रमाणावर वाढली व देशांतर्गत कापसाच्या किंमती घटल्या. विकसनशील देश जोपर्यंत त्यांची शेतकऱ्यांची अनुदाने पूर्णपणे बंद करित नाही तोपर्यंत अमेरिकन कृषि मुळीच प्रवेश देऊ नये असे म्हटले आहे.

कृषि क्षेत्र सुधारण्याचे पर्याय -

शेतकऱ्यांचा शेतीव्यवसायावरील विश्वास उडत असल्याचे पूर्वी म्हटले आहे व एक चिंतेची बाब होय. आमच्या अभ्यासात सुद्धा 51 टक्के (बहुसंख्य छोट्या) शेतकऱ्यांनी कोणतीही सरकारी व इतर नोकरी मिळाल्यास, शेती सोडण्याची तयारी दाखविली आहे. त्यांचा विश्वास त्यांना परत मिळवून देणे गरजेचे आहे. सामाजिक संघटना, शेतकरी संघटना, कृषि विद्यापीठे यांनी हे काम करणे व्य आहे. शेतकऱ्यांना अल्पमुदती कर्जपुरवठा 6 टक्के दराने व पुरेसा होणे आवश्यक आहे. देश व महाराष्ट्र राज्य पातळीवर सीमाने अल्पभूधारकांची संख्या सर्वाधिक व प्रमाण 23 एवढे मोठे आहे. कृषिधोरणात त्यांचा विचार प्रथम विचार हवा. दुसरे, कौरडवाहू शेतीचे प्रमाण महाराष्ट्रात 84 टक्के एवढे आहे कारण सिंचनाचे प्रमाण केवळ 16 टक्के आहे. या दोन प्रकारच्या शेतकऱ्यांना शेतीपासून मिळणारे उत्पन्न त्यांच्या कुटुंबाच्या उपजीविकेस पुरेसे नाही. साहजिकच या कुटुंबांना जोड व्यवसायातून उत्पन्न प्राप्त करून देणे अगत्याचे आहे. केंद्र सरकारने वेळोवेळी अंदाजपत्रकात कृषि क्षेत्रास भरघोस मदत देण्याचे संकेत दिले आहेत. ही तरतूद शेतकरी केंद्रबिंदू समजून व्हावयास हवी. त्यासाठी काही पर्याय सुचविता येतील.

कृषि क्षेत्रातील सुधारणात्मक पर्याय -

1. दुग्ध व्यवसाय हा शेतीला अगदी जवळचा पर्याय जोड धंदा म्हणून उत्तम आहे. पश्चिम महाराष्ट्राने सहकारी व खाजगी दुग्ध व्यवसायात नेत्रदीपक प्रगती केली आहे. मागील काही आकडेवारी प्रमाणे, महाराष्ट्रात प्रतिदिन गाईच्या दुधाचे संकलन वाढत असल्याचे दिसून येत आहे. यावरून विदर्भ व मराठवाड्यात दुग्धव्यवसाय एक जोडधंदा म्हणून विकसित करण्यास फार मठा वाव आहे हे स्पष्ट होते. नगदी उत्पन्न मिळण्याचे ते एक उत्तम साधन होय.
2. कुक्कुटपालन, रेशीम उद्योग, शेळी, मेंढीपालन, मत्स्य व्यवसाय हे जोडधंदे शेतकऱ्यांना जादा उत्पन्न मिळवून देणारे व्यवसाय होत. उदा. उस्मानाबाद जिल्ह्यातील शेळीचे मांस, उच्च दर्जाचे असते. तर रेशीम उद्योग सर्वत्र सुरू करता येतो. या संदर्भात प्रशिक्षणाची सोय आवश्यक आहे. शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या रोखण्यासाठी शेती पूरक व्यवसाय हा योग्य पर्याय ठरू शकतो.
3. सेंद्रीय शेती, शेतमालाच्या पडत्या किंमती व कृषि निविष्टीच्या वाढत्या खर्चामुळे शेतकऱ्यांचे नक्त उत्पन्न सातत्याने घटले आहे. यातून मार्ग काढण्यासाठी सेंद्रीय शेतीचा उपाय सुचविला जातो. ज्यामुळे लागवडीचा खर्च बराच कमी होईल. सेंद्रीय शेतीत दर हेक्टरी उत्पादकता थोडी कमी असली तरी मानवी आरोग्याच्या दृष्टिने सेंद्रीय उत्पादने



क्षेत्रातील आर्थिक पायाभूत सोयींची गुंतवणूक उदा.उत्तम रस्ते, टेलिफोन, सिंचन सोयी, वखारगृहे, शीतगृहे, बाजारा चे आवार अशा सोयी शासनाने कराव्यात त्यामुळे अनेक शेतमाल प्रक्रिया उदोग उदा. कापसावर आधारित जिनिंग, प्रेसिंग, सूत गिरण्या, साखर कारखाने, तेल गिरण्या, दालमिल्स, भात गिरण्या, फळ उत्पादनावर आधारित उद्योग, दुग्ध व्यवसाय, वगैरे, मूल्यवृद्धिमुळे रोजगाराच्या फार मोठ्या संधि निर्माण होतील. कृषि क्षेत्राची स्थिती सुधारण्यासाठी आता कृषिक्षेत्राचे शास्त्रशुद्ध पद्धतीने नियोजन करण्याची गरज आहे.

संदर्भसूची-

lanHkZ lwph &

- १) डॉ. वसुधा पुरोहित – खांदेवाले, कृषि अर्थशास्त्र, विद्यावृक्स पब्लिशर्स.
 - २) डॉ. जी. एन. झामरे – भारतीय अर्थव्यवस्थेचा विकास व पर्यावरणात्मक अर्थव्यवस्था, पिंपळपूर प्रकाशन नागपूर.
 - ३) डॉ. कवीमंडन विजय – कृषि व ग्रामीण अर्थशास्त्र, श्री. मंगेश प्रकाशन, नागपूर २०१२.
 - ४) जागतिकीकरण नवीन गुलामगिरी – अॅडमिरल विष्णु भागवत – समता प्रकाशन
- ५) $\frac{1}{2}$ tkxfirdhdj.k fojks/kkps tkxfirdhdj.k & 'kkarkjke t:jke x:M & izcks/ku izdk'ku T;krks-
- ६) डॉ. वि. वि. घाणेकर, जागतिकीकरण व भारतीय बँका, १९८७
 - ७) अर्थसंवाद-मार्च २००६, खंड ३१ अंक ४.
 - ८) Economic Survey of Govt. of Maharashtra.
 - ९) Economic Survey of Govt of India, New Delhi.

गोषवारा [Abstract]

भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था अतिशय दुरावस्थेत सापडली आहे यात शंका नाही. मागील काही वर्षांपासून भारतातील काही राज्यात अनेक शेतकऱ्यांनी आत्महत्या केल्याचे प्रसिद्ध आहे. या आत्महत्या प्रामुख्याने महाराष्ट्र आंध्रप्रदेश कर्नाटक केरळ व पंजाबसारख्या राज्यात झालेल्या आहेत. प्रचंड कर्जबाजारीपणा हे या आत्महत्या होण्यामागील मुख्य कारण असल्याचे अनेक अभ्यासावरून स्पष्ट झाले आहे. कृषिचा विकास झाल्यास इतर सर्व क्षेत्राचा विकास साधला जातो हे आता सर्वमान्य झाले असून त्यावर उपाय शोधण्याचे काम राज्य व केंद्र सरकारच्या पातळीवर गतीमान झाल्याचे दिसते. अलिकडेच महाराष्ट्र शासनाने तेराव्या व्या पंचवार्षिक योजना काळात, महाराष्ट्रातील प्रत्येक जिल्ह्याचे कृषि नियोजन करण्याचे ठरविले, ही एक अभिनंदनीय बाब मानली पाहिजे. या नियोजनात एक म्हणजे योजनेत कृषि व कृषिसंबंधित आर्थिक विकास दर साध्य करणे व कृषि क्षेत्रावरील लोकसंख्या व रोजगाराचा भार कमी करणे आवश्यक आहे. शासनाने या क्षेत्रात नियंत्रकाची भूमिका न घेता केवळ प्रोत्साहकाची भूमिका घ्यावी. सुप्रसिद्ध कृषिशास्त्रज्ञ स्वामीनाथन यांनी भारतीय कृषि व्यवस्थेत काहीतरी भयंकर चूक होते आहे व जर कृषि क्षेत्रात चूक होत असेल तर इतर कोणत्याहि क्षेत्राचे भले होऊ शकणार नाही" असे म्हटले आहे.

या शोधनिबंधात भारतीय कृषि क्षेत्राची सद्यस्थिती आणि कृषि क्षेत्रासमोरील आव्हाने निर्माण होण्याकरिता कोणते घटक कारणीभूत असून कृषि क्षेत्राची स्थिती सुधारण्याच्या दृष्टिने पर्याय शोधण्याचा प्रयत्न व सरकारी धोरणांची चर्चा केली आहे.

Balsahitya Vastav aani Apeksha -Dr.M.N.Nandurkar

जनसामान्यांच्या साहित्य * संस्कृती * कलाभिरुची संवर्धनास वाहिलेली एकमात्र मराठी मासिक पत्रिका
रजिस्ट्रार ऑफ न्यूजपेपर्स फॉर इंडिया नवी दिल्ली र.नं. ४३६५८/८४
पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं. ए.एम.टी./आर.एन.पी./ १३६/२०२१-२३
AKSHAR VAIDARBHI- ISSN 0976-0296

अक्षरवैदर्भी

वर्ष-एकोणचाळीस : अंक-पाच

श्रावण/भाद्रपद शके १९४४

ऑगस्ट २०२२

■ संस्थापक संपादक ■
(स्व.) सुदाम सावरकर

■ कार्यकारी संपादक ■
डॉ. सुभाष सावरकर

फो.-०७२१-२९९०९४७, मो.९८६०४५१०७५

Email ID- subhashsudam@gmail.com

■ संपादन साहाय्य ■

डॉ.नीळकंठ गोपाळ मेंढे ■ डॉ.निरंजनमाधव अंजनकर

प्रकाशक : जनसाहित्य साधना, जनसाहित्य भवन, गणेश कॉलनी, अमरावती-५.
(रजि.नं.महा./१६१६/अम.दि.२६-१०-१९८६)

मुद्रक : नभ प्रकाशन, श्याम नगर, काँग्रेसनगर रोड, अमरावती.

-वर्गणीचे दर-

व्यक्तीसाठी - वार्षिक-रु.६००/-, त्रैवार्षिक-रु.१६००/-, पंचवार्षिक-रु.२७००/-
संस्थेसाठी - वार्षिक-रु.६००/-, त्रैवार्षिक-रु.१७००/-, पंचवार्षिक-रु.२८००/-

-बँक तपशील-

बचत खाते क्र.51202200020989

खातेदार-डॉ.सुभाष दामोदर सावरकर

IFSC No. CNRB0001083

कॅनरा बँक, सिटी कोतवाली समोर, जयस्तंभ चौक, अमरावती

वर्गणी पाठविण्याचा पत्ता- संपादक, अक्षरवैदर्भी, 'जनसाहित्य', प्लॉट नं.५३, शिल्पकला कॉलनी,
शेगाव-रहाटगाव मार्ग, वि.म.वि. उप डाकघर, अमरावती-४
या अंकाचे देणगी मूल्य-रु.१००/-

बालसाहित्य : वास्तव आणि अपेक्षा

डॉ. मंदा माणिकराव नांदुरकर
मातोश्री विमलाबाई देशमुख महाविद्यालय, अमरावती

सारांश-

साहित्य हे मानवी संस्कृतीचा महत्त्वपूर्ण दस्तावेज असतो. साहित्यामुळे केवळ रंजनच होत नाही तर प्रबोधन होते व प्रेरणाही मिळते. साहित्यात विविध प्रकार, विविध प्रवाह असतात. असाच साहित्यातील एक अत्यंत महत्त्वाचा प्रवाह म्हणजे बालसाहित्य होय. बालसाहित्य हे बालकांचे व्यक्तिमत्व घडवण्यात महत्त्वाची भूमिका पार पाडते. बालसाहित्य हे राष्ट्र व समाज घडवणारे आहे. विविध भारतीय भाषांमधील साहित्यात मराठी साहित्याचे मानाचे स्थान आढळते. मराठी साहित्यातील बालसाहित्याचा प्रांत विविध अंगी व महत्त्वपूर्ण आहे. मराठी बालसाहित्यात बालकविता, बालकथा मोठ्या प्रमाणावर लिहिलेल्या दिसतात. त्यांपैकी बऱ्याच कथा, कविता सुमार दर्जाच्या असल्या तरी उत्कृष्ट दर्जाच्या बालकथा, बालकविता देखील विपुल प्रमाणात आढळतात. साने गुरुजी सारखे मुलांसाठी लिहिणारे बालसाहित्यकार दुसऱ्या कोणत्याच भारतीय भाषेत असल्याचे आढळत नाही. साने गुरुजी मराठी बालसाहित्याचे नव्हे तर भारतीय बालसाहित्याचे दीपस्तंभ आहेत. विद्यमान बालसाहित्याचे वास्तव तपासताना त्यात विविधता, विपुलता याबरोबर अनेक गुणात्मक वैशिष्ट्ये आढळतात. विविध वयोगटांतील बालकांच्या आवडीनिवडीचा व त्यांच्या मानसशास्त्राचा विचार करून साहित्यनिर्मिती व्हावी अशी अपेक्षा आहे. रंजन आणि मूल्यसंस्कार ही बालसाहित्याची वैशिष्ट्ये होत.

प्रस्तावना-

मानवी जीवनात बालपणीचा काळ अत्यंत महत्त्वाचा असतो 'बालपणीचा काळ सुखाचा' असे म्हटले जाते. बालपणीचा काळ अधिक सुखाचा करण्यात बालसाहित्याची भूमिका महत्त्वाची ठरते. रंजन आणि मूल्यसंस्कार ही बालसाहित्याची उद्दिष्टे आढळतात. व्यक्तिमत्वविकासात बालसाहित्याचे योगदान प्रभावी ठरताना दिसून

। अक्षरवैदर्भी । ऑगस्ट-२०२२ । ४९ ।

विचार न करता लेखन केले जाते. त्यामुळे ते बालसाहित्य तेवढे उपयुक्त ठरू शकत नाही. त्यामुळे या सर्व बाबींचा विचार करता बालसाहित्याची निर्मिती व्हायला हवी. बालसाहित्याने मुलांची क्रियाशीलता, सृजनशीलता वृद्धींगत करायला हवी व मुलांना अधिक सृजनशील, क्रियाशील, उपक्रमशील बनवणारे बालसाहित्य निर्माण व्हायला हवे. मुलांना निसर्ग खूप आवडतो व निसर्गचित्रण करणारे बालसाहित्यही आहे पण याबाबतीत अधिक चांगल्या लेखनाला वाव दिसून येतो. देश-विदेशातील नयनरम्य निसर्ग बालसाहित्यात यायला हवा. लिंगभेदाचे संस्कार आजुबाजूच्या वातावरणातून नकळतपणे मुलांच्या मनावर होत असतात. लिंगसमानतेचा संस्कार बालपणीच मुलांच्या मनावर बालसाहित्यातून व्हायला हवा असा जाणीवपूर्वक प्रयत्न होण्याची गरज आहे परंतु तसे होताना दिसत नाही. बालसाहित्यातून मुलांवर स्त्री-पुरुष समानतेचा विचार रुजवायला हवा. एकूणच मराठी साहित्यात विज्ञान-साहित्याचा अभाव आहे. आजचे युग हे विज्ञान-तंत्रज्ञानाचे युग आहे असे आपण म्हणतो पण त्याचे प्रतिबिंब आपल्या मराठी साहित्यात अधिक प्रमाणात दिसत नाही. मराठी साहित्यातील विज्ञान साहित्याचे दालन अत्यल्प आढळते. बालसाहित्यही त्याला अपवाद नाही. विज्ञान-तंत्रज्ञानाशी संबंधित बालसाहित्य अत्यल्प असल्याने सकस, सर्वकष, समृद्ध विज्ञान साहित्याची निर्मिती व्हायला हवी. बालविज्ञान कथा, बालविज्ञान कादंबरी, बालकविता, बाल नाटके असे विपुल प्रमाणात साहित्यनिर्मिती व्हायला हवी.

निष्कर्ष-

- * मराठी साहित्यात बालसाहित्य हे अतिशय महत्त्वपूर्ण दालन होय.
- * बालसाहित्य हे बालकांचे व्यक्तिमत्व घडवण्यात महत्त्वाची भूमिका पार पाडताना आढळते.
- * बाल साहित्य हे संस्कारक्षम साहित्य असून त्यातून मूल्यसंस्कार रुजवल्या जातात.
- * दर्जेदार बालसाहित्याची निर्मिती ही अधिक प्रमाणात व्हायला हवी. एकूणच बालसाहित्याचे वास्तव आणि अपेक्षांचा विचार करता, बालसाहित्य हे बालकांचे मूल्यसंवर्धन व संस्कार करणारे साहित्य या दृष्टीने महत्त्वाचे ठरते.



संस्कार हा कथा, कवितेच्या तुलनेत अधिक प्रभावी ठरू शकतो, परंतु बाल नाट्य स्पर्धेचा अपवाद वगळता अधिक प्रमाणात बालनाट्याचे सादरीकरण होताना दिसून येत नाही व ज्या प्रमाणात बालनाट्ये लिहिली जायला हवीत त्या प्रमाणात ती लिहिली जात नाही हे वास्तव लक्षात घेता येते.

बालनाट्य, बालकथा, बालकविता या वाङ्मय प्रकारांव्यतिरिक्त इतर काही वाङ्मय प्रकारांचा बालसाहित्य निर्मितीमध्ये विचार व्हायला हवा. बालसाहित्यामध्ये प्रवासवर्णने जवळपास आढळत नाहीत. अलीकडच्या काळात बाल कादंबरी लिहिली जाते परंतु त्याचेही प्रमाण अत्यल्पच आहे. कादंबरी दीर्घ असते पण मुलांना दीर्घ वाचनाचा कंटाळा येतो हे जरी बरोबर असले तरीही विविध प्रकरणांची रंजन व संस्कार करणारी कादंबरी विपुल प्रमाणात लिहिली जायला हवी. तशी ती लिहिली जाताना आढळत नाही, हे वास्तव लक्षात घेण्यासारखे आहे. बालसाहित्याच्या समीक्षेबाबतही चिंतन व्हायला हवे. समीक्षेचे निकष नीटपणे ठरवले जावे. तसा फारसा प्रयास मराठी बालसाहित्यात झालेला दिसून येत नाही. प्रौढांसाठीच्या साहित्य समीक्षेचे निकष बालसाहित्याला लावता येत नाहीत बालसाहित्याचे रंजन, प्रबोधन, मूल्य- संस्कार यांची क्षमता लक्षात घेऊन बालसाहित्याची समीक्षा व्हायला हवी तशी ती होताना दिसून येत नाही. बालसाहित्य समीक्षेचा विचार फार कमी प्रमाणात झालेला दिसून येतो. बालसाहित्याचे लेखन जसे महत्त्वाचे तसे त्याची पुस्तक निर्मिती महत्त्वाची ठरते. केवळ मुखपृष्ठच रंगीत नको, तर आत ही रंगीत छायाचित्रे, रंगीत छपाई असायला हवी, म्हणजे बालकांच्या आवडीचे ते ठरते. पुस्तकाची निर्मिती ही रंगीत, सुबक, मनमोहक, असायला हवी म्हणजे ती मुलांच्या विश्वातील ठरते. मराठी बालसाहित्यात चरित्रेही विपुल प्रमाणात आहेत ज्यातून रंजन, प्रबोधन उत्कृष्टपणे होताना दिसून येते. बालसाहित्याबाबतच्या अपेक्षांचा विचार करता सर्वात प्रथम जाणवते ते कथा, कादंबरी, नाटक आणि कविता. या वाङ्मयप्रकारांव्यतिरिक्त इतर वाङ्मयप्रकारांत विपुल व सकस लेखन व्हायला हवे. मुलांसाठी लिहिलेली प्रवास वर्णने, मुलांचे रंजन व त्यांच्यावर संस्कार करणारी आत्मकथने मोठ्या प्रमाणात लिहिली जायला हवी. मराठी बालसाहित्यात मुलांसाठी प्रवासवर्णने यायला हवी. मुलांना प्रवास अधिक आवडतो, प्रवासातील गमती-जमती, मौज-मजा त्यांना आवडते. प्रत्यक्ष प्रवासाचा आनंद ज्या मुलांना घेता येत नाही, त्या मुलांना प्रवास वर्णनातून आनंद निश्चितच घेता येतो. बरेचदा बालकांच्या वयाचा, त्यांच्या आकलनशक्तीचा, त्यांच्या मनोवृत्तीचा-मानसशास्त्राचा

। अक्षरवैदर्भी । ऑगस्ट-२०२२ । ५१ ।

येत असून महापुरुषांच्या चरित्राचे अवलोकन केल्यास बालपणीच्या संस्कारांपासून त्यांचे व्यक्तिमत्व घडल्याचे आपल्या लक्षात येते. यावरून बालसाहित्याचे महत्त्व स्पष्ट होते.

उद्दिष्टे-

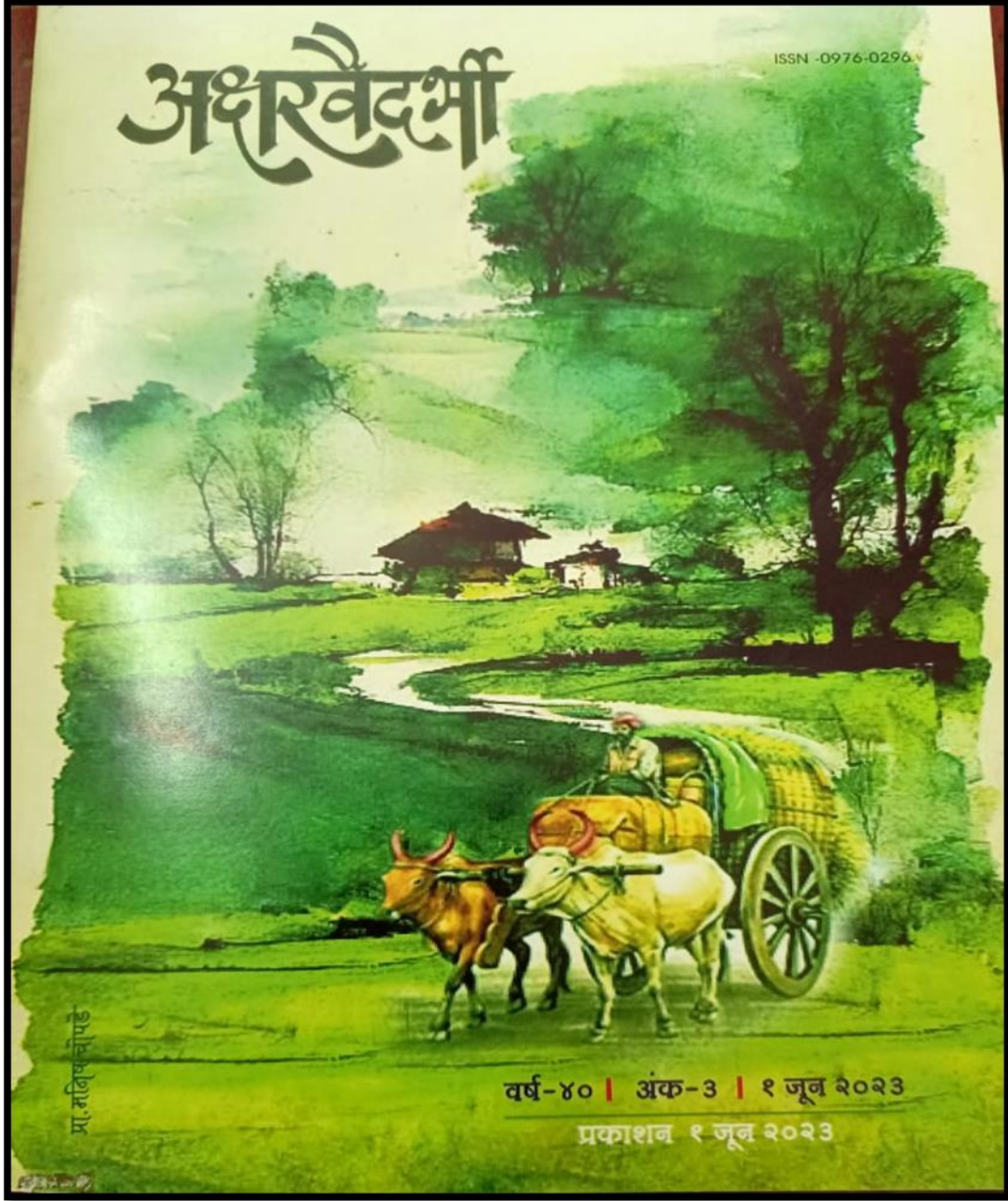
- * बालसाहित्य हे मूल्यसंस्कार करणारे साहित्य आहे.
- * बालसाहित्य हे मुलांचे रंजन व प्रबोधन करणारे साहित्य आहे.
- * बालसाहित्य हे राष्ट्र व समाज घडवणारे साहित्य आहे.

बालसाहित्य हे अतिशय महत्त्वपूर्ण साहित्य आहे. साधारण सहा ते सोळा या वयोगटातील मुलामुलींसाठी बालसाहित्य लिहिले जाते. हाच कालखंड बालकांच्या दृष्टीने संस्काराचा कालखंड असतो. आधुनिक बालसाहित्याची सुरुवात अलीकडच्या काळातील असली तरीही लीळाचरित्रातील चक्रधरांनी सांगितलेले अनेक दृष्टांत या बालकथा ठरू शकतात. उदाहरणार्थ, कावळ्याचे घर होते शेणाचे, चिमणीचे घर होते मेणाचे... इत्यादि.

यावरून बालसाहित्याची सुरुवात लीळाचरित्रापासून लक्षात घेता येते. मराठी बालसाहित्याचे स्वरूप तपासताना मराठीचे बालसाहित्य हे आशय-विषयाच्या दृष्टीने वैविध्यपूर्ण असल्याचे दिसून येते. मराठी बालसाहित्यात बालकविता मोठ्या प्रमाणात लिहिलेल्या आढळतात. मराठी बालकवितेमध्ये पशुपक्षी, निसर्ग, जंगल, जंगली प्राणी, आकाश, चंद्र-तारे, पृथ्वी, प्राण्यांच्या गमतीजमती, विविध फुले अशा आशयाची रेलचेल आढळते. अशा आशयांची अभिव्यक्ती येथे सुलभ भाषेत झालेली दिसून येते. मराठी बालकथेचा विचार करतानाही मराठी बालकथा विविध अंगी समृद्ध, संस्कारक्षम व रंजनप्रधान असलेल्या दिसून येतात. विविध लेखन विविध प्रकारचे असून अभिव्यक्तीचे वेगळेपण इत्यादि बाबतीत मराठी बालकथा समृद्ध आहेत. मुलांचे रंजन व प्रबोधन करणाऱ्या बालकथा विपुलतेने आढळतात. मूल्य संस्काराचे उद्दिष्ट या प्रकारात बऱ्यापैकी पार पडताना लक्षात घेता येते. मराठी बालकविता व बालकथेनंतर बाल नाटके लिहिली जातात. शासनाने बालनाट्य महोत्सव सुरू केल्यापासून बालनाट्य लेखनाला गती आलेली दिसून येते. बाल नाटकातूनही विविध विषय चांगल्या प्रकारे हाताळलेले दिसून येते. मराठी बालनाट्याचे स्वरूप समाधानकारक आहे असे म्हणता येणार नाही, तरीही बालकविता आणि कथा यांपेक्षा बालकांच्या दृष्टीने बालनाट्ये अधिक महत्त्वाची आढळतात. कारण बालनाट्य दृक्श्राव्य आहेत; त्यांतून होणारा

| अक्षरवैदर्भी | ऑगस्ट-२०२२ | ५० |

Absard Theator Aani Rangbhumi



‘मराठी रंगभूमी आणि अॅब्सर्ड थिएटर’

डॉ. मंदा माणिकराव नांदुरकर

मातोश्री विमलाबाई देशमुख महाविद्यालय, अमरावती. प्रमणभाष-१८५०६८४६०३

‘मराठी रंगभूमी आणि अॅब्सर्ड थिएटर’ हे डॉ. सतीश पावडे यांचे महत्त्वाचे पुस्तक आहे, डॉ. सतीश पावडे नाट्यलेखक, नाट्य दिग्दर्शक, नाट्य समीक्षक, नाट्यकर्मि म्हणून ख्यातकीर्त आहेत. पत्रकार, संपादक, लेखक म्हणूनही त्यांचा नावलौकिक आहे, डॉ. सतीश पावडे हे मराठी नाट्यवाङ्मय सृष्टीतील आजच्या घडीचे एक महत्त्वाचे नाव आहे.

अॅब्सर्ड विचारसरणीचा संबंध अस्तित्ववादाशी आहे. मानवी जीवन आणि हे विश्व अतार्किक, निर्हेतुक व निरर्थक आहे असा अस्तित्ववादाचा मूळ सिद्धांत आहे. या सिद्धांताची सुरुवात डार्विन पासून झाली आहे. प्रा. जोसेफ वुड, कर्क गार्द, सार्त्र यांनी हा विचार अधिक स्पष्ट केला. या तत्त्वज्ञानाबद्दल मतभिन्नताही आहे, या अस्तित्ववादी विचारधारेचा प्रभाव कथा, कविता, कादंबरी इत्यादि मराठी साहित्यावर होऊ लागला व तशी अस्तित्ववादी साहित्यनिर्मिती मराठीतही होऊ लागली. अस्तित्ववाद ही मूळ विदेशी कल्पना आहे, नाट्यवाङ्मय ही याला अपवाद ठरलेले नाही. कामू च्या अस्तित्ववादी विचारांची ओळख मराठी साहित्यविश्वाला झाली. माणसाच्या नैतिक जबाबदारीवर अस्तित्ववादाचा भर आहे. निरर्थक जगण्याचा उपदेश अस्तित्ववाद करित नाही. ही एक प्रभावी प्रवृत्ती असून चिंतनाची वेगळी दिशा आहे, संदर्भरहित मीपणाचे भान हे या विचारसरणीचे वैशिष्ट्य आहे. या अस्तित्ववादी विचार प्रणालीतून अॅब्सर्ड नाटकाचा उदय झाला.

मराठी रंगभूमीवरील १९३० पूर्वीची नाटके



। अक्षरवैदर्भी । जून २०२३ । ६१ ।

ही संस्कृत किंवा शेक्सपियरच्या नाट्यतंत्राचा अवलंब करणारी होती. मनोरंजन व लोकशिक्षण हे त्यांचे ध्येय होते. १९३३ नंतर कौटुंबिक व सामाजिक समस्यांना वाचा फोडणारी नाटके आलीत. १९५० नंतर इब्सेन मराठी रंगभूमीवर अधिराज्य गाजवू लागला तर बर्नार्ड शॉ मधून मधून डोकावू लागला. व्यक्तिस्वातंत्र्य आणि सामाजिक नीतिमूल्ये इब्सेनच्या नाट्यतंत्राने मराठी नाटकात रूढ केले, त्यानंतर चेकोव्हचा प्रभाव मराठी रंगभूमीवर दिसतो. अलिप्त व तटस्थ वृत्तीने जीवनाचे सत्य विशद करणे हे चेकोव्हच्या नाट्यतंत्राचे विशेष आहे. १९६० नंतर मानवी जीवनातील दैवदुर्विलास प्रतीकात्मक पण प्रत्ययकारी रीतीने अॅब्सर्ड नाटकाच्या रूपाने मराठी रंगभूमीवर आला.

मानवी जीवनाला अॅब्सर्ड हा शब्द आल्बेर कामू ने वापरला. मानवी जीवन दयनीय, शापित, एकाकी, कंटाळवाणे आहे. मरता येत नाही म्हणून जगत राहायचे, इतकेच. कामूने आपल्या या तत्त्वज्ञानाचा आविष्कार 'कॅलिगुला' या नाटकात केला, त्याचे समर्थ रूपांतर १९६१ मध्ये पुरुषोत्तम दारव्हेकर यांनी 'चंद्र नभीचा ढळला' या नाटकात केले, ही मराठीतील अॅब्सर्ड नाटकांची सुरुवात मानता येईल. त्यानंतर अॅब्सर्ड नाटकांनी मराठी नाट्यसृष्टीत बरीच प्रगती केली. मराठी रंगभूमी नावीन्यपूर्ण व समृद्ध आहे तशी ती परिवर्तनशीलहि आहे. वेगवेगळे प्रवाह तिने आत्मसात केले आहेत, परंतु याबाबत फारसे मौलिक लेखन मात्र झाले नाही.

'मराठी रंगभूमी आणि अॅब्सर्ड थिएटर' या ३२० पृष्ठांच्या ग्रंथात अकरा प्रकरणांमधून डॉ. सतीश पावडे यांनी या नाट्य प्रकाराबद्दल सविस्तर सखोल चर्चा व चिंतन मांडले आहे. मराठी रंगभूमीच्या नाट्यतंत्रात सातत्याने बदल होत गेले त्याचा आलेख या ग्रंथात आला आहे १९६० पासून मराठी रंगभूमीवर अॅब्सर्ड नाटकाचा प्रभाव जाणवू लागला व पुढच्या काळात तो वाढत गेला. १९६० ते १९९० या कालखंडातील मराठी रंगभूमीवरील नाटकांचा प्रभाव याचा अत्यंत साक्षेपी विचार या ग्रंथात आला आहे. मराठी रंगभूमीवर अॅब्सर्ड नाटके येत होती, प्रेक्षकांची त्याला पसंतीची पावतीही प्राप्त होत होती. मराठी रंगभूमी या नाटकांनी गजबजली परंतु या नाटकांची अभ्यासपूर्ण समीक्षा झाली नाही. डॉ. सतीश पावडे यांच्या प्रस्तुत पुस्तकाने ते कार्य यथार्थपणे केले आहे, या ग्रंथातून आपणास अॅब्सर्ड नाटकांचा मराठी रंगभूमीवरील व वैश्विक रंगभूमीवरील इतिहास तर कळतोच पण लेखक केवळ इतिहासाच्या नोंदी करित नाही तर आपली जी अभ्यासपूर्ण मते, निरीक्षणे नोंदवतात

। अक्षरवैदर्भी। जून २०२३। ६२।

निर्मिती झाली. दुसऱ्या महायुद्धापेक्षा भयावह व भीषण परिस्थिती आज कोरोनामुळे जगभर निर्माण झाली आहे. नव्या अॅब्सर्ड नाटकांसाठी व एकूणच नव्या वाङ्मयाकरिता ही पोषक परिस्थिती आहे. सुरुवातीला अॅब्सर्ड नाटकांच्या बाबत आशयापेक्षा आकृतिबंध प्रभावी ठरला, पण पुढे-पुढे आशयच आकृतिबंध ठरवीत गेला व नाटक अधिक प्रगल्भ झाले. सुरुवातीला अॅब्सर्ड तत्त्वज्ञान नकारात्मक, निराशावादी, निरर्थक आहे अशी मांडणी झाली, पण हे तत्त्वज्ञान निराशेचे तत्त्वज्ञान नाही हे लेखकाने सविस्तर मांडले आहे व उत्तम मांडणीद्वारे स्पष्ट केले आहे.



वारूळ

माझ्यात समुद्र नव्हता
मग कोणती गाज होती ती?...
मला असह्य करणारी-रात्री-बेरात्री?...

मी राहून राहून भूतकाळात शिरायला नको होतं
कां उलखनन करतोय मी
काळोखाच्या गुहेत पुरल्या गेलेल्या
चिंध्या चिंध्या होऊन गेलेल्या
माझ्या वास्तवाचं
खरं म्हणजे साऱ्या गोष्टी विसरायलाच हव्या होत्या
भूतकाळातल्या...

स्वप्न पाहणं तसं वाईट नाहीय
त्यातच आपले दिवस वाया गेलेले;
आता पांढऱ्या शुभ्र केसांवरून

आणि इकडे माझी पाखरे
अक्रोश करताहेत
माझ्या नावाने;
त्यांच्यासाठी मी सावलीही निर्माण केली नाहीय
म्हणून...

इथे तर माझ्या हातात
नियतीनेच दिलेय कंडलू याणि झांज
मी चाललोय आता रस्त्यारस्त्यावरून
फकिराचा शिक्षा भाळावर कोरून
देहावर हिरवी कफनी गुंडाळून...

तेव्हापासून
माझ्या मनावर;
अनासक्तीचे वारूळ

**Impact of Governance, Leadership & Management on Enhancement of
Quality Education & Institutional Grading**

Online ISSN : 2395-602X

Print ISSN : 2395-6011

www.ijrst.com



**Conference
Proceedings**

**National Multidisciplinary Conference
on**

**Emerging Trends, Opportunities and
Challenges In Higher Education**

Date : 28th January, 2023

Organized By

Janata Shikshan Prasarak Mandal's
Smt. Vatsalabai Naik Mahila Mahavidyalaya Pusad,
Department of Home Science and IQAC
NAAC RE-ACCREDITED -B GRADE

affiliated to

Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati, Maharashtra, India

VOLUME 10, ISSUE 7, JANUARY-FEBRUARY-2023

**INTERNATIONAL JOURNAL OF SCIENTIFIC
RESEARCH IN SCIENCE AND TECHNOLOGY**

PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL SCIENTIFIC RESEARCH JOURNAL

Scientific Journal Impact Factor : 8.014

Email : editor@ijrst.com Website : <http://ijrst.com>





Impact of Governance, Leadership and Management on Enhancement of Quality of Education and Institution Grading

Prof. Dr. C. Ramesh

Department of Physics, Marudheer Uthappa Ashram, Mahasarakshya, Karnataka, Affiliated to Sri
Sageebah Ashram University, Mysore, Maharashtra, India

ABSTRACT

Good governance is a clear competition in improving the standards of higher learning and NMC's guidelines. The better governance must have extra investment in the higher institutions, teaching learning environment, autonomy of institutions concerning academic matters, growing direct links between corporations and the funding allocated, providing the investment sources to improve research facilities, accurate infrastructure, research, teaching, mastering technique, these capabilities which leads to enhance the high quality and accreditation in higher training.

Good governance and management with the aim of making participative choice, making success a key to attain the vision, understanding and desires of the organization and collectively constructing the organization was a life. The formal and informal regulations in the institution to coordinate the instructional and administrative planning and implementation reflect the institutions efforts in achieving its vision.

Research associate with governance and leadership contributing to the success in schooling. This paper is look at to fill this hole. This paper argues that appropriate governance is a manner through which governance can be effectively applied inside the education, this is exemplified thru leadership, governance, management, and control to achieving higher standards and NMC's Guidelines.

Governance, management and control are key factors to improve mastering and teaching in higher education. The Governance, management and control have effect on teaching & learning, infrastructure, studies, exams and evaluation, finances in institution. The management, Governance, management and control has the capability to influence most and all approximately the institutional life.

Keywords: Governance, Leadership and Management, Higher Education, Teaching & Learning, Research and Extension, Infrastructure, NMC practices.

1. INTRODUCTION

Governance is "the process by distributing authority, power and influence to someone decisions among campus constituents." The Good Governance ensures an effective functioning and efficient governance at all levels to the satisfaction of stakeholders. The implementation of good governance shall lead to effective utilization of manpower, infrastructure and facilities available in the institute and thereby enhance the quality



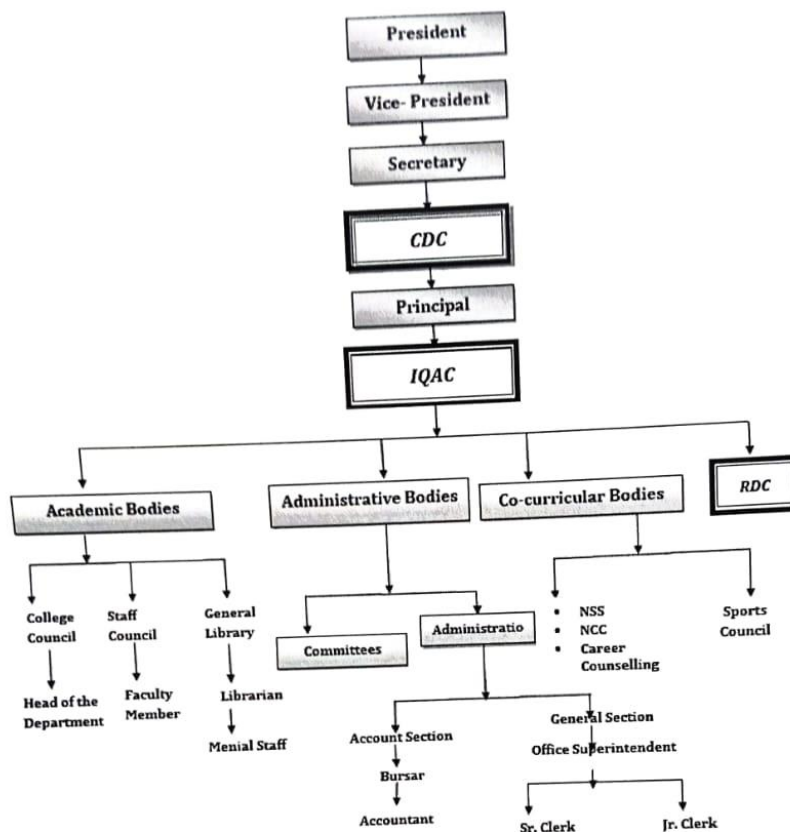
of education and gradation of institution. The good governance leads to transparency and accountability in the administration.

The expected benefits due to implementation of good governance, leadership & management may include:

- To strengthen the existing good practices
- To implement transparency at all levels of governance and administration o To follow integrity in appointments at all levels
- To establish fair and transparent processes in internal control
- To comply with rules and regulations
- To establish strong and capable financial processes and procedures relating to procurement, appropriate utilization of funds and audit.
- To involve all the stake holders at various levels as deemed fit with regard to guidelines of statutory bodies.
- To maintain registry of interests of members of governing body
- To achieve optimum utilization of infrastructure, resources for better output
- To meet the requirements of NAAC accreditations
- To enhance the quality of teaching-learning process
- To set up centers of excellence in research & development and enhancement of quality of research and consultancy.
- To set up and strengthen student support programs, training for enhancing Quality in placements and higher education.

In this paper, the important criterions on the basis of which NAAC Gradation can be improve with the help of good governance, Leadership and Management of the institution in higher education is explain here and methodologies of NAAC are explained here. Governance is concerned with structures and processes of decision-making to ensure improved performance and accountability of institutes. At the institutional level, governing bodies play a major role in providing guidance to institutional stakeholders to translate their vision into operational practice. The governing bodies help institutions set the targets, prioritize allocation and re-allocation of human and financial resources, put in place accountability procedures and ensure enhanced outcomes. The result of this, the NAAC gradation can be improved.

II. HIERARCHICAL MODEL OF GOVERNANCE, LEADERSHIP AND MANAGEMENT IN HIGHER EDUCATION



III. THE IMPORTANT QUALITY ENHANCEMENT IN INDIA CAN BE EXPLAINED AS BELOW

The University Grants Commission (UGC) with its statutory powers is expected to maintain quality in Indian higher education institutions. Section 12 of the UGC Act of 1956 requires UGC to be responsible for "The determination and maintenance of standards of teaching, examinations and research in universities". The Various committees and commissions on education over the years have emphasized directly or indirectly the need for improvement and recognition of quality in Indian higher education system. Consequently, the Programmed of Action (PoA) in 1986 stated, "As a part of its responsibility for the maintenance and promotion of standards of education, the UGC will, to begin with, take the initiative to establish an Accreditation and Assessment Council as an autonomous body". After eight years of continuous and serious deliberations, the

UGC established NAAC at Bangalore as a registered autonomous body on 16th September 1994 under the Societies Registration Act of 1860.

IV. INSTRUMENTATION AND METHODOLOGY FOR GRADATION

The Assessment and Accreditation is in three dimensions which are explained below:

1. On-Line Submission of a Letter
2. Preparation of Self Study Report" - The first and most important step in the process of assessment is the submission of the self-study report to NAAC.
3. Peer Team Visit: - The visit by the peer team gives the institution an opportunity to discuss and find ways of consolidating and improving the academic environment.

V. NAAC SUGGESTIONS FOR OVERALL DEVELOPMENT OF THE HIGHER EDUCATIONAL INSTITUTIONS

- 1) Laboratory facility needs to be enriched and expanded
- 2) College should have a well-equipped language lab, especially in view of the fact that every B.Ed. Trainee opts for one language.
- 3) The college needs to have hostels for boys' and girls' students.
- 4) As internship & practice of teaching are separately shown in the syllabus, internship needs to be streamlined & broad based.
- 5) The computer lab should be expanded, have more qualified Teachers; Faculty improvement program should be strengthened.

VI. ABILITY OF GOVERNANCE, LEADERSHIP AND MANAGEMENT TO INFLUENCE THE DIRECTION OF INSTITUTION FOR QUALITY IMPROVEMENT AND GRADATION

Good Governance, Leadership and Management, has the characteristics as 'action' and it relates with others directly influences the institution's culture. Good Governance, Leadership and Management have the ability to influence direction and keep momentum going. Good governance and leadership must involve in strategic planning. Governance, Leadership and Management have the power to direct staff according to institutional policies and rules to achieve outcomes. The leadership also direct their staff and must use insight into people's behavior and characteristics.

D) Impact of Governance, Leadership and management in Teaching and Learning:

Good Governance, Leadership and Management are needed at all levels of the organization (Marron & Cunniff, 2014). But Quinlan (2014, p. 32) asserts that 'good leadership of teaching (by explicitly including knowledge and evidence related to teaching and learning) improve for student learning'. Therefore, good governance and leadership, promote learning and teaching which improve the quality of education. That improves, alternately gradation of NAAC.

II) Impact of governance Leadership and management in infrastructure for improvement in gradation:

Private organizations participation in infrastructure development may enhance infrastructural facilities provision for higher institutions. So, It is the responsibility of higher education to create an environment that not only assures learning, but also pays special attention to the mental and physical well-being of the students. The institution need to provide quality education along with proper facilities where students can experience a holistic academic development along with extra-curricular activities. Schools often need to invest to provide essential amenities.

• **Proper education infrastructure can support better learning:**

- 1) Positively impacts attendance and performance: If institute provide better facilities to students, the drop-out rates are much lower. It is the responsibility of the institution to motivate students with good governance to provide the expected infrastructure.
- 2) Digital infrastructure has become a must: educational institutions have to invest in building the digital infrastructure to make education accessible for all the students.
- 3) Proper infrastructure also motivates teachers: Apart from creating the right environment for students, teachers too need a motivating atmosphere to impart knowledge to the students.
- 4) College Building: The building should be spacious, well planned with good architectural features. There should be good ventilation in all the classrooms along with facilities like fans, lights, benches, chairs, blackboard, etc. There should also be facilities such as laboratories, multimedia room, office, theatre and many more.
- 5) Classrooms: The backbone of any institution's infrastructure is the classroom. There should be adequate classrooms and it should look pleasant with good painting and decorations.
- 6) Library: It plays an important part in the learning process of the institution as it's a counterpart of the institution's infrastructure.

III) Impact of Governance, Leadership and Management Mechanisms to Track and Promote Research:

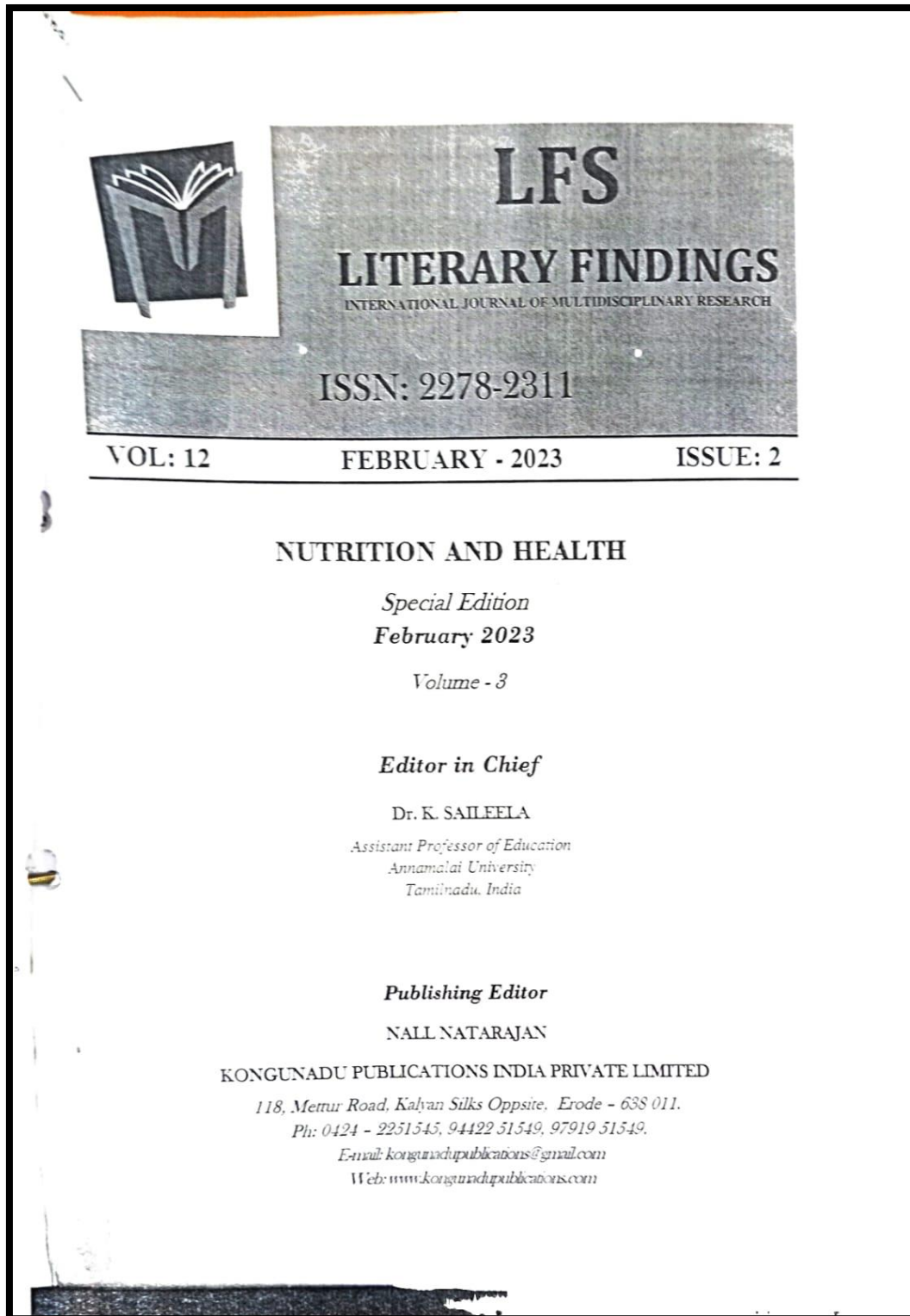
To ensure that the institution's research plan is being carried out and is effective, governance mechanisms are needed to track research outputs and outcomes for improvement in the NAAC accreditation. There are many types of research outputs to consider. ? Institution may see research that contributes to solving local or regional problems as important, even if the work is not published in an international journal. Therefore, it is important that an institution carefully separates its policy choices and its evaluative framework from the measures it uses to measure the performance and success. So, institution governance had to focus on research publication and citation data, their uses and possible abuse, and best practices and applications for research performance assessment and for monitoring and tracking developments and trends in research.

IV) Impact of governance leadership & management in best practices for the quality of education and improvement in gradation:

Some of the institutional and individual faculty best practices have visible impact on the quality of higher education imparted by the institution. The best practices concern admission, fees, attendance, teaching, performance, skill building, employability, student involvement, collective learning, value addition, ensuring transparency, information dissemination etc. So, good Governance, Leadership and Management of the institution have quality education in the institution and perhaps improves the institute gradation.

- [2]. Del Favero, M. (2003). Faculty-administrator relationships as integral to high performing governance systems. *American Behavioural Scientist*. 46(7) 902-922.
- [3]. Gopee, N. (2002). Human and social capital as facilitators of lifelong learning in nursing. *Nurse Education Today*. 22 (8) 608-616.
- [4]. Jones, S. Lefoe, G. Harvey, M. & Ryland, K. (2012). Distributed leadership: A collaborative framework for academics, executives and professionals in higher education. *Journal of Higher Education Policy and Management*. 34(1) 67-78.
- [5]. Marron, J.M. & Cunniff, D. (2014). What Is An Innovative Educational Leader? *Contemporary Issues in Education Research*. 7(2) 145-149.
- [6]. Parrish, D. (2013). The relevance of emotional intelligence for leadership in a higher education context. *Studies in Higher Education*. doi: 10.1080/03075079.2013.842225
- [7]. Quinlan K.M. (2014). Leadership of teaching for student learning in higher education: what is needed? *Higher Education Research & Development*. 33(1) 32-45.
- [8]. Ramsden, P. (1998). *Learning to lead in higher education*. London, England: Routledge.
- [9]. Scott, G. Coates, H. & Anderson, M. (2008). *Learning leaders in times of change: Academic leadership capabilities for Australian higher education*.
- [10]. Scott, G., Coates, H. & Anderson, M. (2010). Australian higher education leaders in times of change: The role of Pro Vice-Chancellor and Deputy Vice-Chancellor. *Journal of Higher Education Policy and Management*. 32(4) 401-418.

Role of Yoga and Physical Exercise during Puberty for physical and nutritional enhancement of Adolescent Girls



16. Effectiveness of Siddha Medicated Oil Mayanathylam (Meluguthylam) as External Application in the Treatment of Traumatic Inflammation <i>R. Uthaya Ganga, K. Suresh, M. Meenakshi Sundaram & R. Meena Kumari</i>	-	135
17. Mobile Phone Addictions and It's Impact on Mental Health of College Students A Survey of Davangere District (Karnataka) <i>Manjunatha Narasagondar</i>	-	139
18. Role of Yoga and Physical Exercise During Puberty for Physical and Nutritional Enhancement of Adolescent Girls <i>Sharmila Kubde</i>	-	144
19. Evaluation of Phytochemical Constituents, Nutrient Analysis, Antioxidant, Antibacterial and Organoleptic Potential in <i>Prunus Domestica</i> <i>U. V. Sudha, Dr. N. Yasmin & H. Fathima Faiza</i>	-	150
20. Women and Health <i>Dr. Tikshya & M. Shyamkul</i>	-	161
21. Addressing Ground water Depletion in Agriculture through Effective Policy Tool Options - an Economic Interrogative Study <i>P. Nirmal Kumar & R. Venkataraman</i>	-	167
22. A study on Challenges Faced by Parents Over Mobile Phone Usage of their School Going Children Among Urban Communities in Madurai <i>Dr. Stalin Muthuswamy</i>	-	173
23. Passive Protection against <i>Campylobacter Jejuni</i> in Broiler Chickens Using Chicken Egg Yolk Antibodies <i>Dr. R. Mahenthiran & Dr. A. Michael</i>	-	179
24. Comparative Study on Percentage Distribution of Obesity and overweight among Male and Female College Students <i>D. Mahalakshmi & Dr. J. Premkumar</i>	-	188

ROLE OF YOGA AND PHYSICAL EXERCISE DURING PUBERTY FOR PHYSICAL AND NUTRITIONAL ENHANCEMENT OF ADOLESCENT GIRLS

Sharmila Kubde

Matoshree Vimlabhai Deshmukh Mahavidyalay Amravati 444603

Email - sharmila.kubde@gmail.com

Abstract:

Physical exercise, yoga therapy, proper balance diet and nutrition etc. help in overcoming the problems of the puberty stage and gaining good health and mental stability. Different asana in yoga strengthen and stretch out every muscle in the body it helps in decreasing psychological and physiological receptors in cardiovascular diseases. The girls passing through a puberty stage finds difficult to overcome the symptoms of reduce self esteem and self image. Studies on dietary intake, physical exercises during puberty stage in adolescent girls determines that physical activities performed by the adolescent girls are very important, present study focus on work pattern during puberty stage, type of exercise performed, dietary intake and its effect on BMI. Majority of the adolescent girls are college students, least cared about physical fitness and dietary intake. Objectives of the study are to study the type of exercise perform during the day and to study the dietary intake and its effect on BMI during the puberty stage. 50 adolescent girls were randomly selected from Amravati city. Data was collected from questionnaire and interview method. BMI calculated with formula and other data was tabulated analysed with the help of statistic test. This study is an attempt to understand the feasibility and applicability of yogic practices among adolescent girls. Finally the conclusion is that majority of the adolescent girls are school and college going and least cared about their physical fitness and dietary intake. Physical fitness is not only for their individual health but also for their improved personality and better and comfortable life.

Keywords: Adolescent health, Yoga, Physical exercise, Puberty,

INTRODUCTION

Adolescent is the most important stage of human life. It involves physical, mental and psychological development at a fast pace. The stage requires a balance to be developed between mind and body so that the person come out as well as develop to contribute to society and nation. In this stage of puberty, girls may face the menstrual problems like premenstrual tension, dysmenorrhoea, mental irritation, headache, body pains, fatigue, Paranoia, lower self esteem, depression, confusion, abdominal cramp, nausea, bloating sensation etc. Yoga, counselling and exercises can help relax and overcome these problems. Adolescents have rapid changes in all over areas such as biological, physical, psychological, social. The holistic concept of yoga and nutrition focuses on strengthening and developing of all levels of

our human existence. While most other nutrition system focus only on the physical and chemical effects of Nutrition. Nutrition also considers the mental and spiritual aspects of our food.

Physical exercise, yoga therapy, proper balance diet and nutrition help in overcoming the problems during the puberty stage and gaining good health and mental stability. Different asana in yoga strengthen and stretch out every muscle in the body. It helps in decreasing psychological and physiological receptors in cardiovascular diseases. The girls passing through a puberty stage finds it difficult to overcome the symptoms of reduced self esteem and self image. Yoga helps in overcoming the issue by enhancing physical health and self esteem. Depression and anxiety are reduced through yoga. Physically fit and mentally strong girls can provide themselves and their family better healthy life and family status. Studies on dietary index physical exercise during puberty stage in adolescent girls determines that physical activities performed by the girls controls BMI and mental activeness. Eating smart and being active have similar effects on our health. These includes reduce risk of chronic diseases such as diabetes, heart disease, high blood pressure stroke and some cancers and associated disabilities prevent weight gain and promote weight loss. Healthy diet throughout life promotes, supports normal growth and development. Also helps to maintain a healthy body weight and reduces the risk of chronic disease leading to overall health and wellbeing. The present study is an attempt to focus on puberty stage in adolescent girls and effect of yoga on health. The present study is plan with the following objectives

Objectives of the study:

1. To study the work pattern during puberty stage of adolescent girls
2. To study the type of exercise perform during the day
3. To study the dietary intake and its effect on BMI during the puberty stage

Hypothesis of the study:

1. Majority of the respondent girls will be college going
2. Physical exercise will be least care during puberty period
3. Dietary Index during puberty period will be below recommended level

Methodology:-

The present study focuses on nature of physical exercise performed by adolescent girls during puberty stage, disease history, 3 days diet recall method and body mass index. The study is based on 50 sampled college girls randomly selected from Amravati City situated in vidarbharegion of Maharashtra state. The study is based on data collected during the year 2022. The required data was collected with the help of prepared questionnaire. The questionnaire was administered personally and information was collected through following method :-

- Weight and height assessment
- Questionnaire method
- Interview method.

In questionnaire, method contains information on age , weight , height , work done ,type and duration for which exercise performed, diseases if any ,dietary information Interview method is also called upon as oral questionnaire method. The investigator personally interviewed the adolescent girls. The data has been tabulated and analysed BMI was calculated as

$$\text{Weight in kg BMI} = \frac{\text{Weight in kg}}{\text{Height in (m)}^2}$$

The data collected has been tabulated on Excel worksheet was calculated on the basis of 3 days diet recall method and was compared with age specific requirements with the statistical test.

Review of literature

Kelishaadi et al (2008) reveal that modern lifestyle is very much associated with effortless access to food lack or very limited exercise performed sedentary and easy lifestyles food dense in calories excessive exposure to television and other social media have contributed to significantly developing lifestyle disorder diseases Sharma et al (2016) concluded need to focus on the importance of good nutrition proper diet and exercise on the oral health and well being during adolescent girl changes all together in diet exercise and lifestyle can contribute to living a sound life.

Result and discussion:

The main aim of the study was to find out the physical and nutritional status of selected adolescent girls. The data collected through questionnaire and interview method was analysed and its presented below under different sub headings. The following table presents the distribution of respondent adolescent girls according to their age:

Table 1.1 Distribution of adolescent girls according to their age

Sr.No.	Particulars	Frequency	Percentage
1	Below 13	15	30
2	14 to 16	31	62
3	17 to 19	04	08
	Total	50	100

The puberty stage was rich amongst 30 % respondent adolescent girls below 13 years. The majority of 62% respondent adolescent girls were between 14 to 16 years. Only 08% respondent adolescent girls are of age 17 to 19 years.

Table 1.2 distributions of adolescence girls according to their BMI

BMI is a very important indicator of the weight status of an individual. Depending on the BMI value calculated, the respondent adolescence girls are classified in four categories that is underweight, normal, overweight and obese. The anthropometric measures of height and weight were used to calculate BMI of individual respondent adolescent girls. The following table shows the distribution of respondent women according to their BMI.

Table 1.2 Distributions of adolescence girls according to their BMI

Sr. No.	Particulars	Frequency	Percentage
1	Underweight < 18.5	12	24
2	Normal 18.5 to 24.9	30	60
3	Overweight 25 to 29.9	06	12
4	Obese > 30	02	04
	Total	50	100

The distribution according to BMI concludes that 60% respondent adolescent girls are in the range of normal BMI .12% are in overweight category that is BMI 25 and above but below 30 only 4% of respondent adolescent girls are passing through grade 1 obesity.

Table 1.3 distribution of adolescent girls according to the type of exercise perform daily

To maintain a healthy style different types and forms of exercise are being practiced the responses on the type of exercise being performed by the respondent adolescent girls is analyzed and tabulated in the following table to find out the awareness about physical fitness in the adolescent girls.

Table 1.3 Distribution of adolescent girls according to the type of exercise perform daily

Sr No.	Particulars	Frequency	Percentage
1	Yoga	9	18
2	Walking	20	40
3	Other	4	08
4	No exercise	17	34
	Total	50	100

The physical exercise selected by adolescent girls passing through puberty period where walking by 40% and yoga by only 8%

Table 1.4 distribution of percentage of adolescent girls according to their dietary intake

The role of proper balance diet is very important in human life. With this view, the diet consume in 3 days was recorded to calculate the average consumption of different nutrients the average of the consume nutrients was compared with the recommended value and was classified into three groups of consumption below recommended level, upto recommended level and above recommended level the following table shows the distribution of respondent adolescent girls according to their dietary intake

Table 1.4 Distribution of percentage of adolescent girls according to their dietary intake

Sr.No	Particulars	calories		Protein		fats		Vit A		Vit C		Vit D		Calcium		Iron		Carbohydrate	Total
1	Below recommended	37	74	34	68	0	0	20	40	18	36	26	52	40	80	0	0	31	5
2	Upto recommended	4	8	14	28	16	24	26	52	23	46	14	28	6	12	27	54	17	4
3	Above recommended	9	18	2	4	42	84	4	8	9	18	10	20	4	8	23	46	1	5

The consumption pattern indicated that majority of respondent adolescent girls had calorie protein calcium, iron and carbohydrate consumption below recommended level. While 84% responded adolescent girls consumed fat more than recommended level. The relational analysis between dietary intake BMI and age concluded that significantly higher intake of calorie and fats resulted in decreases BMI and their by underweight among adolescent girls. The findings based on mean dietary intake of respondent adolescent girls compared with normal values indicated consumption of vitamin A and vitamin D was normal while vitamin C, iron, calcium consumption was significantly lower than recommended values concluding advice is needed on proper dietary intake to maintain physical as well as mental fitness

Conclusions:

The above findings arrive to the conclusions that majority of the adolescent girls are school and college going and least cared about their physical fitness and dietary intake. Physical fitness not only for their individual selves but also for their family. Better and comfortable life is essential for these adolescence girls. Emerging research suggest that yoga is generally effective at reducing stress and improving mood and well being in adults as well as improving physical and mental health in adolescent. Yoga asana prove to be very beneficial for young girls provided they do the right in the right way. Yogic asana is a way that supports the basic system of the body and boost the immune system as well.

Hence the null hypothesis statement majority of the respondent adolescent girls are school and college going is accepted the other null hypothesis physical exercise was least cared during puberty stage the third null hypothesis dietary index during puberty stage where below recommended level is partially accepted.

References:

1. Kelishadi R, Alikhani S, Delavari A, Alaedini F, Safaie A, Hojiazadeh E. Etal(2008) Obesity and associated lifestyle behaviours in Iran: Findings from the first national non communicable disease risk factor surveillance survey public health nutr.2008; 11: 246-51
2. Woodyard C. Exploring the therapeutic effects of yoga and its ability to increase quality of life Int/ yoga 2011; 4; 49-54
3. [https:// www. ncbi.nlm.nih.gov.> pmc](https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc)

Sankruti Sanvardhant Mahilanche Yogdan va Mahila Sakshmikaran

Impact Factor-8.632 (SJIF)

ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Single Blind Peer Reviewed & Refereed Indexed
Multidisciplinary International Research Journal

March-2023

ISSUE No - (CCCXCVIII) 398 (B)

A Journey of Indian women



Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor
Dr.V.R.Kodape
Principal
Shri Kisanlal Nathmal Goenka Arts & Com,
College Karanja (LAD) Dist. Washim

The Journal is indexed in:
Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
Cosmos Impact Factor (CIF)
International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar PUBLICATIONS

67	शोधेण महिलांच्या मूलभूत समस्या आणि उपाय	कु.पायल केशवराव पाटील	277
68	शोधेण स्त्रीयांचे आरोग्य, समस्या व उपाय	प्रा. प्रणिता बेर	280
69	श्रीमंदिन आर्योत्पन्न चालनाळ आणि नॉर्डस जिल्हातील दौलत स्त्रीयाने योगदान	इश्या भिमराव उमरे	284
70	आर्थिक विकासात महिलांची भूमिका	प्रा. डॉ. नीता नंदलाल तिवारी	287
71	संस्कृती संवर्धनात मदीलाचे योगदान व मदीला सक्षमीकरण	प्रा. प्राची भांबुरकर	291
72	हिराबाई बडोदेकर यांचे नाट्य संगीतामधील योगदान	प्रा. विद्या प्र. गावंडे	294
73	भारतीय विकासालया नाट्यातील आदिवासी महिलांचे योगदान	डॉ. वैजनाथ अनमलवाड	297
74	भारतीय निवृत्त आणि स्त्री	श्री. उज्वल राहुल शेगावकर	300
75	संगीत स्वरयोगिनो - "पद्मनिभूषण" डॉ. प्रभा अनेजी	प्रा. डॉ. कु.पिती बी. इंगळे (वाकपांजर)	303
76	स्वातंत्र्यपूर्व काळातील महाराष्ट्रीयन महिलांचे साहित्य रचनेतील योगदान	प्रा.भाऊराव रामेश्वर तनपुरे	307
77	मराठीतील दलित स्त्रियांची आत्मकथने : स्वरूप व वैशिष्ट्ये	संजय नामदेवराव आठवले	311
78	महिलांच्या सेवाभाव, नेतृत्व आणि शौर्यगाथा यामध्ये सावित्रीबाई फुले यांचे योगदान	प्रा. रेखा दिगांबर आढाव	318
79	पन्नायतराज व्यवस्थेची ऐतिहासिक पार्श्वभूमी	प्रा. डॉ. संतोष एस. मिसाळ	325
80	भारतीय स्त्री आणि कौटुंबिक स्वास्थ्य एक अभ्यास	प्रा. डॉ. ठकसेन दादारावजी राजगुरे	329
81	गर्भसंस्कारने गर्भवती महिलांचे स्वास्थ्य संवर्धन करून बालकांच्या वाढ व विकासात योगदान देणे	प्रा. कु. जयश्री त्र्यंबकराव कात्रे	334
82	भारतीय शेती विकासात महिलांचे योगदान	डॉ. रमाकांत गजभिये	336
83	स्त्रीया आणि मानवाधिकार	डॉ. प्रसन्नजीत रा. गवई	339
84	लोककला विश्वातील लोकप्रिय महिला कलावंत लावणी मघाजी विलाबाई नारायणगावकर	प्रा. जगन्नाथ इंगोले	342
85	विज्ञान के क्षेत्र में महिलाओं का योगदान	डॉ. अंजुम नहिद रउफ खान	344
86	महाराष्ट्र शासनाने महिला धोरण : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	प्रा. डॉ. जे. जे. जाधव	346

संस्कृती संवर्धनात महीलांचे योगदान व महिला सक्षमीकरण

प्रा. प्राची भांबुरकर

गृहअर्थशास्त्र विभाग प्रमुख विमलाबाई महाविद्यालय अमरावती

प्रस्तावना

अनेक स्त्रियांसाठी, आर्थिक स्वातंत्र्य हा स्वतःला सक्षम बनवण्याचा सर्वात महत्त्वाचा मार्ग आहे. शहरी भागात महिलांसाठी रोजगाराच्या अधिक संधी आहेत. ग्रामीण भागात हे खरे नाहीय शिवाय, सुरक्षेच्या समस्या देखील आहेत. त्यामुळे अनेक ग्रामीण महिला उद्योजक बनत आहेत. ग्रामीण महिलांना व्यवसाय सुरु करण्याची किंवा आर्थिक कार्यात गुंतण्याची कारणे आणि हेतू अनेक आहेत. उत्पन्नाचा स्रोत, उत्तम जीवनाचा आनंद लुटणे, कर्जाची सुलभता, अनुकूल सरकारी धोरणे, यशोगाथांचा प्रभाव, वैयक्तिक समाधान, स्वतःची कौशल्ये आणि प्रतिभा वापरण्याची इच्छा, सध्याचे प्रतिकूल वातावरण, स्वयंरोजगार आणि इतरांना रोजगार, करिअर आणि कौटुंबिक सुरक्षिततेची हमी आणि एखाद्याची सर्जनशील इच्छा पूर्ण करणे ही सर्व महत्त्वाची कारणे आहेत.

राष्ट्रीय विकास योजनेत महिलांनी सक्रिय सहभाग घेणे आवश्यक आहे. राष्ट्राच्या वाढीच्या हितासाठी, आधुनिक स्त्रियांनी सामाजिक चिंता, चालीरीती इत्यादीं कडे त्यांचा दृष्टीकोन आणि दृष्टीकोन बदलला आहे. महिलांमध्ये सामाजिक स्वातंत्र्याची इच्छा त्यांच्या जीवनासाठी आणि राष्ट्राच्या भविष्यासाठीही महत्त्वाची आहे. सशक्तीकरणाचे घटक सक्षमीकरणाचे योग्य संकेतक आहेत की नाही या संदर्भात संस्कृती भिन्न असू शकतात. शिवाय, आमचा असा विश्वास आहे की महिला सक्षमीकरणाची उत्क्रांती पूर्णपणे समजून घेण्यासाठी सांस्कृतिक पार्श्वभूमी तपासली पाहिजे. परिणामी, हस्तक्षेपांची रचना करताना, सांस्कृतिक मानदंड ओळखले जावे आणि परिणाम प्रदान करताना त्यांचे वर्णन केले जावे, ज्यामुळे संशोधनाची तुलना करणे सोपे होईल.

महिला सक्षमीकरणाच्या विकासाचे विश्लेषण करण्यासाठी अनुदैर्घ्य आणि क्रॉस-सांस्कृतिक संशोधन आवश्यक आहे. याचा परिणाम वैयक्तिक, नातेसंबंध आणि सामाजिक परिमाणांमध्ये जाणवू शकतो. विविध आयामांमध्ये आणि विविध संस्कृतींमध्ये महिलांच्या सक्षमीकरणावर कोणते हस्तक्षेप परिणाम करतात याचे मूल्यांकन करण्यासाठी या सर्वांचे मूल्यांकन करणे आवश्यक आहे.

महिलांच्या सक्षमीकरणासाठी राष्ट्रीय धोरण (2001)

स्त्री-पुरुष समानतेचे तत्त्व भारतीय संविधानात प्रस्तावना, मूलभूत अधिकार, मूलभूत कर्तव्ये आणि मार्गदर्शक तत्त्वांमध्ये अंतर्भूत आहे. संविधानाने केवळ महिलांना समानता दिली नाही तर महिलांच्या बाजूने सकारात्मक भेदभावाचे उपाय अवलंबण्याचे अधिकार राज्याला दिले आहेत. लोकशाही राज्यव्यवस्थेच्या चौकटीत, आपले कायदे, विकास धोरणे, योजना आणि कार्यक्रमांचा उद्देश विविध क्षेत्रात महिलांच्या प्रगतीसाठी आहे. पाचव्या पंचवार्षिक योजनेपासून (1974-78) महिलांच्या समस्यांकडे पाहण्याचा दृष्टीकोन कल्याणापासून विकासाकडे ठळकपणे बदलला आहे. अलिकडच्या वर्षात, महिलांचे सशक्तीकरण हा महिलांचा दर्जा उर्वरण्यासाठीचा केंद्रबिंदू मानला गेला आहे. महिलांचे हक्क आणि कायदेशीर हक्कांचे रक्षण करण्यासाठी 1990 मध्ये संसदेच्या कायद्याद्वारे राष्ट्रीय महिला आयोगाची स्थापना करण्यात आली. भारतीय राज्यघटनेतील ७३व्या आणि ७४व्या घटनादुरुस्तीने (१९९३) महिलांसाठी पंचायत आणि नगरपालिकांच्या स्थानिक स्वराज्य संस्थांमध्ये जागा राखून ठेवण्याची तरतूद केली आहे, ज्यामुळे स्थानिक पातळीवर निर्णय घेण्यामध्ये त्यांच्या सहभागाचा भक्कम पाया घातला गेला आहे.

लिंग विषमता विविध स्वरूपात प्रकट होते, सर्वात स्पष्ट म्हणजे गेल्या काही दशकांमध्ये लोकसंख्येतील महिलांचे प्रमाण सतत कमी होत चालले आहे. सामाजिक स्टिरियोटाइपिंग आणि घरगुती आणि सामाजिक स्तरावरील हिंसा ही इतर काही प्रकटीकरणे आहेत. देशाच्या काही भागात मुली, किशोरवयीन मुली आणि महिलांविरुद्ध भेदभाव कायम आहे.

धोरणाचे उद्दिष्टे

1 लैंगिक असमानतेची मूळ कारणे सामाजिक आणि आर्थिक संरचनेशी संबंधित आहेत, जी अनौपचारिक आणि औपचारिक मानदंड आणि पद्धतींवर आधारित आहे.

2 परिणामी, विशेषतः अनुसूचित जाती/अनुसूचित जमातींमध्ये मागासवर्गीय आणि अल्पसंख्याकंसह दुर्बल घटकांमधील महिलांचा प्रवेश, ज्यातील बहुसंख्य ग्रामीण भागात आहेत आणि अनौपचारिक, असंधारित

- क्षेत्रातील - शिक्षण, आरोग्य आणि उत्पादक संसाधने, इतरांमध्ये, अपुरी आहे. त्यामुळे ते मोठ्या प्रमाणात उपेक्षित, गरीब आणि सामाजिकदृष्ट्या बहिष्कृत राहतात.
- 3 महिलांची पगती, विकास आणि सक्षमीकरण हे या धोरणाचे उद्दिष्ट आहे. धोरणाचा व्यापक प्रसार केला जाईल जेणेकरून त्याचे उद्दिष्ट साध्य करण्यासाठी सर्व भागधारकांच्या सक्रिय सहभागास प्रोत्साहन मिळेल. विशेषतः या धोरणाच्या उद्दिष्टांमध्ये समाविष्ट आहे
- 4 महिलांच्या पूर्ण विकासासाठी सकारात्मक आर्थिक आणि सामाजिक धोरणांद्वारे वातावरण तयार करणे ज्यामुळे त्यांना त्यांची पूर्ण क्षमता ओळखता येईल.
- 5 राजकीय, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आणि नागरी अशा सर्व क्षेत्रात पुरुषांच्या बरोबरीने स्त्रियांनी सर्व मानवी हक्कांचा आणि मूलभूत स्वातंत्र्याचा न्याय्य आणि वस्तुनिष्ठ उपभोग
- 6 राष्ट्राच्या सामाजिक, राजकीय आणि आर्थिक जीवनात महिलांचा सहभाग आणि निर्णय घेण्यास समान प्रवेश
- 7 महिलांना आरोग्य सेवा, सर्व स्तरांवर दर्जेदार शिक्षण, करिअर आणि व्यावसायिक मार्गदर्शन, रोजगार, समान मोबदला, व्यावसायिक आरोग्य आणि सुरक्षितता, सामाजिक सुरक्षा आणि सार्वजनिक कार्यालय इत्यादींसाठी समान प्रवेश.
- 8 महिलांवरील सर्व प्रकारचे भेदभाव दूर करण्याच्या उद्देशाने कायदेशीर प्रणाली मजबूत करणे
- 9 स्त्री आणि पुरुष दोघांच्याही सक्रिय सहभागाने आणि सहभागाने सामाजिक दृष्टिकोन आणि सामुदायिक पद्धती बदलणे.
- 10 विकास प्रक्रियेत लैंगिक दृष्टीकोन मुख्य प्रवाहात आणणे.
- 11 महिला आणि मुलींवरील भेदभाव आणि सर्व प्रकारच्या हिंसाचाराचे निर्मूलनय आणि
- 12 नागरी समाज, विशेषतः महिला संघटनांसोबत भागीदारी निर्माण करणे आणि मजबूत करणे.
- सशक्तीकरणाची उद्दिष्टे साध्य करण्यासाठी सर्व पातळ्यांवर राजकीय प्रक्रियेत निर्णय घेण्यासह अधिकार वाटणीमध्ये महिलांची समानता आणि निर्णय घेण्यात सक्रिय सहभाग सुनिश्चित केला जाईल. विधिमंडळ, कार्यकारी, न्यायिक, कॉर्पोरेट, वैधानिक संस्था, तसेच सल्लागार आयोग, समित्या, मंडळे, ट्रस्ट इ. यासह प्रत्येक स्तरावर निर्णय घेण्याच्या संस्थांमध्ये महिलांना समान प्रवेश आणि पूर्ण सहभागाची हमी देण्यासाठी सर्व उपाययोजना केल्या जातील. सकारात्मक कृती जसे की आरक्षणध्कोटा, उच्च विधायी संस्थांसह, जेव्हा आवश्यक असेल तेव्हा कालबद्ध आधारावर विचार केला जाईल. महिलांना विकास प्रक्रियेत प्रभावीपणे सहभागी होण्यासाठी प्रोत्साहित करण्यासाठी महिला-अनुकूल कर्मचारी धोरणे देखील तयार केली जातील.
- विकास प्रक्रियेत लैंगिक दृष्टीकोन मुख्य प्रवाहात आणणे
- उत्प्रेरक, सहभागी आणि प्राप्तकर्ता या नात्याने सर्व विकास प्रक्रियांमध्ये महिलांच्या दृष्टीकोनांचे मुख्य प्रवाहात येणे सुनिश्चित करण्यासाठी धोरणे, कार्यक्रम आणि प्रणाली स्थापित केल्या जातील. जिथे जिथे धोरणे आणि कार्यक्रमांमध्ये तफावत असेल तिथे ती भरून काढण्यासाठी महिलांचा विशेष हस्तक्षेप केला जाईल. अशा मुख्य प्रवाहातील यंत्रणांच्या प्रगतीचे वेळोवेळी मूल्यांकन करण्यासाठी समन्वय आणि देखरेख यंत्रणा देखील तयार केली जाईल. महिलांच्या समस्या आणि चिंता या सर्व संबंधित कायदे, क्षेत्रीय धोरणे, योजना आणि कृती कार्यक्रमांमध्ये विशेषतः संबोधित केल्या जातील आणि प्रतिबिंबित केल्या जातील. आरोग्य
- महिलांच्या आरोग्यासाठी एक सर्वांगीण दृष्टिकोन स्वीकारला जाईल ज्यामध्ये पोषण आणि आरोग्य सेवा या दोन्हींचा समावेश असेल आणि जीवन चक्राच्या सर्व टप्प्यांवर महिला आणि मुलींच्या गरजांवर विशेष लक्ष दिले जाईल. बालमृत्यू आणि मातामृत्यूचे प्रमाण कमी करणे, जे मानवी विकासाचे संवेदनशील संकेतक आहेत, ही प्राथमिक काळजी आहे. हे धोरण राष्ट्रीय लोकसंख्या धोरण 2000 मध्ये निर्धारित अर्भक मृत्यू दर, माता मृत्यू दर साठी राष्ट्रीय लोकसंख्याशास्त्रीय उद्दिष्टे पुनरुच्चार करते. महिलांना सर्वसमावेशक, परवडणारी आणि दर्जेदार आरोग्य सेवा मिळायला हवी. महिलांचे प्रजनन अधिकार विचारात घेऊन त्यांना माहितीपूर्ण निवडी, लैंगिक आणि आरोग्य समस्यांसह त्यांची असुरक्षितता, स्थानिक, संसर्गजन्य आणि संसर्गजन्य रोग जसे की मलेरिया, टीबी, आणि जलजन्य रोग तसेच उच्च रक्तदाब यांचा विचार करता येईल अशा उपाययोजना केल्या जातील. आणि हृदय-पल्मोनरी रोग. एचआयव्ही/एड्स आणि इतर लैंगिक संक्रमित रोगांचे सामाजिक, विकासात्मक आणि आरोग्य परिणाम लिंग दृष्टीकोनातून हाताळले जातील.

अर्भक आणि माता मृत्यूच्या समस्या पभावीपणे पूर्ण करण्यासाठी आणि लवकर विवाह, मृत्यू, जन्म आणि विवाह यावरील सूक्ष्म स्तरावर चांगल्या आणि अचूक डेटाची उपलब्धता आवश्यक आहे. जन्म-मृत्यू नोंदणीची काटेकोर अंमलबजावणी सुनिश्चित केली जाईल आणि विवाह नोंदणी अनिवार्य केली जाईल.

लोकसंख्या स्थिरीकरणासाठी राष्ट्रीय लोकसंख्या धोरण (2000) च्या वचनबद्धतेनुसार, हे धोरण पुरुष आणि स्त्रियांना त्यांच्या परांतीच्या कुटुंब नियोजनाच्या सुरक्षित, प्रभावी आणि परवडणार्या पद्धतींमध्ये प्रवेश मिळण्याची आणि योग्यरित्या संबोधित करण्याची गरज ओळखते. लवकर विवाह आणि मुलांच्या अंतराचे प्रश्न, शिक्षणाचा प्रसार, विवाहाची अनिवार्य नोंदणी आणि टैल सारख्या विशेष कार्यक्रमांचा विवाहाच्या वयात विलंब होण्यावर परिणाम झाला पाहिजे जेणेकरून २०१० पर्यंत बालविवाह दूर होतील.

आरोग्य सेवा आणि पोषण याविषयी महिलांचे पारंपारिक ज्ञान योग्य दस्तऐवजीकरणद्वारे ओळखले जाईल आणि त्याचा वापर करण्यास प्रोत्साहन दिले जाईल. महिलांसाठी उपलब्ध असलेल्या एकूण आरोग्याच्या पायाभूत सुविधांच्या चौकटीत भारतीय आणि वैकल्पिक औषध पद्धतींचा वापर वाढवला जाईल. पोषण

बाल्यावस्था आणि बालपण, किशोरावस्था आणि पुनरुत्पादक अवस्था या तीनही गंभीर टप्प्यांवर महिलांना कुपोषण आणि रोगाचा उच्च धोका लक्षात घेता, जीवनाच्या सर्व टप्प्यांवर महिलांच्या पोषणविषयक गरजा पूर्ण करण्यावर लक्ष केंद्रित केले जाईल. सायकल पौगंडावस्थेतील मुली, गरोदर आणि स्तनपान देणार्या महिलांचे आरोग्य आणि अर्भक आणि लहान मुलांच्या आरोग्यामधील गंभीर संबंध लक्षात घेता हे देखील महत्त्वाचे आहे. विशेषतः गरोदर आणि स्तनपान देणार्या महिलांमध्ये मॅक्रो आणि सूक्ष्म पोषक तत्वांच्या कमतरतेची समस्या हाताळण्यासाठी विशेष प्रयत्न केले जातील कारण यामुळे विविध रोग आणि अपंगत्व येऊ शकते.

पोषण विषयक बाबींमध्ये मुली आणि महिलांमधला घरगुती भेदभाव योग्य रणनीतींद्वारे संपवण्याचा प्रयत्न केला जाईल. पोषण विषयक असंतुलन आणि गरोदर आणि स्तनपान देणार्या महिलांच्या विशेष गरजा या समस्या सोडवण्यासाठी पोषण शिक्षणाचा व्यापक वापर केला जाईल. व्यवस्थेचे नियोजन, देखरेख आणि वितरण यामध्ये महिलांचा सहभागही सुनिश्चित केला जाईल.

सारांश
आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आणि मानसशास्त्रीय परिवर्तने या सर्वांचा महिला सशक्तीकरणाच्या उदय आणि विकासावर प्रभाव पडतो.

प्राचीन नियम आणि परंपरांचा स्त्रियांच्या स्थितीवर आणि प्रगतीवर खूप परिणाम झाला आहे. काही महिलांनी चिंता व्यक्त केली आहे की पारंपारिक मूल्ये आणि परंपरा त्यांच्या वैयक्तिक विकासात हस्तक्षेप करत आहेत आणि प्रतिबंधित आहेत. त्यांनी पारंपारिक विश्वासांना आव्हान देण्यास सुरुवात केली आहे आणि जुन्या मूल्यांना छेद देण्याचा प्रयत्न केला आहे. आधुनिक स्त्रिया अशा आहेत ज्या सामाजिक रूढी आणि स्त्रियांवरील बंधनांना विरोध करण्यात सक्रियपणे व्यस्त आहेत. त्यांना सामाजिक स्वातंत्र्याची खूप इच्छा आहे. तथापि, अशा महिलांची संख्या लक्षणीय आहे ज्यांना सामाजिक स्वातंत्र्याची फारशी इच्छा नाही आणि त्या पारंपारिक जीवनशैलीचा अवलंब करण्यात समाधानी आहेत. महिलांमध्ये सामाजिक स्वातंत्र्याच्या इच्छेमध्ये वैयक्तिक असमानता आहे. याचे श्रेय आपल्या जीवनातील संस्कृती आणि लहानपणापासूनच स्त्रियांच्या मानसिक स्थितीला दिले जाऊ शकते. पण सद्यस्थितीमध्ये स्त्रीयां प्रत्येक क्षेत्रांत आपला टसा उमटवित प्रगती करीत आहेत.

संदर्भ ग्रंथ सुचि

1 महिला आरोग्य सुची

2 गज्य महिला आयोगां की मन्त्री, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग

3 Mahasamruddhi Mahila Sashaktikaran Scheme 2022-23

Assessment of soil properties of different farm of Yeoti and Dhanora Gurav tehsil, Nandgaon Khandeshwar, Dist. Amravati

IJR BAT, Issue (XI) Vol (I) Jan 2023: 225-229

A Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal

OPEN ACCESS

e-ISSN 2347-517X

Original Article



INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCHES IN BIOSCIENCES, AGRICULTURE AND TECHNOLOGY

© VMS RESEARCH FOUNDATION www.ijrbat.in

ASSESSMENT OF SOIL PROPERTIES OF DIFFERENT FARM OF YEOTI AND DHANORA GURAV TEHSIL NANDGAON KHANDESHWAR, DISTRICT AMRAVATI (M.S) INDIA

R. S. Talegaonkar

Department of Chemistry, Matoshree Vimlabai Deshmukh Mahavidyalaya Amravati
Corresponding Email: rupaliyecotikar@gmail.com

Communicated :10.12.2022

Revision: 20.01.2023 & 24.01.2023

Published: 30.01.2023

Accepted: 26.01.2023

ABSTRACT:

Soil health and soil quality are define as the capacity of soil to function as a fighter living system within land use boundaries. Soil quality is related to soil function .In present study our attempt haa been made to conduct assessment of soil properties of different farm of Yeoti and Dhanora gurav tehsil Nandgaon Kh. region of Amravati district. Samples collected from different farms are analyze to study the different parameters such as soil pH, Salinity ,organic carbon (OC), available nitrogen (N), phosphorus (P), potassium (K), and micronutrients (Fe, Mn, Cu ,B S, Cu, Fe and Zn).

This information will help the farmers to know amount of fertilizers to be added in soil to make production and to reduce the negative impact on agricultural productivity and long term sustainability.

Keywords: - Soil health, physical and chemical properties etc.

INTRODUCTION :

Soil, like air and water, is a fundamental natural resource supporting a variety of ecosystem goods and services to the benefit of the mankind. Soil quality can be defined as the fitness of a specific kind of soil, to function within its capacity and within natural or managed ecosystem boundaries, to sustain plant and animal productivity, maintain or enhance water and air quality, and support human health and habitation (Karlen et al. 1997, Arshad and Martin 2002). While production function of soil was recognized long back, importance of conservation and enhancement of ecosystem services rendered by soil (e.g., carbon sequestration, water purification, recharge of ground water, control of populations of pathogens, biological nitrogen fixation and biodiversity conservation) has been realized only in the recent past. Williams 1990 [1] has studied effect of pH on nutrient balance and observed

that high pH of soil can affect the micronutrient content present in soil. Manganese and Iron level decline with increase in soil pH. However, pH is of plant and other living organisms, available nutrients, cation exchange capacity and organic matter content [2]. The mobility of nutrients in the soil is largely depended on soil pH. Different studies have shown that the most of the plant nutrients are optimally available to plants at pH range between 6.5 to 7.5 ranges [3-5]. There are 17 essential nutrients which are required for plant growth. However, micronutrients like Fe, Mn, Zn, Cu are only easily accessible in acidic situation. Sometimes these nutrients also cross the toxic limit and high concentrations leads to toxic effects on plants [6]. Sometimes the micronutrient status also changes due to cropping pattern and fertilizer practices [7]. S. C. Dandwate done study of physicochemical parameters from Sangamner city [8]. A. D. Pawar(2021)Analysis of

<http://doi.org/10.29369/ijrbat.2023.010.1.0036>



Page 225

physicochemical parameters, heavy metals and micronutrients in soil samples were collected from various farm land of Kundal area, Palus taluka Dist. Single, Maharashtra[9]. Agricultural sustainability depends to a large extent upon maintenance or enhancement of soil health / quality.

In recent years agriculture development has been changed from conventional and traditional farming method too more intensive practices using chemical fertilizers and pesticides with irrigation facilities. Continuous use of chemical fertilizers slowly changed soil properties; ultimately the production in long run is reduced. It has resulted in leaching of chemical into the surface and ground water [10-14]. Due to increasing demand for cash crops the practice of monoculture cropping pattern have further helped to deteriorate water as well as soil quality [15].

It is the need of time that we have to study the physico-chemical parameters of soil to know its quality. The objectives of soil analysis is to provide an index of nutrient availability or supply in a given soil also to provide a basis for fertilizer recommendations for a given crop; to evaluate the fertility status of the soil and plan a nutrient management program.

SAMPLE COLLECTION :

The present study was carried out for two villages located in Nandgaon Khandeshwar Tehsil,district Amravati. The 4 Soil samples were collected from two villages, Yeoti and Dhanora Gurav, two farm soil samples were collected from each village. While collecting soil samples the upper layer of vegetation, surface litter, stones stubble if any were cleared away and then layer of soil immediately below (0-20 cm) was collected in polythene bag.

Fig 1 and 2- Sample collection site.

Preparation of soil sample for analysis:

Each sample meant for physic chemical analysis was air dried for five days and then sieved to

ensure homogeneity using a 2mm size sieve. For sampling of soil following process was used.

MATERIAL AND METHODS :

The soil samples were collected from two different places in the summer season.To collect soil samples in cleaned polythene bags. The collection of soil at the depth of 5 to 8 inch. Soil depth is a root space and the volume of soil from where the plants fulfill their water and nutrient demands. (The top six inches of soil has the most root activity and fertilizer application is generally restricted to this depth). The soil samples were immediately brought into laboratory for the estimation of various physicochemical parameters like pH was recorded by using Digital pH meter. Specific conductivities were measured by using digital conductivity meter. While other parameters such as sodium and potassium by flame Photometry. Magnesium, calcium bicarbonate, organic carbon, manganese, zinc, copper was estimated in the laboratory by using standard laboratory methods. The chemical characteristics viz. soil pH,electrical conductivity, total soil organic carbon, organic matter, total nitrogen, phosphorus, potassium, zinc, sulphur, and Iron has been determined by routine standard procedure[16].(Black, 1965)

RESULT ANALYSIS :

The result obtained during the investigations carried out in the field and laboratory, are reported as below.

CONCLUSION :

The outcome of this research is to predict which crop will grow in such type of soil and which fertilizers we provide to such a soil.

- In the soil sample YT-I ,YT -II ,DG-I and sample DG-II the pH become middle alkali and to increases the pH of this soil suggested the use of compost manure. Then recommendation of to dig drains , to make out flows , sowing green crops , cow manure to bury plant wastes, to

supply necessary amount of water, use of gypsum.

- In the soil sample YT-I ,YT -II ,DG-I and sample-2, the manganese become approximate. Then recommendation sulphate 10kg/hectare.
- In the soil sample YT-I ,YT -II ,DG-I and sample DG-II , the potassium become is extreme high , so there is no need to use potassium for this soil. But to increase more yield of crop by using 2% potassium for this soil.
- In the soil sample YT-I ,YT -II ,DG-I and sample DG-II the phosphorous is medium. To increase the crop quality phosphorous will be given through fertilizer.
- In the soil sample YT-I ,YT -II ,DG-I and sample DG-II ,the Boron is sufficient..
- In the soil sample YT-I ,YT -II ,DG-I Sulphur become sufficient and in sample- DG-II, sulphur become less.
- In the soil sample DG-I medium organic carbon and nitrogen ,in sample DG-II medium organic carbon and sufficient nitrogen. So there is no need in organic carbon for this soil but to increase more yield of crop by using carbon and nitrogen to soil. to increase the organic carbon and nitrogen of soil suggest the use of compost manure

ACKNOWLEDGEMENT :

We are very sincerely thankful to everyone who supported us. We are thankful for their moral support valuable guidance during this work. This work is for farmer related work so we devote this work to farmer and very glad to inform. I am very thankful of farmer those who help me and my college staff those who encourage me for this work.

REFERENCES:

Williams D.A., Specialty fertilizers and Micronutrients do they Pay?" Proceeding 2006 Western Alfalfa and Forage Conference sponsored by cooperative extension services of AZ, CA, CO, ID, MT, NVS KM, OR, UT, WA, WY.

Published by US co-operative extension, agronomy research and extension center plant science department. University of California, Davis,95,616,(1990).

- Forth. H.D. and. Ellis ft. G., Soil Fertility. 2nd Ed. CRC Press, Boca Raton, Florida, (1997).
- Marx E.S., Hart J., and Stevens R, G., Soil lest interpretation guide, Oregon State University.(1999).
- Rhue, R.D.and G. Kidder, Analytical procedures used by the IFAS extension soil laboratory and the interpretation of results. Soil Sci. Dept..Univ. Florida Gainesville.,(1983).
- Reid G., Dirou J., How to interpret your soil test. North Coast of NSW, (2004).
- Brady C. N. Weil R. R, Nature and properties of soils.13th Ed. Prentice Hall (2002).
- Li. B.Y. Zhou D, M, Cang L, hang H. L. Fan X. H, and Qin S.W. Soil organic fertilizer applications. Soil and Tillage Research. 96, 166-173. micronutrient availability to crops as affected by long-term inorganic,(2007).
- DandwateS.C.Analysis of soil samples for its physicochemical parameters from Sangamnercity.GSC Biological and Pharmaceutical Sciences,(02),123-128,(2020).
- A. D. Pawar, Analysis of Physicochemical Parameter, Heavy Metals and Micronutrients of Soil Sample of Kundal Village, Single District, Maharashtra, Aayushi International Interdisciplinary Research Journal, issue- iv vol- viii April(2021).
- Agarwal RR and Gupta RN. Saline alkali soils in India. ICAR, Tech. Bull. (Agri. Series) No. 15, New Delhi, 1-65, (1968)..
- Barhate CL. The physico-chemical properties of the soils of Ahmednagar district and the fertility status as influenced by agri-

climatic differences, M.Sc. (Agri) dissertation, MPKV, Rahuri, Ahmednagar dist., Maharashtra, (1971).

Bharambe PR and Ghonsikar CP Fertility status of soils in Jayakwadi Command. J. Maharashtra agric. Univ, 9(3), 326-327, (1984).

Bharambe PR and Ghonsikar CP. Physico-chemical characteristics of soils in Jayakwadi Command. J. Maharashtra agric. Univ. 10, 247-249, (1985).

Bhattacharya T, Deshmukh SN and Roychaudhary C. Soils and land use of Junnar Tahasil, Pune district, Maharashtra. J. Maharashtra agric. Univ, 14(1), 1-4, (1989).

Biswas BC, Yadav DS and Maheshwari S. Role of calcium and magnesium in *Indian agriculture. A Rev., ferti. News*, 30, 15-35, (1985).

Black CA. (1965). Method of soil analysis. Part 2 Inc. Publi; Madison, Wisconsin, USA.

Table 1. Laboratory methods used for chemical analysis of soil

Sr. No.	Particulars	Method used
1	pH	pH- metry
2	Conductance	Conductometry
3	Nitrogen	Alkaline permanganate method
4	Phosphorous	Olsen's Method
5	Potassium	Flame photometric method
6	Magnesium	Titration
7	Calcium	Titration
8	Zn, Fe, Cu, Mn	Atomic absorption Spectrophotometric method
9	Organic Carbon	Titration
10	Alkalinity	Titration

Table 2-Physico chemical characteristics of study area

Sr. No.	Parameters	YT -I	YT-II	DG -I	DG - II
1	Colour	Black	Black	Brownish	Brownish
2	Salinity	0.30	0.32	0.28	0.33
3	pH	7.68	7.54	7.55	7.41
4	Organic Carbon (%)	0.61	0.42	0.41	0.41
5	Manganese	14	10	10	10
6	Copper	9	8	9	10
7	Iron (ppm)	34	35	43	41
8	Nitrogen (kg/hect)	250	220	171	171
9	Phosphorous (kg/hect)	35	33	26	30
10	Potassium (kg/hect)	290	360	262	288
11	Sulphur (Mg)	38	40	45	40
12	Zinc (Mg)	2.8	3.9	4.0	4.2
13	Boron	1.1	1.1	1.2	1.6



Fig. 1

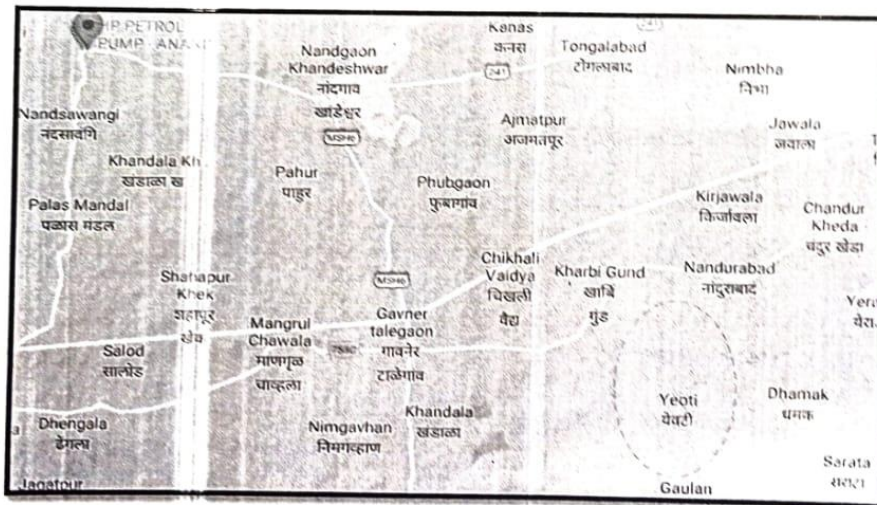


Fig. 2

Studies of some of the Acoustic characteristics of Substituted Thiazolyl Schiff's Bases in Binary Solvent Mixture at 30±0.1 0C with varying in percentages.



IJARESM

ISSN: 2455-6211, New Delhi, India

International Journal of All Research Education & Scientific Methods

An ISO & UGC Certified Peer-Reviewed & Refereed Multi-disciplinary Journal

UGC Journal No. 7647

Certificate of Publication

Dr. Rupali S. Talegaonkar

Matoshree Vimalabai Deshmukh Mahavidyalaya, Amravati (M.S.)

TITLE OF PAPER

**Studies of Some of the Acoustic Characteristics of
Substituted Thiazolyl Schiff's Bases in Binary Solvent
Mixtures at 30±0.10C with Varying in Percentages**

has been published in

IJARESM, Impact Factor: 7.429, Volume 11 Issue 5, May-2023

Certificate IJ-2405231053

Date : 27-05-2023



Website: www.ijaresm.com
Email: editor.ijaresm@gmail.com



Authorized Signatory



Studies of Some of the Acoustic Characteristics of Substituted Thiazolyl Schiff's Bases in Binary Solvent Mixtures at $30 \pm 0.10^\circ\text{C}$ with Varying in Percentages

Dr. Rupali S. Talegaonkar

Matoshree Vimalabai Deshmukh Mahavidyalaya, Amravati (M.S.)

ABSTRACT

The ultrasonic velocity (U_s) and density (d_s) have been measured at (1MHz) frequency in the binary mixtures of acetone-water, dioxane-water and ethanol-water system over the entire range of mole fraction at temperature 30.16°C . The data of C and have been used to evaluate adiabatic compressibility (β_s), Apparent molar compressibility (Φ_K), Apparent molar volume (Φ_V), intermolecular free length (L_f), specific acoustic impedance (z) and relative association (R_A) to elucidate the molecular association in the mixture. The variation of these parameters with solute (acetone) indicates the nature of interaction present in the binary mixture.

Keywords: Ultrasonic velocity, adiabatic compressibility, intermolecular free length, acoustic impedance, relative association

INTRODUCTION

Ultrasonic technology is now a day's employed in a wide range of application such as acoustic microscopy, drug industry, textile industry, paint industry, food and fat industry, flaw detector in metal, electrochemistry, optical storage cell, computer technology, surfactant, binary and ternary liquid, under water acoustic which is a oceanographic application include mapping of the sea bottom, discovering sunken ships and searching for schools of fish. The extensive uses of polymers in technology have promoted ultrasonic studies to understand the structures of polymers and furnish knowledge on solvophilic or solvophobic nature of polymers¹. The determination of some properties of solids such as compressibility, specific heat ratios, and elasticity considered as the applications in materials science² Ultrasonic rays are useful tool in sonochemistry³ and medical field also. Ultrasonic radio-frequency spectrum analysis provides application in various diagnosis such as paediatrics⁴⁻⁵, vascular diseases⁶⁻⁷, brain diseases⁸, ophthalmology⁹⁻¹⁰, in urology¹¹⁻¹², in cancer cell¹³⁻¹⁴ etc. Organic materials in landfill can also be degraded by ultrasound¹⁵.

The era of modern ultrasonic does began only in the early twentieth century with Langevin's use of high-frequency acoustic waves and quartz resonators for submarine detection in 1917. From then on, slow but steady progress was made in the measurements of propagation constants of materials. Early landmarks included Pierce's quartz-driven ultrasonic interferometer in 1925 and the discovery in 1932 by Debye and Sears and also by Lucas and Biquard of the ultrasonic diffraction grating.

Review of literature and orientation of present work

Ultrasonic wave propagation in liquids has been subject of exhaustive research, which has been carried out both theoretically and experimentally. The efforts to correlate the ultrasonic velocity and the attenuation coefficient with the physical parameter of liquid have been quite encouraging. K Nagbhushan Raju et al.¹⁶ studies apparent molar volume (Φ_V) and apparent molar adiabatic compressibility of 2-methoxy, 2-ethoxy and 2-butoxy ethanol with water at different temperature from ultrasonic data. Sarvanakumar et al.¹⁷ measured the densities viscosity, refractive indices, ultrasonic velocities and thermodynamic acoustical parameters of binary mixture like Acetophenone + Isoamyl acetate. The study of solute-solvent, solute-solute interaction is being possible to vide application of ultrasonic study.

Recna yadav et al.¹⁸ studied the solute-solvent interaction of some pesticides monochrotophios with aqueous organic solvent. Ultrasonic velocity, viscosity and density for the solution of ethyl cellulose in propane-1-ol, butane-1-ol and pentane-1-ol and hexane-1-ol mixture measured at 303, 313 and 323 $^\circ\text{K}$ and further molecular interactions were studied by k Raju and C Rakkappan¹⁹. Rathor P and Singh M²⁰ have determine the apparent molar volume (Φ_V) and partial molar



volume (ϕ_{v_0}) of aqueous solution of biologically important compound [glucose, sucrose, urea, citric acid, tartaric acid, ascorbic acid & oxalic acid] in different molality at different two temperature and discussion of solute-solvent interaction and electrostriction have been studied. They found that the values of (ϕ_{v_0}) are positive and large for all solute in various molar mixtures of waters and at higher temperature there is very strong solute-solvent interaction and as the temperature increases there is increase in solvation.

Experimental

The sound velocities of thiazoles were measured in 0.01 M to 0.05 M range in dioxane - water mixture, acetone - water mixture and ethanol- water mixture. Also the sound velocities of different thiazoles were measured in different percentages of dioxane -water mixture, acetone - water mixture and ethanol- water mixture.

In the present investigation different parameters such as adiabatic compressibility (β_s), apparent molal volume (ϕ_v), intermolecular free length (Lf), apparent molal compressibility (ϕ_k), specific acoustic impedance (Z), relative association (R_A), were studied, with the help of following equations.

$$\beta_s = \frac{1}{U_s^2 \cdot ds} \quad \dots 1$$

$$\phi_v = \left(\frac{M}{ds}\right) + \left[\frac{(d_0 - ds) \times 10^3}{m \times ds \times d_0}\right] \quad \dots 2$$

$$\phi_k = \frac{\beta_s \cdot M}{ds} + \left[\frac{1000(\beta_s d_0 - \beta_0 ds)}{m \times ds \times d_0}\right] \quad \dots 3$$

$$Lf = K \sqrt{\beta_s} \quad \dots 4$$

$$Z = U_s \cdot ds \quad \dots 5$$

$$R_A = \left(\frac{ds}{d_0} \frac{U_0}{U_s}\right)^{1/3} \quad \dots 6$$

Where d_s , d_0 and U_s , U_0 are the densities and ultrasonic velocities of solution and pure solvent respectively. M is the molecular weight of substituted chalcone. β_s and β_0 are the adiabatic compressibility's of solution and solvent respectively. K is Jacobson's constant and m is the molality of solution.

Table 1: Ultrasonic velocity, density, adiabatic compressibility (β_s), Intermolecular free length (L_f) in different percentages of Acetone-Water mixture

Temperature: 303± 0.1 °C Ultrasonic freq: 1 MHz Conc : 0.01 M

% Acetone	Density (ds) g m ⁻³	Ultrasonic Velocity (Us) ms ⁻¹	Adiabatic Compressibility (β_s) × 10 ⁻⁶ m ² N ⁻¹	Intermolecular free length (L _f)
System - PPTMP-II + Acetone				
100	0.99	921.2	1.19	6.5663
95	1.045	922.4	1.12	6.3829
90	1.05	930	1.1	6.3156
85	1.057	934	1.08	6.2677
80	1.061	946.8	1.05	6.1710
75	1.064	960	1.02	6.0770
System - CPTMP-II+Acetone				
100	0.99	921.2	1.19	6.5663
95	1.034	980.8	1.01	6.0346
90	1.042	974.6	1.01	6.0497
85	1.05	970.6	1.01	6.0514
80	1.056	968.6	1.01	6.0467



Table 2:- Apparent molal volume (ϕ_v), Apparent modal compress ability (ϕ_K), Relative Association (R_A) and Specific acoustic impedance (Z) in different percentages of Acetone-Water mixture.

Temperature: 30.3 ± 0.1 °C Ultrasonic freq: 1 MHz Conc : 0.01 M

% of Acetone	Apparent molal Volume - (ϕ_v) $\times 10^3$ $m^3 mol^{-1}$	Apparent molal Compressibility - (ϕ_K) $m^2 N^{-1}$	Relative Association (R_A)	Specific Acoustic Impedance (Z) $\times 10^2$ kg $m^2 s^{-1}$
System-PPTMP-II + Acetone				
100	2.4222	4.3843	0.5283	9.1198
95	2.9559	4.1598	0.5569	9.6390
90	3.0016	4.1423	0.5550	9.7650
85	3.0049	4.1164	0.5563	9.8723
80	3.1007	4.1040	0.5509	10.0455
75	3.1274	4.0955	0.5448	10.2144
System-CPTMP – II + Acetone				
100	2.4183	4.3843	0.5283	9.1198
95	2.8500	4.2156	0.5182	10.1414
90	2.9246	4.1828	0.5256	10.1555
85	2.9980	4.1509	0.5318	10.1913
80	3.0523	4.1274	0.5359	10.2284
75	3.0927	4.1076	0.5408	10.2322

Table 4:- Ultrasonic velocity, density, Adiabatic compressibility (β_s), Intermolecular free length (L_f) in different percentages of Dioxane -Water mixture

Temperature: 30.3 ± 0.1 °C Ultrasonic freq: 1 MHz Conc : 0.01 M

% of Dioxane	Density(d_s) gm^{-3}	Ultrasonic velocity(U_s) ms^{-1}	Adiabatic compressibility (β_s) $\times 10^{-6} m^2 n^{-1}$	Intermolecular free length (L_f)
System-PPTMP-II + Dioxane water				
100	0.9362	932.4	1.23	6.6712
95	0.9354	936.9	1.22	6.6420
90	0.935	943.2	1.20	6.5991
85	0.9336	949.8	1.19	6.5581
80	0.9330	953.8	1.18	6.5327
75	0.9321	974.6	1.13	6.3964
System-CPTMP – II + Dioxane water				
100	1.0110	978.4	1.03	6.1179
95	1.0100	980.6	1.03	6.1066
90	1.0090	982.7	1.03	6.0971
85	1.0080	984.8	1.02	6.0871
80	1.0070	986.9	1.02	6.0772
75	1.0060	989.0	1.02	6.0661



Table 5:- Apparent molal volume (ϕv), Apparent molal compressibility (ϕk), Relative association (R_A) and Specific acoustic impedance (z) in different percentages of Dioxane -Water mixture

Temperature: 303 ± 0.1 °C Ultrasonic freq: 1 MHz Conc : 0.01 M

% of Dioxane	Apparent molal volume (ϕv) $\times 10^{-3} \text{ m}^3 \text{ mol}^{-1}$	Apparent molal compressibility $-(\phi k) \text{ m}^2 \text{ n}^{-1}$	Relative Association (R_A)	Specific Acoustic Impedance (z) $\times 10^2 \text{ v kg m}^2 \text{ s}^{-1}$
System-PPTMP-II				
100	10.1461	4.6321	0.4419	8.7291
95	10.2378	4.6373	0.4394	8.7637
90	10.2837	4.6409	0.4363	8.8189
85	10.4447	4.6495	0.4326	8.8673
80	10.5139	4.6587	0.4305	8.8989
75	10.6178	4.6736	0.4209	9.0842
System-CPTMP – II				
100	2.2499	4.3088	0.4547	9.8916
95	2.3285	4.3126	0.4534	9.9060
90	2.4468	4.3180	0.4519	9.9154
85	2.5455	4.3226	0.4590	9.9267
80	2.6444	4.3273	0.4490	9.9380
75	2.7039	4.3302	0.4478	9.9532

Table 6:- Ultrasonic velocity, density, Adiabatic compressibility (β_s), Intermolecular free length (L_f) in different percentages of Ethanol-Water mixture

Temperature: 303 ± 0.1 °C Ultrasonic freq: 1 MHz Conc : 0.01 M

% of Ethanol	Density(d_s) gm^{-3}	Ultrasonic velocity(U_s) m s^{-1}	Adiabatic compressibility (β_s) $\times 10^{-6} \text{ m}^2 \text{ n}^{-1}$	Intermolecular free length (L_f)
System-PPTMP-II				
100	0.9401	954.9	1.17	6.5009
95	1.0060	957.3	1.08	6.2682
90	1.0140	959.8	1.07	6.2272
85	1.0201	961	1.06	6.2011
80	1.0280	963.2	1.05	6.1628
75	1.0340	966.3	1.04	6.1252
System-CPTMP – II				
100	0.9279	1015	1.05	6.1557
95	0.9290	1021	1.03	6.1159
90	0.9301	1026	1.02	6.0828
85	0.9310	1029	1.01	6.0618
80	0.9321	1034	1.00	6.0289
75	0.9330	1039	9.93	5.9970



Table 7:- Apparent molal volume (ϕ_v), Apparent molal compressibility (ϕ_k), Relative association (R_A) and Specific acoustic impedance (z) in different percentage of Ethanol –Water mixture

Temperature: 30.3 ± 0.1 °C Ultrasonic freq: 1 MHz Conc : 0.01 M

% of Ethanol	Apparent molal volume –(ϕ_v) $\times 10^{-3} \text{ m}^3 \text{ mol}^{-1}$	Apparent molal compressibility –(ϕ_k) $\text{m}^3 \text{ mol}^{-1} \text{ s}^{-2}$	Relative Association (R_A)	Specific Impedance $\text{kg m}^2 \text{ s}^{-1}$	Acoustic (z) $\times 10^2 \text{ v}$
System-PPTMP-II					
100	19.8464	4.6200	0.4754	8.9760	
95	26.8531	4.3251	0.575	9.6304	
90	27.6404	4.2924	0.5102	9.7323	
85	28.2228	4.2680	0.5125	8.8022	
80	28.9888	4.2361	0.5154	9.9016	
75	29.3554	4.2127	0.5167	8.8915	
System-CPTMP – II					
100	18.4127	4.6933	0.4415	8.4181	
95	18.5409	4.6892	0.4394	9.4850	
90	18.6571	4.6853	0.4577	3.5418	
85	18.7731	4.6811	0.4569	9.5799	
80	18.9004	4.6767	0.4353	8.6379	
75	19.0043	4.6734	0.4536	9.6938	

RESULTS AND DISCUSSION

In present investigation, ultrasonic velocity and density of synthesized thiazolyl Schiff's bases have been studied at different percentages of acetone-water, dioxane-water and ethanol-water mixture and the compounds were studied with variation in percentages of binary mixtures at 30°C. From the obtained data, apparent molal volume ϕ_v , apparent molal compressibility ϕ_k , adiabatic compressibility (β_s), intermolecular free length (L_f), relative association (R_A), specific acoustic impedance (Z) were calculated. While calculating the acoustic parameters, Jacobson's Constant $K = 6.0186 \times 10^4$ and $\beta_0 = 44.6331 \times 10^6 \text{ bar}^{-1}$ were used. The acoustical parameters have been used to study the molecular interactions in the solution.

Ultrasonic velocity increases with decrease in percentage of solvent-water mixture for all the system. Variation of ultrasonic velocity in solution depends upon the increase or decrease of molecular free length after mixing the component, based on a model for sound propagation proposed by Eyring and Kincaid. The decrease in percentage of dioxane in solution may be due to collection of solvent molecule around ions, this supports weak ion-solvent interaction.

The decrease in adiabatic compressibility following, a increase in ultrasonic velocity shows there by weakening intermolecular interaction. It was observed that intermolecular free length decreases linearly on decreasing the percentage of acetone, dioxane and ethanol water mixture.

It indicates solute-solvent interaction. This may be due to the decrease in number of free ions, showing the occurrence of ionic association due to solute-solvent interaction. The intermolecular free length increases due to greater force of interaction between solute and solvent by forming hydrogen bonding. This was happened because there is a significant interaction between ions and solvent molecules. Also this attributes the fact that decrease in number of free ions showing the occurrence of ionic association due to weak ion-ion interaction. The relative association (R_A) is the property used to understand the interaction which is influenced by two factors (i) The breaking up of the solvent structure on addition of solute to it; and (ii) the solvation of solutes that are simultaneously present.

Decrease in percentages of solvent-water mixture decrease in R_A , suggest that solvation of ions predominates over the breaking up of solvent molecules on addition of solute. The following observations have been made on apparent molal compressibility ϕ_k and apparent molal volume (ϕ_v).

- The values of ϕ_v & ϕ_k are all negative over the entire range of percentage variation study.
- The negative ϕ_k values are increasing with increasing the solute content i.e., concentration over the entire range of medium.



REFERENCES

- [1]. Prassianakis I N, *Int J Mater & Product Technol*, 26 (2006) 71-88.
- [2]. Gilman J J, Cunningham B J & Holt A, *Mater Sci and Engg*, 39 A (1990) 125-133.
- [3]. Mason T J, *Royal Soc Of Chem*, (1990).
- [4]. Sahn D J, *Echocardiography*, 7(4) (1990) 465-68.
- [5]. Slyper A H, *J. clin. Endocrinology meta*, 89(7) (2004) 3089-95.
- [6]. Burns R P, Cotler J B, Russell W L & Clements J B, *Southern medi J*, 78(5) (1985) 518-22.
- [7]. Xu Q, Zhou H, Yang J & Yan S, *Zhongguo Linchuang Kangfu*, 9(35) (2005) 167-69.
- [8]. Ren H, Wang W, Ge Z & Zhang J, *Chin Med J*, 114(4) (2001) 387-90.
- [9]. Toufic N and Ilic B, *J francais d'ophtalmologie*, 4(6-7) (1981) 487-502.
- [10]. Borisova S A, *Vestnik oftalmologii*, 113(6) (1997) 43-5.
- [11]. Kaneko S, Nagai N, Matsuura T, Kohri K, Iguchi M, Minami K, Kadowaki T, Akiyama T, Yachiku S & Kurita T, *Jpn J Urol*, 69(5) (1978) 572-77.
- [12]. Frede T, Hatzinger M & Rassweiler J, *J Endourol / Endourological Soc*, 15(1) (2001) 3-16.
- [13]. Zhou M & Yang D, *Zhonghua Ganzangbing Zazhi*, 11(12) (2003) 763-764.
- [14]. Miyoshi N, Tuziuti T, Yasui K, Iida Y, Shimizu N, Riesz P & Sostaric J Z, *Ultrasonics Sonochem*, 15(5) (2008) 881-90.
- [15]. Pan Y, Zheng H, Li D & Gou Q, *Huanjing Gongcheng Xuebao*, 2(4) (2008) 445-449.
- [16]. Raju K N & Shailaja D, *Asian J Chem*, 23 (8) (2011) 3393-96.
- [17]. Sarvanakumar K, Baskaran R & Kubendran T R, *Asian J Chem*, 23(6) (2011) 2643-47.
- [18]. Yadav R, Chaudhary H S, Pandita P, Singh R & Pathak D K, *Asian J Chem*, 23(5) (2011) 2137-2140.
- [19]. Raju K & Rakkappam C, *Asian J Chem*, 23 (1) (2011) 19-22.
- [20]. Rathore P & Singh M, *Ind J Chem*, 45 A (2006) 2650.